।। ओ३म् ।।

वर्ष-७ अंक-११ मूल्य-२५/-

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

सितम्बर २०१८

दिल्ली चलो

यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं
आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं...

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान
करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में ...

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५ से २८ अक्टूबर २०१८

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ

चलो दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

अनुरोधकर्ता

स्वागताध्यक्ष

२५ से २८ अक्टूबर, २०१८-भारत (दिल्ली)

तदनुसार कार्तिक कृष्ण प्रथमा से चतुर्थी तक
विक्रम संवत् २०७५

सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान)
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

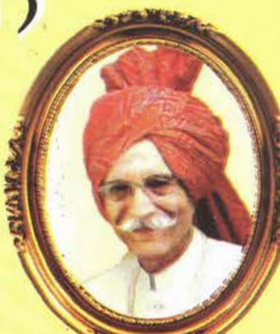

महाशय धर्मपाल जी,
एम डी एच मसाले वाले

आयोजन स्थल

स्वर्ण जयन्ति पार्क, रोहिणी, सेक्टर-१०, दिल्ली-८५

यज्ञ, योग, वैदिक सत्संग और प्रवचनों
से लाभ उठाने हेतु

परिवार सहित सम्मिलित होकर
कार्यक्रम को सफल बनाएं ...

प्रकाश आर्य (मन्त्री)
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

हार्दिक अभिनन्दन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

इन्द्रप्रकाश गान्धी (प्रधान)
म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

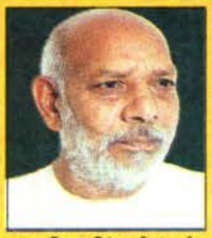
ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

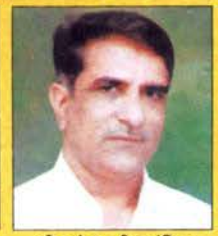
श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धूलिया (महाराष्ट्र)

श्री गजानन्द जी जांगिड
जा. ब्रा. जिलाध्यक्ष
जालना (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा, (हरियाणा)

श्री गोविन्दराम जी आर्य
सांसद प्रतिनिधि
देपालपुर (इन्दौर)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वास्को डी गामा, गोवा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आ. सर्वेश सिद्धान्ताचार्य
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित
गाधी, बागपत (उ.प्र.)

श्री बंशीलाल जी आर्य
बरखेड़ा पंथ (मन्दसौर)

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि डॉ. अशोक कुमार जी को प्रमाण पत्र प्रदान करते बाबा रामदेव, आशीर्वाद देते स्वामी सत्यपति जी तथा वेद मन्दिर सहारनपुर के संरक्षक पं. ओमप्रकाश जी सम्मानित करते हुए।

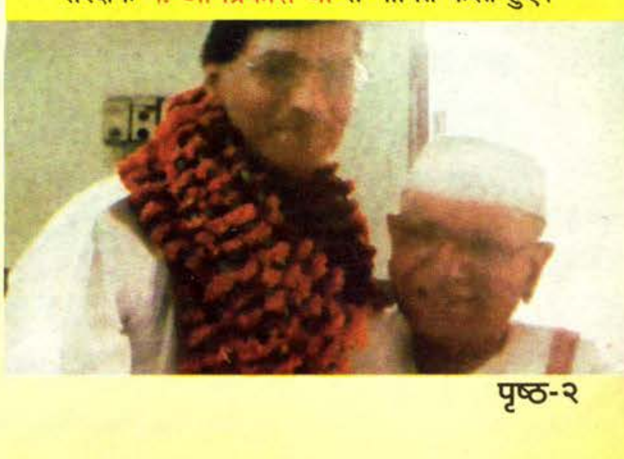

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) द्वारा संचालित
दयानन्द कन्या विद्यालय की बलिकाओं द्वारा स्वतन्त्रता दिवस पर आकर्षक प्रस्तुति

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आई डी सी/२०१८-२०२०
वर्ष-७, अंक-११
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ सितम्बर, २०१८
आर्ष तिथि- आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा
सृष्टि सम्वत्-१,९७,२९,४९, १२०
शक सम्वत्- १९४०
विक्रम सम्वत्- २०७५, दयानन्दाब्द-१९५

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएसएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
आर्यावर्त्त के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
बन्धुवर! आओ, मानव जीवन सफल बनाएं	सम्पादकीय	०५
आर्ष बोध, भाग-५	पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री	०५
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण- आवेदन पत्र	वानप्रस्थ साधक आश्रम	०७
हमारी महान विभूतियां - गणेश शंकर विद्यार्थी	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
- डॉ. होमी जहांगीर भाभा	शिवनारायण उपाध्याय	१२
महर्षि दयानन्द भष्यानुसार - ऋग्वेद ज्ञानागार के....	पं. सत्यपाल शमार्य	१३
महर्षि दयानन्द और गो रक्षा	पं. नन्दलाल निर्भय	१५
गो माता पर बलिहारी है	मो. हुसैन शाह 'अदीब'	१५
परमेश्वर जगत् का रचयिता	मृदुला अग्रवाल	१७
संस्कारों का महत्व	आचार्य सोमदेव आर्य	१९
समीक्षा-वैदिक मान्यताओं का वैज्ञानिक एवं...	पं. देवमुनि वानप्रस्थी	२०
आर्यजगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	२०
ऋत् सत्य और सत्य का रहस्य	पं. उम्मेद सिंह विशारद	२१
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-हमें क्या करना....	मोहनलाल दशोरा 'आर्य'	२२
उऋण हो गये वे, रह न जायें हम ऋणी	पं. देवनारायण भारद्वाज	२३
आर्य समाज कोलकाता के निर्वाचन समाचार	संकलित	२५
नवोदित सहित्यकार ध्यान दें	सुखदेव शर्मा	२५
धैर्य रखें	'आर्य' हरिओम शास्त्री	२६
ऋण तभी चुकेगा	खुशहाल चन्द्र आर्य	२६
पवित्र दिन पर यह पाप क्यों	रामफल सिंह आर्य	२७
वैतरणी नदी पर पुल बनाने बाबद्	जांगिड रामचन्द्र आर्य	२९
प्रतिक्रिया- आओ ! वैतरणी पर पुल बनाएं	सुखदेव शर्मा	२९
आरक्षण का भूत	स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती	३१
दलित की शिकायत पर, प्रतिक्रिया....	इन्द्रदेव गुलाटी	३५
क्या बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या दो करोड़	इन्द्रदेव गुलाटी	३५
गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के मध्य हमने मनाया	सुखदेव शर्मा	३६
मदरसा बना वैदिक गुरुकुल	सुखदेव शर्मा	३९
देश को गुलाम बनाने का श्रेय गद्दारों को हैं	नरसिंह सोनी	३९
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	४१
शोक-सूचनाएं	संकलित	४२

आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ में ईसाई युवती का शुद्धि संस्कार

दिनांक १५ अगस्त २०१८ को आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ में एक ३२ वर्षीय इसाई युवती केरन रैस्कर का शुद्धि-संस्कार करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और नया नाम कृति रखा गया। यह जानकारी मंत्री आर्य समाज, श्रृंगार नगर, लखनऊ के द्वारा दी गई।

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् महाँ इन्द्र परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे।
द्यौर्न प्रथिना शव।। ऋ. १.८.५

भावार्थ : धार्मिक युद्ध करने वाले मनुष्यों को उचित है कि जो शूरवीर युद्ध में अति धीर मनुष्यों के साथ होकर दुष्ट शत्रुओं पर अपना विजय हुआ है उसका धन्यवाद अनन्त शक्तिमान जगदीश्वर को देना चाहिए कि जिससे निरभिमान होकर मनुष्यों के राज्य की सदैव बढ़ती होती रहे।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह अक्टूबर २०१८ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

०९ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण सप्तमी २०७५	१ अक्टूबर	मृगशिरा-२०:०६, रक्तदान दिवस
१० गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण अष्टमी २०७५	२ अक्टूबर	महात्मा गान्धी व लाल बहादुर शास्त्री जयन्ति
११ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण नवमी २०७५	३ अक्टूबर	विश्व पर्यावास दिवस
१२ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण दशमी २०७५	४ अक्टूबर	पुष्य-२६:०३, विश्व पशु कल्याण दिवस
१३ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण एकादशी २०७५	५ अक्टूबर	रानी दुर्गावती जयन्ति
१४ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण द्वादशी २०७५	६ अक्टूबर	डॉ. मेघनाथ शाह जयन्ति, गुरु हरराय पुण्यतिथि
१५ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी २०७५	७ अक्टूबर	धनतेरस, वीरांगना दुर्गाभाभी बोहरा जयन्ति, गुरु गोविन्दसिंह पुण्यतिथि, धनवन्तरी जयन्ति, राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस
१६ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण चतुर्दशी २०७५	८ अक्टूबर	शारदीय नव शस्येष्टि उत्सव (दीपावली), हनुमान जयन्ति, जयप्रकाश नारायण व मुन्शी प्रेमचन्द पुण्यतिथी, भारतीय वायुसेना दिवस
१७ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	आश्विन कृष्ण अमावस्या २०७५	९ अक्टूबर	चित्रा-२४:१०, महावीर स्वामी निर्वाण दिवस, गुरु रामदास जयन्ति, विश्व डाक दिवस
१८ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा २०७५	१० अक्टूबर	क्षयतिथि द्वितिया-०६:०९, विश्वकर्मा पूजा, भ्रातृ द्वितिया, वीर सम्वत् २५४५ प्रारम्भ, राष्ट्रीय डाक दिवस
१९ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल तृतिया २०७५	११ अक्टूबर	जयप्रकाश नारायण जयन्ति, अन्तर्राष्ट्रिय बालिका दिवस,
२० गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल चतुर्थी २०७५	१२ अक्टूबर	डॉ. राममनोहर लोहिया जयन्ति
२३ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल षष्ठी २०७५	१५ अक्टूबर	पूर्वाषाढ़ - २५:५९, डॉ. ए.पी.जे. कलाम जयन्ति वीरांगना दुर्गा भाभी बोहरा व पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला पुण्यतिथि
२४ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल सप्तमी २०७५	१६ अक्टूबर	विश्व खाद्य दिवस
२५ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल अष्टमी २०७५	१७ अक्टूबर	कर्मवीर जयानन्द भारती जयन्ति, स्वामी रामतीर्थ पुण्यतिथि
२६ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुल्क नवमी २०७५	१८ अक्टूबर	पंचक प्रारम्भ - २२:४२
२७ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल दशमी २०७५	१९ अक्टूबर	डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर जयन्ति
३० गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी २०७५	२२ अक्टूबर	अश्फाक उल्ला खाँ व स्वामी रामतीर्थ जयन्ति
०१ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२३ अक्टूबर	वृश्चिक संक्रान्ति - १६:५३
०२ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा २०७५	२४ अक्टूबर	पंचक समाप्त - २५:५२
०५ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल तृतिया २०७५	२७ अक्टूबर	जतीन्द्रनाथ दास जयन्ति
०६ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल चतुर्थी २०७५	२८ अक्टूबर	मृगशिरा - २५:३४
०८ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल षष्ठी २०७५	३० अक्टूबर	डॉ. होमी जहाँगीर भाभा जयन्ति
०९ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक शुक्ल सप्तमी २०७५	३१ अक्टूबर	सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ति, इन्दिरा गान्धी पुण्यतिथि

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य स्रोतों से प्राप्त अक्टूबर माह के कुछ विशेष दिवस

०१ विश्ववृद्ध दिवस
०२ स्वच्छता दिवस, अहिंसा दिवस
०४ प. श्याम जी कृष्ण वर्मा जयन्ति, राष्ट्रीय अखण्डता दिवस
१० महाराज अग्रसेन जयन्ति, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
२१ पुलिस स्मृति दिवस
२४ महर्षि वाल्मीकि जयन्ति, अजमीद देव जयन्ति
२६ गणेश शंकर विद्यार्थी जयन्ति

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

लो पुनः आ गया व्यक्ति की शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति का सशक्त माध्यम - क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

बन्धुवर ! आओ, मानव जीवन सफल बनाएं...

सम्माननीय, बन्धुवर

सादर नमस्ते

पत्र के संलग्न '**क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर, नवंबर - २०१८**' का आवेदन-पत्र आपकी सेवा में प्रस्तुत है। प्रतिवर्ष वर्ष में दो बार आयोजित होने वाले '**क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर**' के इस वर्ष के अंतिम शिविर का आयोजन दिनांक १८ से २५ नवम्बर २०१८ तक वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ (गुजरात) में आयोजित किया जा रहा है।

मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक इस शिविर में जाने के लिए स्वयं को मानसिक रुप से दृढ़ करें तथा अपने परिवार जनों, इष्टमित्रों को भी प्रेरित करें। आवेदन-पत्र को छायाप्रति करवाकर भी उपयोग किया जा सकता है अथवा वानप्रस्थ साधक आश्रम की वेबसाइट से लेकर उपयोग किया जा सकता है अथवा ऑनलाइन भी भेजा जा सकता है। किसी प्रकार की समस्या अथवा विस्तृत जानकारी हेतु वानप्रस्थ साधक आश्रम के कार्यालय अथवा मुझसे सम्पर्क किया जा सकता है।

परमपिता परमात्मा ने जीवात्माओं के भोग और अपवर्ग की प्राप्ति हेतु इस संसार का सृजन किया। जीवात्माओं को उनके कर्म फल अनुसार असंख्य योनियों में उत्पन्न किया। एकमात्र मानव योनि ही ऐसी योनि है जो अपने पूर्व जन्म कृत कृत्यों के फल रुप में सुखों और दुःखों को भोगते हुए मोक्ष अर्थात् जन्म-मृत्यु के आवागमन से मुक्त हो, पूर्ण रुपेण दुःखों से छुटकारा पाकर परमपिता परमात्मा के असीम आनन्द को प्राप्त कर सकता है। मानव जीवन का एकमात्र लक्ष्य अगर कोई है तो वह है मोक्ष की प्राप्ति, यह विलक्षण, अद्‌भुत मानव जीवन हमें केवल इसी उद्‌देश्य की पूर्णता हेतु मिला है इस उद्‌देश्य की प्राप्ति का प्रयास ही मानव जीवन की सफलता है, सार्थकता है।

शस्य-श्यामला यह पावन भूमि जिसे हम भारत वर्ष के नाम से जानते हैं, ऋषि-मुनियों, त्यागी-तपस्वीयों की भूमि होकर विश्वगुरु के रुप में सुविख्यात थी। इस धरा पर वेद की ऋचाओं का गान होता था, चार वेद, चार उपवेद, चार ब्राह्मण ग्रन्थ, ६ दर्शन शास्त्र, उपनिषदें, स्मृतियां हमारी शिक्षा के आधार तथा मानव निर्माण के मूलाधार थे। इन ग्रन्थों के माध्यम से मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का वास्तविक ज्ञान ग्रहण कर उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है का उसके जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान ग्रहण कर तदानुरुप जीवन व्यवहार में उतार कर मानव जीवन को सफल बनाता था।

विधर्मी लॉर्ड मैकाले के कुटिल प्रयासों से थोपी गई वर्तमान स्कूली शिक्षा व्यवस्था में हमारे प्राचीन ग्रन्थों के ज्ञान का कोई स्थान न होने से वर्तमान का मानव केवल भोगों को भोग रहा है किन्तु उसकेजीवन का प्रमुख लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति कहीं पीछे छूट गया है। परलोक की तो छोड़िये इहलोक (वर्तमान) में भी प्राणी मात्र अपने लिए सुख-शान्ति, सुरक्षा चाहता है, इनकी प्राप्ति हेतु संघर्ष करते-करते उसका जीवन बीत जाता है। प्रत्येक वस्तु प्राप्ति की कुछ शर्ते-नियम होते हैं। हमें कुछ प्राप्त करना है तो बदले में हमें भी कुछ देना होता है। उदाहरणार्थ परिवार के सदस्यों को परिवार के स्वामी के अनुकूल व्यवहार करने पर ही परिवार की सुख-शान्ति, सुरक्षा बनी रह सकती है। इसी प्रकार किसी औद्योगिक ईकाई अथवा किसी संस्थान के प्रमुख की विचारधारा से अधिनस्थों को तालमेल बैठाना होता है अधिनस्थों के अनुकूल प्रमुख नहीं होता, प्रमुख के अनुकूल अधिनस्थों को होना पड़ता है और अगर नहीं होंगे अथवा प्रतिकूल व्यवहार करेंगे तो परिवार का सदस्य हो, औद्योगिक ईकाइयों अथवा किसी संस्थान का अधिनस्थ उसकी सुख-शान्ति, सुरक्षा पर संकट उत्पन्न हो जावेगा। उसके लिए उसका ही व्यवहार हानिप्रद हो जावेगा। **क्या कभी हमने सोचा है इस संसार को बनाने वाला, हमें यह जीवन प्रदान करने वाला, हमारा पालन करने वाला, क्षण-प्रतिक्षण हमारी रक्षा करने वाला हमारा स्वामी कौन है?** हम सुख-शान्ति, सुरक्षा चाहते हैं, क्या हमने कभी इस ओर ध्यान दिया है कि हमारे स्वामी के नियमानुकूल हमारा जीवन व्यवहार कैसा हो? हमें सुख-शांति, सुरक्षा मिलेगी, हमारा

आर्ष बोध, भाग-५

1. एक समय था जब हमारे पूर्वज प्रतिदिन हवन करते थे। वैदिकयुग में हवन करना हर ब्रह्मचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थ के लिये अनिवार्य था। हवन करने से वायु, जल, अन्न, औषधि आदि की शुद्धि होती है।

2. हवन से प्रकृति का सन्तुलन बना रहता है। अतिवृष्टि अनावृष्टि, महामारियों और भूकम्प आदि का प्रकोप कभी नहीं होता।

3. हमारे ऋषियों ने हवन (यज्ञ) को सर्वश्रेष्ठ कर्म माना है। प्राणीमात्र के सुख में सहायक हवन वैदिक विधि विधान से करने वाले पुण्य के भागी होते हैं। हवन से अनेक लौकिक कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

पण्डित कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल, कर्णावती (गुजरात)
चलभाष- ९८२४०९६०४५, ९९७९४२८०८९

स्वामी भी हमारा कल्याण चाहता है किन्तु उसके नियम के प्रतिकूल व्यवहार से हमें सुख-शान्ति, सुरक्षा कैसे प्राप्त होगी?

ईश्वर अथवा ईश्वर कृत व्यवस्था को बदल पाना हमारे वश में नहीं। ईश्वर और ईश्वर कृत व्यवस्था को ठीक-ठीक जानने-समझने तथा तदानुकूल व्यवहार से ही हमारा ईहलोक (वर्तमान) तथा परलोक सुख-शान्तिमय सुरक्षित हो सकते हैं। इसे जानने समझने के लिये प्राचीन ग्रन्थों के आश्रय के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं।

परमपिता परमात्मा ने मानव से इतर अन्य प्राणियों को अपने जीवन संचालन के लिए आवश्यक ज्ञान उसके जन्म के साथ ही दे दिया। उन्हें किसी पाठशाला, शिक्षक, पुस्तक की आवश्यकता नहीं। परमपिता परमात्मा द्वारा उनको दिया गया यह ज्ञान स्वाभाविक ज्ञान कहलाता है। मनुष्य जाति में जन्मा जीवात्मा नैमित्तिक ज्ञान पर आधारित है। इसे जन्मते ही मानवों से दूर निर्जन वन में छोड़ दिया जावे तो यह वन्य प्राणियों से उनके द्वारा किया गया व्यवहार सीख कर वन्य प्राणियों की तरह व्यवहार करने लग जाएगा किन्तु मनुष्य कृत व्यवहार वह नहीं सीख पाऐगा।

मानव निर्माण के दो प्रमुख आधार है **ज्ञान** और **ज्ञानी**। ज्ञान के विषय में ऊपर हमने चर्चा की कि इस संसार को बनाने वाले परमपिता परमात्मा कृत संविधान वेद और वेदानुकूल शास्त्रों के ज्ञान के अनुकूल जीवन व्यवहार से ही मनुष्य का जीवन सुख-शान्तिमय सुरक्षित हो सकता है।

दूसरा माध्यम है ज्ञानी, वर्तमान में तो प्रत्येक मनुष्य ज्ञानी है कोई यह स्वीकार करने को तैय्यार नहीं कि वह अज्ञानी है, यह भी एक प्रकार का रोग ही है। वास्तविक रुप में ज्ञानी वह है जिसने अपने को वेद ज्ञानाग्नि में तपाया हो वेद ज्ञान की अग्नि में भस्मीभूत होने वाला ही वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था में ब्राह्मण कहाता था। प्रारब्ध के कर्मफल अनुसार परमात्मा प्रदत्त बुद्धि के वशीभूत होकर ही तो जीवात्मा सुख-दुःख भोगता है सम्भवत: तुलसीदास जी ने कहा है **'जाको दुःख देई ताकि मति पहिले ही हर लेई'** जो परमात्मा प्रदत्त प्रखर बुद्धि के धनी होते हैं वह वेद तथा वेदादि शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों का प्रकाश करने से मन्त्र दृष्टा ऋषि कहाते हैं। मानव शरीर के अग्रभाग मस्तक जिसे मनुष्य शरीर का ज्ञान विभाग भी कहा जा सकता है के समकक्ष तुलना करते हुए ब्राह्मण वर्ग को मानव समाज का मुख कहा गया। जब तक हमारी शिक्षा व्यवस्था का सम्बंध वेद तथा वेदानुकूल शास्त्रों से रहा तब तक ब्राह्मण का निर्माण होता रहा और हमें ब्राह्मण मिलते रहे। वेदानुकूल शिक्षा व्यवस्था समाप्त होने के उपरान्त ब्राह्मण बनने के स्थान पर उत्पन्न होने लगे, जो ब्राह्मण पिता के यहां जन्मा वह उत्पन्न होते ही ब्राह्मण का प्रमाण-पत्र साथ ले आया जबकि मनु महाराज कहते हैं **'जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद् द्विज उच्चयते'** अर्थात् जन्म से सभी शूद्र (अज्ञानी) है, प्रथम जन्म शरीर द्वारा जबकि दूसरा जन्म संस्कारों के आधान द्वारा ज्ञानी के रुप में होकर उच्चता को प्राप्त करता है। इस प्रकार मानव जाति का सम्बन्ध वर्तमान में ज्ञान और ज्ञानी दोनों से लुप्त प्राय: हो गया तो निर्माण कहां से होगा? यही कारण है वर्तमान में सर्वत्र त्राहि-त्राहि का वातावरण होकर चहूँ और दुःख-अशांति, असुरक्षा दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इसका समाधान अथवा उपचार है क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर।

आओ जानें! क्या है क्रियात्मक योग प्रशिक्षण? - क्रियात्मक का अर्थ है क्रिया रुप में अर्थात् हमारे लिए आवश्यक ज्ञान को व्यवहारिक रुप में किस प्रकार उपयोग में लाए का अर्थ है क्रियात्मक। वर्तमान समय में योग को लेकर जनमानस में बड़ी भ्रान्ति है, वे शारीरिक उन्नति के माध्यम आसन-प्राणायाम को ही सम्पूर्ण योग समझ लेते हैं जबकि महर्षि पतंजलि के योग दर्शन के आठ सूत्रों में मात्र दो सूत्र आसन और प्राणायाम है। योग का अर्थ है जोड़ अर्थात् जुड़ना। अब प्रश्न उपस्थित होता है किससे जूड़ें और कौन जूड़े? इस प्रश्न का उत्तर है हमारे मानव शरीरों के अंदर जो आत्मा विद्यमान है उस आत्मा के परमात्मा से जुड़ने का नाम है योग। **आत्मा से परमात्मा की दूरी न तो स्थान से है, ना समय से क्योंकि परमपिता परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थान भी उससे रिक्त नहीं है तथा वह सदैव है अर्थात् किसी भी क्षण उसका अभाव नहीं होता, उससे दूरी है तो मात्र ज्ञान की। परमात्मा सर्वज्ञ है किन्तु जीवात्मा अल्पज्ञ है, इसी अल्पज्ञता के कारण जीवात्मा और परमात्मा के मध्य दूरी उत्पन्न हो जाती है इस दूरी को समाप्त करने की क्रिया का नाम योग है। उदाहरणार्थ आग के गोले को अग्निमय करना है तो गोले को तपाना होगा, अग्नि के सम्पर्क को पाकर लोहे का कठोर गोला भी लाल सूर्ख होकर अग्निमय हो जाता है। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा भी अग्नि है। परमपिता परमात्मा प्रदत्त ज्ञान के आधार पर जीवात्मा को परमपिता परमात्मा के गुणों के सदृश कर लेना ही परमात्मामय हो जाना है इस कला का नाम योग है।**

प्रशिक्षण स्वयं अपना परिचय दे रहा है, अर्थात् विशेष रुप से शिक्षण अर्थात् ज्ञान प्राप्ति संयुक्त अर्थ होगा विषय विशेष का विशेष रुप से ज्ञान प्राप्त करना।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने दोष-दुर्गुणों के दल-दल में गले-गले धंसे अमीचन्द को कहा था **'अमीचन्द हो तो हीरे किन्तु कीचड़ में पड़े हो'** बस इतने से वाक्य ने अमीचन्द को भक्त अमीचन्द बना दिया। जब तक आर्य जगत् में महर्षि दयानन्द जी का नाम रहेगा, भक्त अमीचन्द का नाम रहेगा और यह भक्त महर्षि दयानन्द जी का भक्त नहीं, परमात्मा का भक्त बन गया। जिसके गाये गये भजनों को लोग गाकर तथा सुनकर आज भी भाव विभोर हो जाते हैं।

आर्य जगत् में महर्षि दयानन्द जी के बाद किसी का सम्माननीय स्थान है तो वह है अमर हुताल्या स्वामी श्रद्धानन्द जी का। **शेष भाग पृष्ठ १४ पर**

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर नवम्बर-२०१८

आवेदन पत्र

सेवा में,
व्यवस्थापक जी,
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़

उपरोक्त आवेदन पत्र को अथवा इसकी छायाप्रति भी उपयोग की जा सकती है।

मान्यवर,

सादर नमस्ते !

निवेदन है कि मैं वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में १८ नवम्बर से २५ नवम्बर २०१८ तक आयोजित होने वाले क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर में भाग लेना चाहता/चाहती हूँ। मैं शिविर सम्बन्धी नियमों तथा अनुशासन का पूर्ण रूप से पालन करूँगा/करूँगी। कृपया मुझे शिविरार्थी के रूप में भाग लेने की अनुमति प्रदान करें। मेरा विवरण निम्नलिखित है...

1.	नाम :-	
२.	पिता/पति/ माता जी का नाम :-	
३.	जन्मतिथि/आयु :-	
४.	शिक्षा :-	५. व्यवसाय :-
6.	घर का पता ।	
७.		ई-मेल
८.	यहाँ शिविर में पहले कितनी बार और कब भाग ले चुके हैं ?	
९.	इस शिविर में आने की प्रेरणा किससे मिली? (प्रेरक का नाम)	

स्थान.................. दिनांक ...../ ...../२०१८ ....

शिविरार्थी के हस्ताक्षर

पत्र व्यवहार/अन्य जानकारी/शिविर शुल्क जमा की सूचना हेतु हमारा सम्पर्क सूत्र-

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात ३८३३०७

दूरभाष ०२७७०-२८७४१७, ९४२७०५९५५०

vaanaprastharojad@gmail.com Website www.vaanaprastharojad.org

अहमदाबाद एस.टी. बस स्टैंड से धनसुरा, मोडासा की ओर जाने वाली बस में बैठकर रोजड़ गाँव उतरें। यहाँ से पुंसरी रोड पर लगभग डेढ़ किलो मीटर दूर वानप्रस्थ साधक आश्रम है। अहमदाबाद से आश्रम लगभग ७० कि.मी. दूर है।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर नवम्बर -२०१८

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

(आवश्यक सूचनायें तथा नियमावली)

विशेष सानिध्य
स्वामी सत्यपति जी

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में कार्तिक शुक्ल १० से मार्गशीर्ष कृष्ण २,सम्वत् २०७५ तदनुसार १८ नवम्बर से २५ नवम्बर तक ८ दिन के क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आचार्य सत्यजित् जी की अध्यक्षता में किया जा रहा है। इस में आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य-अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर-समर्पण, स्व-स्वामी संबंध तथा ममत्व का हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रात: ४ से रात्रि ९:३० बजे तक रहेगी।

प्रशिक्षक :- **(१) स्वामी विवेकानन्द जी (२) स्वामी विष्वङ् जी (३) आचार्य सत्यजित् जी (४) स्वामी मुक्तानन्द जी (५) आचार्य सन्दीप जी (६) आचार्य सोमदेव जी (७) आचार्य कर्मवीर जी**

नियम :- १) मंत्रपाठ, श्लोकगायन व कक्षाओं को छोड़ करके शिविरार्थियों को दिनभर मौन का पालन करना होगा।

२) कम से कम १० (दसवीं) कक्षा तक की योग्यता हो, पूर्ण अनुसाशन में चलने वाला तथा तपस्वी हो।

३) १५ से ६० वर्ष तक आयु वाले पठित और नए व्यक्तियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

४) शिविरार्थी अपने साथ नित्योपयोगी वस्तुए, औषधि, करदीपक (टॉर्च), पेन, नोटबुक आदि लावें। शिविर में प्रयोग हेतु सादे वस्त्र (सफेद अथवा पीले) लावें। छोटे बच्चे, कीमती सामान, रेडियो, खाद्य सामग्री आदि अपने साथ न लावें। यदि कोई कीमती सामान, खाद्य सामग्री आदि साथ में हो तो शिविर से पूर्व कार्यालय में जमा करवा देवें।

५) शिविरार्थियों को शिविर काल में चलभाष (मोबाइल) करने की अनुमती नहीं रहती है,चलभाष कार्यालय में जमा करवाना होता है। किसी को बहुत आवयक होगा तो स्वीकृति लेकर कार्यालय से फोन कर सकेंगे।

६) रोगी, अशक्त, वृद्ध, धूम्रपान आदि व्यसनों वाले व्यक्ति कृपया शिविर में भाग लेने के लिए आवेदन न करें।

७) दूर से आने वाले शिविरार्थी अपना वापसी का रेवले आरक्षण पूर्व ही करा लेवें।

८) आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाते हैं तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाती है। पुरुष और महिलाओं की पृथक एवं सामूहिक आवास व्यवस्था रहती है।

९) शिविर शुल्क प्रति व्यक्ति १५००/- रुपये हैं, जिसे आवेदन के साथ पहले ही जमा करना होता है। स्थानाभाव, अयोग्यता अथवा अन्य किसी कारण से प्रवेश न देने की स्थिति में शिविर शुल्क १५००/- रुपये लौटा दिया जाता है। स्वीकृति प्राप्त शिविरार्थियों के न आने पर शुल्क लौटाया नहीं जाता है।

१०) बिना स्वीकृति के शिविर में आ जाने वालों को स्थान होने पर ही स्वीकृति दी जाती है, साथ ही उन्हें शिविर शुल्क १५०० के स्थान पर २००० देना होता है।

११) जो शिविरार्थी आर्थिक कठिनाई के कारण शुल्क देने में असमर्थ होंगे उनके आवेदन पर योग्य जानकर शुल्क में आंशिक या पूर्ण छूट दी जा सकती है।

१२) पंजीकरण ३० अक्टूबर २०१८ तक करवा लेवें। पंजीकरण की स्वीकृति होने पर आपको भेजा जाने वाला शिविर प्रवेश पत्रक साथ में अवश्य लायें।

१३) शिविरार्थी १८ नवम्बर को प्रात: ९ बजे से सायंकाल ४ बजे के बीच शिविर स्थल पर पहुँच जावें। कृपया इससे पूर्व व पश्चात् न पहुँचें, ऐसा करने से व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है। शिविर में अन्तिम दिन तक उपस्थित रहना होता है।

१४) शिविरकाल में शिविर स्थल से बाहर जाकर जिन्हें आर्यवन को देखना हो या अन्यों से मिलना, चर्चा, परामर्श आदि करने हों वे प्रथम दिन १८ नवम्बर को सायं ४ बजे से पहले-पहले या अंतिम दिन १ बजे के बाद कर सकते हैं। यदि आपको अपने घर पर अथवा परिजनों को रोजड़ पहुंचने की सूचना देनी हो तो कृपया पंजीकरण से पहले ही दे देवें।

शिविर शुल्क १५००रू कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करें।

नाम :- क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर खाता क्र. ०१७९०१०००१८०५२

शाखा : बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा (जि अरवल्ली) IFSC No. BARBODHANSU

जमा की सूचना इस प्रकार दें :- शिविर शुल्क जमा की बैंक आदि की रसीद का चित्र इस id पर मेल कर दें-vaanaprastharojad@gmail.com या ०९४२७०५३५५० पर व्हाट्सएप करदें या उसकी फोटोकॉपी आश्रम के पते पर डाक से भेज दें।

क्रन्तिकारी लेखक - शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।
(संत कबीर)

चट्टान में से पानी निकल सकता है, छैनी चला कर देखो ।
पानी में आग लग सकती है, पेट्रोल डालकर देखो ।।
आसमान में छेद हो सकता है, पत्थर फैंक कर देखो।
तलवार से बड़ा कलम काम करती है, कलम-वीर बनकर देखो।।
(रामधारी सिंह दिनकर)

कलम, आज उनकी जय बोल।
जो चढ़ गए पुण्य-वेदी पर, लिए बिना गरदन का मोल।
जला अस्थियाँ बारी-बारी, छिटवाई जिनने चिनगारी।।
कलम, आज उनकी जय बोल!

न तू कभी थकेगा, न तू कभी थमेगा।
ना तू कभी झुकेगा, ना तू कभी टूटेगा।
न तू कभी डरेगा, ऐ कलम-वीर, कलम-वीर।
तू चल चला-चल आगे, ऐ कलम-वीर, कलम-वीर।।
नव-प्रभात भर तू भारत में, ऐसा विचित्र, अनुपम उजाला।
मिट जाये तम, अज्ञान सारे, कलम से गूंजायें भारत-सारा।।

आजादी की लड़ाई केवल हथियारों से नहीं लड़ी जाती, वरन् **कलम में भी तलवार से बढ़कर ताकत होती है** तथा कभी-कभी तो तलवार वह नहीं दिखा पाती जो **कलम दिखा देती है।** जब अंग्रेजों को पता चला कि भारतीयों में जन-जागृति उत्पन्न हो गयी है। देश भक्ति और आजादी की लहर के प्रेरणा-स्त्रोत बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित **आनंदमठ** है। इसमें रचित **वंदे मातरम्** जिसने अंग्रेज-सरकार की नींद उड़ा दी। सरकार ने आनन्द मठ पर प्रतिबन्ध लगा कर जश्न करवाया। यह सब बंकिम बाबू की **कलम का करिश्मा** था। वन्दे मातरम् क्रान्तिकारियों का **बीज मंत्र** बन गया। एक और कलम-वीर की शक्ति का अंग्रेजों को अनुभव हुआ जो मंत्र की भाँति निम्न पंक्तियां सिद्ध हुई-

मानस भवन में आर्यजन, जिनकी उतारें आरती।
भगवान भारतवर्ष में, गूँजे हमारी भारती।।

उक्त मंत्र-दृष्टा की खोजबीन हुई। इसके रचयिता मैथिलीशरण गुप्त थे। इस काव्य-ग्रन्थ **भारत भारती** की होली जलवा कर गुप्त जी को सात महीने का कारावास देकर अकल्पनीय यातनाएं दी गयी। कहा जाता है कि सन् १९१२ से १९४० तक देश के आबाल-वृद्धों में आजादी और देशभक्ति की भावनाएं सिंचित कर दी थी। **ऐसे ही लेखन के क्षेत्र में**

-डोंगरलाल पुरुषार्थी -
पूर्वा प्रधानाध्यापक, प्रधान- आर्य समाज
कसरावद, जिला - खरगोन
चलभाष : ८९५९० ५९०९९

गणेश शंकर विद्यार्थी जी का नाम भी आता है जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति प्रदान की।

जब तोप मुकाबिल हो, अखबार निकालो। हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता की लहर पैदा करने वाले तथा साम्प्रदायिक सौहार्द के लिये **स्वयं का बलिदान करने वाले** गणेश शंकर विद्यार्थी का कृतित्व किसी क्रान्तिकारी से कम नहीं था। देश की तरुणाई में देशभक्ति का जज्बा पैदा करने में इनकी कलम समर्थ थी। आग उगलते लेखों ने

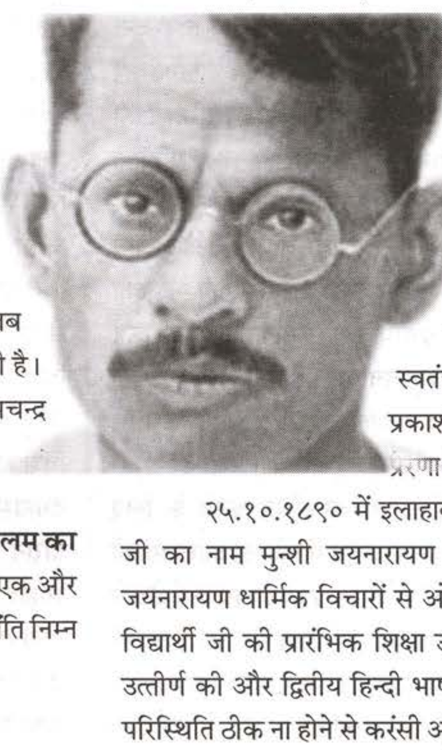

हजारों नौजवानों में राष्ट्र के लिये बलिदान होने की भावना जगाने का काम किया। उत्कृष्ट पत्रकार के रूप में कानपुर से निकलने वाले **प्रताप** पत्र की स्थापना और १८वर्षों तक उसका संचालन करके विद्यार्थी जी ने हिन्दी पत्रकार जगत् में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं, जिनसे हमें युगों-युगों तक प्रेरणा मिलेगी। विद्यार्थी जी का जन्म दिनांक २५.१०.१८९० में इलाहाबाद (प्रयाग) में हुआ था। इनके पिता जी का नाम मुन्शी जयनारायण था, जो पेशे से शिक्षक थे। मुन्शी जयनारायण धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत आदर्श व्यक्तित्व के धनी थे। विद्यार्थी जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में हुई थी। सन् १९०५ में मिडिल उत्तीर्ण की और द्वितीय हिन्दी भाषा के रूप में अध्ययन किया। आर्थिक परिस्थिति ठीक ना होने से करंसी ऑफिस में नौकरी की। बाद में पृथ्वीनाथ हाईस्कूल कानपुर में अध्यापन प्रारम्भ किया। वहीं पर इनका संपर्क प्रख्यात पत्रकार पं. सुन्दरलाल से हुआ। जो इलाहाबाद से **कर्मयोगी** साप्ताहिक पत्र निकालते थे। विद्यार्थी जी का झुकाव लेखन की ओर गया और **कर्मयोगी** व **सरस्वती** पत्रों में इनके लेख छपने लगे। सरस्वती के सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। दिनांक ९.११.१९१३ को विद्यार्थी जी ने कानपुर में स्वयं का साप्ताहिक पत्र **प्रताप** निकालना प्रारंभ किया। आचार्य द्विवेदी

जी की पंक्तियाँ - **जिनको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान। वह नर नहीं, नर-पशु निरा और मृतक समान।।**

जिस तरह महाराणा प्रताप ने मुगल-साम्राज्य को ललकारा था। इसी अंदाज में विद्यार्थीजी के अखबार ने ब्रिटिश-साम्राज्य को ललकारने का काम किया। अंग्रेजों ने पैंतरा बदलकर सांप्रदायिकता को भड़काने का प्रयास किया। तो विद्यार्थी जी ने सहिष्णुता और समन्वय की मशाल प्रज्वलित की। विद्यार्थी जी **प्रताप** के लिए सुन्दर, रोचक लेख और ओजपूर्ण भाषा में गम्भीर संपादकीय टिप्पणीयाँ लिखते, जिससे **प्रताप** की और जनमानस का ध्यान लगातार आकर्षित होने लगा। अंग्रेजों के अत्याचारों की निर्भिक दास्तान, दीन-दलितों, किसानों का दारुण्य, दु:खी मजदूरों की दर्द भरी पुकार, प्रताप के लेखों में यत्र- तत्र प्रचुरता से छापने से **प्रताप** जनता का अतिप्रिय अखबार बना। खरी आलोचना करने के कारण **प्रताप** अधिकारियों, पूंजीपतियों की आंखों में कांटे की भांति चुभने लगा। रायबरेली के किसानों के संघर्ष की गाथा, कानपुर के मील-मजदूरों की व्यथा, चम्पारण सत्याग्रह की क्रान्तिकारी घटनाओं की सही तस्वीरें छपने, देशी राज्यों की जनता के संघर्ष को अभिव्यक्ति देने से **प्रताप** ने दिन-दूनी रात-चौगुनी प्रगति की और लोकप्रिय हो गया। गाँधी जी से लखनऊ में प्रथम भेंट हुई। **प्रताप** को प्रतिदिन प्रकाशित करने के लिए विद्यार्थीजी को माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन जैसे लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों का सहयोग पूर्णरुपेण सहज रूप से मिलने लगा। सन् १९२५ में कानपुर कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में विद्यार्थी जी पूरी तरह संलग्न हुए। सन् १९२१ में फरूखाबाद में हुए कांग्रेस के प्रांतीय सम्मेलन में इनको उ. प्र. कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। **प्रताप** तथा सम्मेलन के कारण **कई बार विद्यार्थी जी को जेल यातनाएं भुगतना पड़ी** । फिर भी संकट को हँसते हुए झेलना और राष्ट्र-प्रेम की मशाल लगातार अपने कर्म से प्रज्वलित करना विद्यार्थीजी का गुण, कर्म और स्वभाव था।

देश में नवजागृति और नई चेतना का संचार करने के लिए विद्यार्थी जी **प्रताप** में लिखते हैं- आज अपने हृदय में नई-नई आशाओं को धारण करके और अपने उद्देश्यों पर पूरा विश्वास रखकर **प्रताप** कर्म क्षेत्र में उतरा है। समस्त मानव जाति का कल्याण हमारा उद्देश्य है इस उद्देश्य की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा और बहुत जरूरी साधन हम भारतवर्ष की उन्नति को समझते हैं। विद्यार्थीजी के सम्मान में ग्वालियर स्टेट में महाराजा सिंधिया ने रात्रि भोज का आयोजन किया उपहार स्वरूप एक शॉल भेंट की गयी। विद्यार्थीजी इस बात को समझ गए कि महाराजा यह शॉल उपहार स्वरूप नहीं बल्कि सुविधा शुल्क के तौर पर दे रहे हैं। ताकि **प्रताप** में कभी भी ग्वालियर स्टेट के विरूद्ध कोई टिप्पणी प्रकाशित ना हो। इच्छा ना होते हुए भी विद्यार्थीजी ने महाराज से शॉल ले ली ताकि उनका अपमान ना हो। किंतु विद्यार्थी जी ने इस शॉल को अपने जीवन में **एक बार भी प्रयोग न किया।** वह सन्दूक में पड़ी-पड़ी ही बेकार हो गयी। विद्यार्थीजी का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। उनमें अहंकार और बड़प्पन का लेशमात्र का अंश नहीं था। यही कारण था कि उनके विरोधी भी उनके स्वभाव और व्यक्तित्व की भूरी-भूरी प्रशंसा किया करते थे। विद्यार्थीजी की बातों में बल था, विचारों में दृढ़ता थी, परिश्रम की क्षमता थी और उनके साहस पर लोगों को विश्वास था। यद्यपि वे किसी विद्या के विशेषज्ञ न थे, लेकिन उनका सामान्य ज्ञान अत्यन्त उच्च कोटि का था। विश्वविद्यालय की उपाधि उनके पास भले न थी किन्तु उनके तर्कों में इतनी परिपक्वता और सुदृढ़ता थी कि परम विद्वान और महापंडित भी उनके तर्कों के समक्ष नतमस्तक थे। विद्यार्थी जी समाज में सुधारवादी पक्ष के प्रबल समर्थक थे। देश की सुधारवादी परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देते हुए एक बार उन्होंने कहा था- जिस देश में सुधार की आवश्यकता नहीं, वह इस परिवर्तनशील संसार का भाग नहीं हो सकता वहाँ सदा पुरानी इमारतों को नमस्कार किया जाता है और नए महल खड़े होते रहते हैं। जिसमें परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होने का गुण नहीं है, वे विनष्ट हो गये। उनका नामो-निशान मिट गया। हाँ इतिहास के पन्ने या उनकी इमारतों की बची-खुची ठीकरीयाँ संसार को कभी-कभी उनके अस्तित्व की याद जरूर दिला देती है।

देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने और अक्षुण्ण एकता बनाए रखने के लिये भारत के अनेक देशभक्तों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है। **इन देशभक्तों में विद्यार्थी जी का नाम प्रथम पंक्ति में लिखा जाता है** विद्यार्थीजी एक निर्भीक पत्रकार, कुशल राजनीतिज्ञ और विवेकशील-आदर्शवादी व्यक्ति थे। इन्होंने धार्मिक, राजनीतिक पक्षपात से दूर रहते हुए स्वाधीनता संग्राम की एक ऐसी भूमिका तैयार की जिससे विशाल अंग्रेजी साम्राज्य की चूलें हिल गयी। दि. २५.०३.१९३१ को जेल-यात्रा से मुक्त होने पर कानपुर में हिन्दू- मुस्लिम दंगा भड़का। विद्यार्थीजी सांप्रदायिक विद्वेष की आग को बुझाने के लिये आगे आये और दंगाग्रस्त मोहल्लों में जाकर लोगों को हिंसा से बचाने हेतु कहने लगे। इसी दौरान जब वे अपना शान्ति-मिशन लिये निर्भीक होकर साम्प्रदायिक सौहार्द का सन्देश दे रहे थे। तो कुछ मतान्ध और मदान्ध मुसलमानों ने विद्यार्थीजी की हत्या कर दी। दिनांक २५.०३.१९३१ को विद्यार्थीजी ने देशहित, सांप्रदायिक सद्भाव में अपना जीवन अर्पित करने पर इन्हें कदापि भुलाया नहीं जा सकता। विद्यार्थीजी की मृत्यु पर गाँधीजी कहते हैं- विद्यार्थी जी को ऐसी मृत्यु मिली जिस पर हम सबको राष्ट्रीय एकता पर गर्व है। विद्यार्थीजी का खून मजहबों को जोड़ने में एक सीमेंट का काम करेगा। उन्होंने निर्भिकता, वीरता और साहसिक कार्य किया है। विद्यार्थीजी मरे नहीं बल्कि इस कार्य से कहीं अधिक सच्चे रूप से जीवित हैं। लेखन कार्य में अजर-अमर हैं। पंडित नेहरू कहते हैं- विद्यार्थी जी जैसा जिये वैसे ही दिवंगत हुए हैं अगर हम में से कोई आरजू करें और अपने मन की इच्छा

पूरी करना चाहे तो इससे अधिक क्या मांग सकता है कि उसमें इतनी हिम्मत हो कि मौत का सामना अपने भाइयों की और देश की सेवा में कर सकें और इतना खुश किस्मत हो कि विद्यार्थी जी की तरह प्राणों की आहुति दे सके। शान से वे जिये, शान से वे मरे और मरकर भी उन्होंने वह सबक सिखाया है।

विद्यार्थी जी की निर्भिकता, साहस और वीरता के परिप्रेक्ष्य में निम्न पंक्तियाँ सार्थक सिद्ध होती है-

कवि (लेखक) कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल हो जाए।
एक हिलोल इधर से आए, एक हिलोल उधर से आए।।
प्राणों के लाले पड़ पाएं, त्राहि-त्राहि नभ में छा जाए।
नाश और सत्यानाशों का धुआंधार, जग में छा जाए।।
बरसे आग जलद जल जाए, भस्मासाल भू-धर हो जाए।
पाप-पुण्य सद्-सद् भावों की, धूल उड़ उठे दायें-बायें।।
नभ का वक्ष स्थल फट जाए, तारक-वृन्द विचल हो जाए।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे राष्ट्रीय चेतना जग जाए।।

(जय भारती) **(बालकृष्ण शर्मा नवीन)**

गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक सम्मेलन

दिनांक १० से १२ नवंबर २०१८ तक

वेदयोग महाविद्यालय (गुरूकुल) केहलारी, जिला-खण्डवा (म.प्र.) द्वारा अपने स्थापना के बारहवें वर्ष पर **गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक** सम्मेलन का भव्य आयोजन दिनांक १० से १२ नवम्बर २०१८ तक आयोजित किया जा रहा है। इस सुअवसर पर समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित हैं।

आयोजन के मुख्य अतिथि

माननीय हंसराज अहीर केन्द्रिय गृह राज्य मंत्री, दिल्ली

(जन्मदिवस पर विशेष गरिमामयी उपस्थिति दिनांक ११ को)

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य हरिशचन्द्रजी शास्त्रीजी, भुसावर (राज.)
गुरूकुल पिता : आचार्य विद्यादेव जी, दिल्ली (पू. प्रा. टंकारा गुरूकुल)
सन्यासी वृंद : स्वामी वेदप्रकाशानन्द जी सरस्वती, हिमाचल प्रदेश
स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती, मध्य प्रदेश
भजनोपदेशक : पं. प्रतापसिंह जी आर्य, सहारनपुर (उ. प्र.)

इस अवसर पर **वैदिक संसार** इंदौर द्वारा
वैदिक साहित्य का स्टॉल लगाया जावेगा।

निवेदक : आचार्य सर्वेश जी सिद्धान्ताचार्य तथा समस्त गुरूकुल परिवार

सम्पर्क : ९१७९१८३८३३, ९१६५१६८१५८

।। ओ३म्।।

हमारे ऋषिवर देव दयानन्द

कब तक वसुंधरा पे, कोई किस तरह जिया,
शंकर वही बना, जो गरल पी के भी जिया।
मरने को तो मरते है कई, सौ साल भी जिकर,
खाक वो भी क्या जिया है, जो अपने लिये जिया।

वेद की ज्योति ऋषिवर जलाकर गये,
विश्व रोशन हुआ, आज दिव्य ज्ञान से।
पौधे तुमने जो सिंचे, वो तरूवर भये,
याद करते तुम्हे, आज सम्मान से।

हमने माना बड़ा ही कठिन था, वो पथ,
जिस पर चलकर के, पाखण्ड का खण्डन किया।
राजा-महाराजा जो थे, रति रंग में रत,
राष्ट्र प्रेम का जज्बा दिया, ज्ञान से
पौधे तुमने जो सिंचे, वो तरुवर भये......

शुद्र और नारी को जग ने माना अधम,
हक वेदों का तुमने, दिलाया उन्हें।
वेदवाणी को पढ़सुन, वो धन्य हो गये,
सफल जीवन हुआ उनका, यश मान से।
पौधे तुमने जो सिंचे, वो तरुवर भये......

ऐसी सौगात, ऋषिवर हमें दे गये,
श्रेष्ठ जीवन हमारा हुआ, वेदों से।
जगमग रोशन हुआ जग, दिवाली की रैन,
मन आहत हुआ, उनके अवसान से।
पौधे तुमने जो सिंचे, वो तरुवर भये......

विजय मृत्यु पर करके, अमर हो गये,
रच सत्यार्थ प्रकाश, दिशा दी नई
जन मानस ने पाया, अनोखा सृजन,
पढ़ कर वैदिक हुए, आज सत्य ज्ञान से।
पौधे तुमने जो सिंचे, वो तरुवर भये......

राधेश्याम गोयल 'श्याम'
न्यू कालोनी कोदरिया (महू)
मो. ९६१७५ ९७९१०

डा. होमी जहांगीर भाभा

शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष - ०७४४२५०१७८५

होमी जहांगीर का जन्म ३० अक्टूबर १९०९ को हुआ था। वह मुम्बई के एक धनी और पुरातन पन्थी परिवार के सदस्य थे। उनके परिवार में सभी लोग अध्ययनशील, संगीत और पेन्टिंग के प्रेमी थे। वह विद्यालय में यूरोपियन बालकों के साथ पढ़ते थे और अपनी बुआ के घर पर शीर्षस्थ राष्ट्रीय नेताओं को सुनते थे। उन्होंने देखा कि इन शीर्षस्थ राष्ट्रीय राजनैतिक नेताओं और औद्योगिक घरानों में कैसा सम्बन्ध था। भाभा ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा मुम्बई के प्रसद्धि महाविद्यालय एल्फिन्स्टन कॉलेज में की। फिर वैज्ञानिक संस्थान मुम्बई में भी अध्ययन किया। फिर वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड चले गए और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मैकेनिकल साइन्स ट्रिपोज पदवी प्राप्त की। सन् १९३३-३४ में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के सदस्य बन गए। सन् १९३४ में उन्होंने Ph.D की उपाधि प्राप्त की। अपने इस अध्ययन काल में उन्होंने यूरोप के कई वैज्ञानिक समूहों को देखा। उन्होंने सर्वाधिक क्रियाशील वैज्ञानिक संस्था कोपेनहेगन में और जिसमें Neils Bohr ग्रुप भी कार्य करता था, कार्य किया। उन्होंने विश्व में प्रसिद्ध वैज्ञानिक Fermi के साथ भी काम किया। Fermi ने ही शिकागों में Atomic Centre स्थापित करने में साधक का काम किया था। भाभा के द्वारा परमाणुवीय भौतिकी के क्षेत्र में दिया गया योगदान महत्वपूर्ण है। भाभा ने मुख्य रुप में कास्मिक किरणों पर काम किया और उनका यह काम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डा. भाभा का भौतिकी में परमाणवीक भौतिकी को दिया गया योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कास्मिक किरणें तेजी से चलने वाली, अत्यन्त शक्तिशाली, अत्यन्त सूक्ष्म कण हैं जब इनमें से पृथ्वी के क्षेत्र में आती है और हमारे नभ मंडल में प्रवेश करती हैं तब वे हवा में स्थित परमाणुओं से टकराती है और नए न्यूक्लियर कणों को उत्पन्न करती है। ये नए कण बड़ी तेजी से चलना प्रारम्भ करते हैं ये उसी दिशा में चलते हैं जिस दिशा में मूल किरणें चल रही थी और इन्हें द्वितीय कास्मिक किरणों का नाम दिया जाता है । जो द्वितीय कास्मिक किरणें 10 से.मी. लेड में प्रवेश नहीं कर सकती है उन्हें कास्मिक किरणों का नरम भाग कहा जाता है। डा. भाभा की मुख्य देन इस क्षेत्र में यह रही कि उन्होंने Cascade कास्मिक किरणों की वर्षा के द्वितीय कास्मिक किरणों के नरम भाग का सिद्धान्त खोजा। उन्होंने अपने सिद्धान्त की विस्तृत गणीतिय अपेक्षाओं को खोजा । उनकी कास्केड थ्योरी ने एक नया उपयोग खोज लिया जब उन्होंने हेजल बर्ग के उच्च ऊर्जा कास्मिक किरण सिद्धान्त में पाए जाने वाले Explosians विस्फोट की प्रकृति से सम्बन्धित विचार को ध्वस्त कर दिया। उन्होंने भविष्यवाणी की कि कास्मिक किरणों की वर्षा में कुछ कण न तो प्रोटोन और न इलेक्ट्रोन जैसा व्यवहार करते हैं। इसलिए वे कोई अन्य नई जाति के न्यूक्लियर कण हैं। उनके बताने के बाद उनको 'मेसन' नाम दिया गया। डाक्टर भाभा ने Vector Theory of Mesons को आगे बढ़ाया। उन्होंने सन् १९३८ में रायल सोसायटी को भेजे गए एक शोध पत्र में इस विषय पर लिखा। क्वान्टम मेकेनिक्स के भाग ने समीकरणों का एक समूह काल्पनिक स्पिन वाले कणों के लिए खोजा। ये डीराक-फर्मी-पाली की समीकरण के समान हैं। विशेष कर स्पिन ०१/२ के खास मामलों में। सन् १९४१ में वे इंडियन इन्स्टिट्यूट ऑफ साइन्स बैंगलोर में मौखिक भौतिकी में रीडर पद पर नियुक्त किए गए। सन् १९४२ से १९४५ तक वे वहां प्रोफेसर के रुप में रहे। इस समय वे कास्मिक रेज यूनिट के साथ जुड़े रहे। सन् १९४५ में वे टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ फंडामेन्टल रिसर्च (FIFR) के निदेशक नियुक्त हुए। यह संस्था डा. भाभा के प्रयत्न से ही स्थापित हुई थी। सन् १९४७ से १९६६ तक भाभा **'एटोमिक एनर्जी कमीशन'** के अध्यक्ष रहे। सन् १९५४ से सन् १९६६ तक वे भारत सरकार के एटोमिक एनर्जी विभाग में सचिव के रुप में रहे। उनके प्रयत्नों का ही फल था कि ट्राम्बे में एक एटोमिक सेन्टर की स्थापना हुई। उसके सम्मान के बाद में इसका नाम भाभा एटोमिक सेन्टर रख दिया गया। सन् १९५१ में डा. भाभा को भारतीय विज्ञान परिषद का अध्यक्ष चुना गया। भारत में परमाणविक क्षेत्र में जो कार्य हुआ वह डा. भाभा के नेतृत्व में हुआ। यद्यपि भाभा आत्मविश्वास की बात करते थे। परन्तु धन की कमी के कारण उन्होंने सी.आआर.यू.एस. की स्थापना में कनाड़ा तथा तारापुर की स्थापना में संयुक्त राज्य अमेरिका से सहयोग प्राप्त किया। उन्होंने आणविक शक्ति के शक्तिपूर्ण उपयोग के विषय में सन् १९५५ में कहा था, कि अविकसित क्षेत्र के पूर्ण औद्योगिक विकास के लिए हमारी संस्कृति के आगे चलते रहने के लिए और इसके आगे विकास के लिए आणविक ऊर्जा केवल एक सहायक के समान ही नहीं वरन् यह अत्यन्त आवश्यक है।

भारत के ऐसे महान वैज्ञानिक का एक वायुयान दुर्घटना में २४ जनवरी १९६६ को निधन हो गया। दुर्भाग्य से डा. भाभा अपने प्रथम तारापुर के आणविक केन्द्र के कार्य को देखने के लिए जीवित नहीं रहे सके। इति शम्।

ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार- ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

अथ ऋग्वेद चतुर्थ मण्डलम्

गतांक से आगे...

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
५५	१ से १० तक	विद्वानों के गुण
५६	१ से ४ तक	द्यावापृथिवि अर्थात् प्रकाश-भूमि के गुण।
	५ से ७ तक	शिल्प विद्या के विषय में।
५७	१ से ८ तक	कृषि कर्म के विषय में।
५८	१, २ व ६	उदक विषय।
	३ व ११	ईश्वर के विज्ञान के विषय में।
	४	सूर्य्य दृष्टान्त के विद्वद्विषय का वर्णन।
	५	मेघ विषय
	७	जल दृष्टान्त से वाणी विषय।
	८ से १०	विद्वद्विषय।

इति चतुर्थ मण्डलम्

अथ ऋग्वेद पञ्चम् मण्डलम्

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
१	१ से १२ तक	उपदेश देने योग्य और उपदेश देने वाले के गुण
२	१ से ३ तक	विवाह करने के विषय में
	४ व ५	विवाह सम्बन्धी संतान विषय में
	६ से ९	विद्वद्विषय
	१०	धनुर्वेद के दृष्टान्त से अविद्या का निवारण
	११ व १२	विद्वानों के गुणों का वर्णन
३	१,२,३, व ८	राजा के कर्तव्य
	४, ६ व १२	प्रजा के कर्तव्य
	५	राजधर्म
	७ व ११	चोरी आदि अपराध निवारण, प्रजापालन व राजधर्म के विषय में
	९ व १०	संतान शिक्षा विषयक प्रजाधर्म
४	१ व २	राज विषय
	३ व ४	प्रजा विषय
	७ से ११ तक	राजा प्रजा विषय में
५	१ से ४ तक	विद्वानों के विषय में
	५ से ८ तक	गृहस्थाश्रम
	९	राजा-प्रजा के विषय में
	१० व ११	विद्या ग्रहण
६	१ से ६ तक	अग्नि विषय
	७	अग्नि विद्या के उपदेश
	८ से १० तक	राज विषय
७	१ व २	मित्रता के विषय में
	३ से ६ तक	विद्वानों के विषय में
	७	राज विषय
	८	राज शिक्षा
	९ व १०	अग्नि शब्दार्थ विद्वान विषय
८	१ से ३	अग्नि शब्दार्थ गृहस्थाश्रमी के विषय में
	४ से ७	अग्नि शब्दार्थ विद्वान विषय
९	१ व ३	अग्नि आदि पदार्थ के गुण
	२, ४ व ५	विद्वानों के गुण
	६ व ७	मित्र भाव
१०	१ व २	अग्नि शब्दार्थ विद्वान विषय
	३ व ४	विद्वान विषय
	५ व ६	शिल्प विद्या
	७	विद्यार्थी विषय
११	१	अग्नि के गुणों का वर्णन
	२ व ३	विद्वद्विषय
	४	अग्नि आदि गुणों का वर्णन
	५ व ६	विद्वानों के विषय
१२	१	अग्नि विषय
	२	विद्वानों के विषय
	३	अग्नि पद वाच्य विद्वद्विषय
	४, ५ व ६	विद्वद्विषय
१३	१	विद्वानों के गुण
	२ व ३	अग्नि के गुण
	४, ५, व ६	विद्वद्विषय
१४	१ से ६ तक	अग्नि के गुण
१५	१	अग्नि के गुण
	२ से ५ तक	विद्वविषय
१६	१ व २	बिजुली के विषय
	३	संग्राम विजय विषय में
	४ व ५	राज्य ऐश्वर्य वृद्धि
१७	१	अग्न्यादि विद्या विषय
	२, ३ व ५	विद्वद्विषय
	४	अग्नि दृष्टान्त से विद्या विषय के बारे में
१८	१ से ५ तक	अतिथि
१९	१ से ५ तक	विद्वानों को सिद्ध करने योग्य उपदेश
२०	१ से ५ तक	अग्नि पद वाच्य विद्वानों के गुण
२१	१ व २	अग्नि विषय
	३ व ४	शिल्प विद्या देता विद्वानों के विषय में

(शेष आगामी अंक में...)

- पं. सत्यपाल शर्मार्य -
आर्य समाज-देहरी, जिला- मन्दसौर म.प्र.
चलभाष : ८४३४७४६४७४

पृष्ठ ६ का शेष भाग

बन्धुवर ! आओ, मानव जीवन सफल बनाएं...

आप किसी समय संसार की समस्त बुराइयों में जकड़े, पूर्ण रुप से नास्तिक मुन्शीराम के नाम से जाने जाते थे। महर्षि दयानन्द जी के सत्संग में अंधविश्वासों-पाखण्डों की धज्जियां बिखेर दी जाती थी। धर्म-ईश्वर को व्यापार बना उदर भरण करने वालों में हड़कम्प मचा हुआ था। इनकी कुदृष्टि महर्षि दयानन्द जी पर थी अनेक प्राण घातक हमले महर्षि दयानन्द जी पर किये जा चुके थे। महर्षि दयानन्द जी के सत्संग की सुरक्षा व्यवस्था का दायित्व निर्वाह करने वाले पुलिस अधिकारी पिता नानकचंद जी के कहने पर अनमने मन से मुन्शीराम महर्षि दयानन्द जी से भेंट करने गये। वार्ता के समय आपने महर्षि दयानन्द जी से कहा आपकी बाते प्रभावित करने वाली है किन्तु विश्वास नहीं होता, इस पर दयानन्द जी ने कहा **'आपको विश्वास दिलाने वाला मै कौन होता हूँ, आपको विश्वास तो उस परमपिता परमात्मा की कृपा से ही होगा'** इन वाक्यों ने नास्तिक मुन्शीराम को अगाध ईश्वर भक्त स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया! जिन्होंने मोहनदास करमचन्द गान्धी को महात्मा बना दिया। जिनके शुद्धि आंदोलन से लाखों बिछूड़े भाइयों को स्व वैदिक धर्म में प्रवेश का मार्ग खुल गया, जिनके द्वारा प्रारम्भ किए गये प्रथम कन्या गुरुकुल से नारी जाती को वेद-वेदादि शास्त्रों के पढ़ने का बन्द मार्ग खुल गया, जिन्होंने प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित कर मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर दिया, जिन्होंने जलियां वाला बाग नरसंहार काण्ड केपश्चात् दिल्ली में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित कर रोलेट एक्ट के विरोध में अंग्रेजों की सगींनों के सामने अपना सीना अड़ाकर कहा **'पहले मेरे सीने पर गोली चलाओ'**। वैदिक धर्म की सेवा में अपने प्राणों को होम कर आप अमर हुतात्मा बन मानव जीवन को सफल कर अमर हो गए।

यह सब सम्भव है मात्र मानव जीवन में और वह भी परमपिता परमात्मा की कृपा के साथ अपने द्वारा पूर्ण पुरुषार्थ करने पर, क्रियात्मक योग प्रशिक्षण एक सशक्त माध्यम है उस दिशा में पुरुषार्थ करने का। कब किस पुण्यात्मा महापुरुष का कौन सा वाक्य हमारे जीवन में उतर जाये और हमारा जीवन उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान से आलोकित हो जाए, इसका कुछ कहना नहीं। हमें तो परमपिता परमात्मा ने मानव जीवन दिया है, मन-बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों के रुप में सप्त ऋषि दिए हैं। पुरुषार्थ हेतु पूर्ण सक्षम-समर्थ बनाया है, **आओ! उस दिशा में सार्थक प्रयास पुरुषार्थ करें जिससे यह मानव जीवन फूलों की तरह सुगन्धी से भर जाए, स्वयं तो सद्गुणों की सुगन्धी का स्त्रोत बन जाए औरों के जीवन को भी सुगन्धित बनाएं।**

विशेष ध्यानार्थ : आवेदन-पत्र के पीछे की ओर अंकित नियम क्र-२ में लिखने, बोलने, समझने में समर्थ धर्म जिज्ञासु व्यक्ति को शिक्षा के सम्बन्ध में शिथिलता दी जा सकती है। इसी प्रकार नियम क्र.-३ में भी शारीरिक रुप से सक्षम-समर्थ, जिनकी अध्यात्म के प्रति गहन रुची है तथा जो जिज्ञासु प्रवृत्ति के अधिक आयु के व्यक्तियों को भी स्थान होने पर प्रवेश दिया जा सकता है अत: आवेदन अवश्य करें। नियम क्र.-४ में वस्त्रों के विषय में अगर व्यवस्था कर सकते हैं तो अच्छी बात है समस्त शिविरार्थियों में एकात्मकता का भाव रहता है तथा वस्त्र हमारे मन के साथ-साथ अन्य शिविरार्थियों के मन पर भी अनुकूल-प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। शिविर काल साधना काल है, अपने आपको साधने का विषय है। वस्त्र साधारण होंगे तो आपको तो सहायक होंगे ही, अन्यों के मन को भी विचलित नहीं करेंगे। सादगीपूर्ण वस्त्रों का ही उपयोग करें, किन्तु वस्त्रों की व्यवस्था नहीं हो सकती और इस कारण से शिविर छोड़ना भी उचित नहीं अत: वस्त्रों की व्यवस्था नहीं हो सकती कोई बात नहीं शिविर में भाग अवश्य लें।

साधना काल में आहार और वाणी की ओर से भी सतर्क रहना आवश्यक होता है अत: परस्पर-सांसारिक वार्ताओं से बचें मौन नियम का पालन करें। सात्विक-पौष्टिक आहार-प्रात:राश ठीक समय पर शिविरार्थियों को उपलब्ध होता है आवश्यकता अनुसार ही ग्रहण करें। सेवाकार्यों में योगदान दें। **शिविर के जो भी नियम व्यवस्था है वे सब शिविरार्थियों के हितार्थ है प्रसन्नता पूर्वक उसका पालन निष्ठा पूर्वक करेंगे तो अधिक से अधिक लाभ प्राप्त होगा। आप सभी के मंगलमयी जीवन की कामना के साथ पत्र को विराम देता हूँ।**

दयानन्द कन्या विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस संपन्न

विद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्रगान, देशभक्ति गीत, नृत्य, सूर्य नमस्कार, व्यायाम अंग्रेजी एवं हिन्दी में पर्व पर भाषण देकर उपस्थित अतिथियों, गणमान्य व्यक्तियों, आर्य समाज के सदस्यों, अध्यापिकाओं, अभिभावकों आदि का मन मोह लिया। छात्राओं द्वारा बनाई विविध सामग्री की प्रदर्शनी एवं विक्रय भी किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती डॉक्टर कुसुम विजयवर्गीय ने ध्वजारोहण किया। लायन्स क्लब मेवाड़ के अध्यक्ष श्री चौधरी के साथ अन्य सदस्य, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय उदयपुर के पूर्व कुलपति प्रो. वीर बहादुर सिंह, प्रो. भारद्वाज, प्रो. राजवंशी, प्रो. तापड़िया आदि का इस समारोह में सानिध्य प्राप्त हुआ।

विद्यालय अध्यक्षा श्रीमती ललिता मेहरा ने अतिथियों का स्वागत, मानद निर्देशिका श्रीमती पुष्पा जी सिंधी ने विद्यालय परिचय, सचिव कृष्ण कुमार सोनी ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। श्री भूपेन्द्र शर्मा ने समारोह का सुन्दर संचालन किया।

महर्षि दयानन्द और गो रक्षा

- पंडित नन्दलाल निर्भय -
आर्य सदन बहीन, जनपद-पलवल (हरि.)
चलभाष क्रमांक : ९८१३८४५७७४

हमारा प्यारा आर्यवत्त (भारत भूमि) ऋषि-मुनियों त्यागी-तपस्वी विद्वानों का प्यारा देश है। इस देश में संसार के सब देशों से ज्यादा महान पुरुष पैदा हुए हैं जो ईश्वर भक्त, सदाचारी, परोपकारी थे उन्हीं महान पुरुषों में से एक थे जगतगुरु महर्षि दयानन्द महाराज।

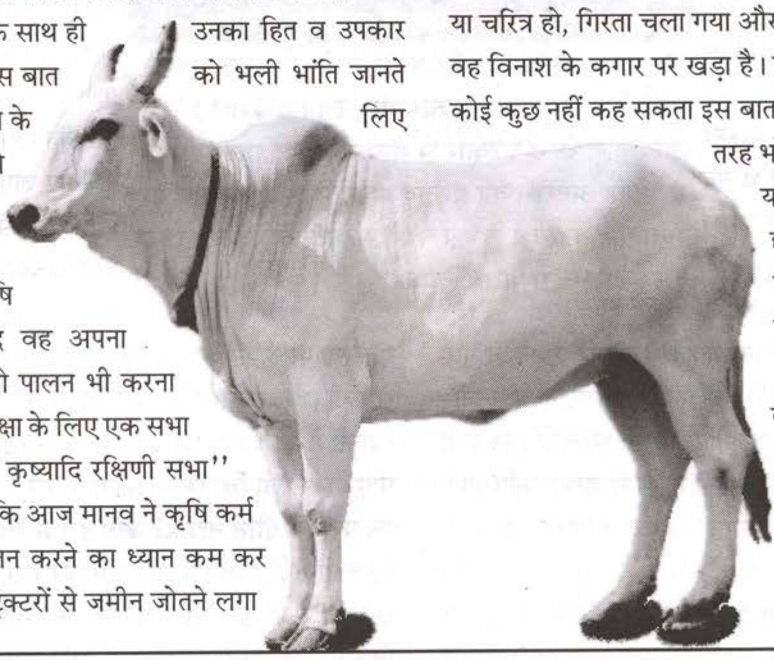

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार के बाद गौरक्षा के प्रश्न को ही सबसे अधिक महत्व देते थे। उनके विचार से मानव मात्र का कल्याण वैदिक पथ पर चलने से तो होगा ही इसके साथ ही उनका हित व उपकार गो पालन से ही सम्भव है। इस बात को भली भांति जानते थे कि कृषि जितनी मानवमात्र के लिए जरुरी है उतनी ही जरुरी गो पालन है। इसका कारण कृषि और गो पालन एक दूसरे के पूरक हैं। जब एक मनुष्य कृषि करता रहेगा तब तक यदि वह अपना कल्याण चाहता है तो उसे गो पालन भी करना पड़ेगा। इसलिए महर्षि ने गो रक्षा के लिए एक सभा बनाई थी जिसका नाम "गो कृष्यादि रक्षिणी सभा" रखा था। दु:ख का विषय है कि आज मानव ने कृषि कर्म तो चालू रखा किन्तु गो पालन करने का ध्यान कम कर दिया और बैलों की जगह ट्रैक्टरों से जमीन जोतने लगा और गाय के दूध, घी, दही, मलाई की जगह मांस खाना व शराब पीना आरम्भ कर दिया। आज मानव अपने हर स्तर से चाहे वह बल हो, बुद्धि हो, या चरित्र हो, गिरता चला गया और आज उसकी स्थिति यह हो गई है कि वह विनाश के कगार पर खड़ा है। किस समय संसार का विनाश हो जावे कोई कुछ नहीं कह सकता इस बात को महर्षि दयानन्द ने पहले ही अच्छी तरह भाँप लिया था कि मानव मात्र का विनाश या स्तर गिरने के सबसे मुख्य कारण दो ही हैं। पहला वेदों का पढ़ना-पढ़ाना छूट जाना और दूसरा गो पालन पर ध्यान ना देना।

पाँच हजार वर्षों पहले जब यह दोनों चीजें अपने पूरे यौवन पर न थी। तब हर बच्चा चाहे वह राजा का हो या रंक का पाँच या आठ वर्षों के बाद गुरुकुल में चला जाता था। वहां आचार्य की गोद में बैठकर वेदाध्ययन

गो माता पर बलिहारी है

हैं अंग-अंग में देव बसे, यह श्रद्धा की अधिकारी है।
हर सरल हृदय हिन्दुस्तानी, गो माता पर बलिहारी है।।

जिसने भी पाला है इसको, मिल गया पुण्य उसको अक्षय।
है जहाँ वास गोमाता का, वह कुटिया भी है देवालय।।
गो मूत्र और गोबर इसका, अनमोल, सुलभ, उपचारी है।
हर सरल हृदय हिन्दुस्तानी, गो माता पर बलिहारी है।।

है दुग्ध गाय का अमृत सम, देता है यह ताकत तन को।
यह कोप शमन कारी पय है, रखता है शांत सदा मन को।।
अनुसंधानों में सिद्ध हुआ, यह दुग्ध बहुत गुणकारी है।
हर सरल हृदय हिन्दुस्तानी, गो माता पर बलिहारी है।।

ऋषि-मुनियों ने पाली है, गो माता का गुण गाया है।
यह वेदों में उल्लेखित है, हर युग में आदर पाया है।।
यह अद्भुत है, यह अनुपम है, सब चौपायों पर भारी है।
हर सरल हृदय हिन्दुस्तानी, गो माता पर बलिहारी है।।

हर मानव की सेवा करने, निष्काम भाव से लगी रही।
यह ममता की सरिता बनकर, सबकी तृप्ती हित शतत बही।।
यह धरा तुल्य धीरज धरकर, बन गई पूज्य महतारी है।
हर सरल हृदय हिन्दुस्तानी, गो माता पर बलिहारी है।।

कभी स्वार्थवश, कभी स्वादहित, गायें जब-जब काटी जाती।
उस बेबस की चीखें सुनकर, फट जाती धरती की छाती।।
दे उसे सुमति हे दया निधे, जो प्राणों के व्यापारी हैं।
हर सरल हृदय हिन्दुस्तानी, गो माता पर बलिहारी है।।

- मोहम्मद हुसैन शाह "अदीब" -
त्रिमूर्ति नगर, नीमच म.प्र.
चलभाष क्रमांक : ९८६९०६१७३८

करता था और पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ आचार्य और गो सेवा का कार्य करता था और शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक व चारित्रिक बल से परिपूर्ण होकर जब पूर्ण यौवन अवस्था प्राप्त करके पच्चीस वर्ष बाद वह गृहस्थ में आता था तब वह अपने गृहस्थ जीवन में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करते हुए आनन्दित व सुखी बना रहता था। उस समय सब लोग वेद मार्ग पर चलते थे और गऊ के शुद्ध दूध का पान करते थे। तब आपस की कलह, द्वेष, घृणा, लड़ाई-झगड़ा, वैमनस्य होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। उस समय सब लोग सदाचारी, संयमी, परिश्रमी, ईमानदार, कर्तव्य परायण, दयालु, परोपकारी, न्यायकारी आदि मानवीय गुणों से विभूषित होते थे और परस्पर सद्व्यवहार रखते हुए प्रेमपूर्वक रहते थे तब सारा विश्व "**वसुधैव कुटुंबकम्**" के समान था। मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

पशुपालन राज्य मन्त्री रेखा आर्य द्वारा गाय को राष्ट्र माता घोषित करने का प्रस्ताव ध्वनीमत से पारित

उत्तराखण्ड विधानसभा के मानसून सत्र के दूसरे दिन पशुपालन राज्यमन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) रेखा आर्य द्वारा केन्द्र सरकार से गाय को राष्ट्र माता घोषित करने के अनुरोध का प्रस्ताव सदन में रखा। प्रस्ताव पर सत्तापक्ष के साथ विपक्ष ने भी सहमती व्यक्त करते हुए इसे ध्वनी मत से पारित किया।

महर्षि दयानन्द वही प्राचीन सुखद व आनन्दपूर्ण स्थिति विश्व में पुन: लाना चाहते थे इसीलिए उन्होंने नारा दिया था कि '**वेदों की ओर लौटो**' यानि वेदों को पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना पुन: आरम्भ करो, साथ ही गो पालन पर विशेष ध्यान दो। इन दोनों कार्यों के द्वारा ही स्थिति के बदलने का सही उपाय समझकर ऋषि जी ने इन दोनों कार्यों पर विशेष बल ही नहीं दिया बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया। वेद प्रचार के लिए महर्षि ने क्या-क्या किया यह किसी से छुपा नहीं है, इसे सारा संसार जानता है। उन्होंने अपने जीवन में खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना सब कार्यों को गौण समझकर वेद प्रचार करना ही मुख्य कार्य समझा। वेद प्रचार के लिए कितनी ही बार जान को जोखिम में डालकर वेद विरोधियों से लड़ना पड़ा, सैंकड़ों शास्त्रार्थ किए, सहस्त्र बार विष पिए, विरोधियों की गालियाँ सुनी, ईंट-पत्थर खाए, मान-अपमान सहा, पहाड़ों व जंगलों की खाक छानी फिर भी वेद प्रचार करने से विचलित व विमुख नहीं हुए। इसी वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने केलिए सन् १८७५ ई. में उन्होंने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम '**वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का यानी सभी श्रेष्ठ पुरुषों का सिर्फ धर्म ही नहीं बल्कि परम धर्म है।**' बताकर अपनी अभिलाषा प्रकट करते हुए इस कार्य पर विशेष बल दिया ताकि आर्य समाजी इस कार्य को करना न भूलें।

गाय की रक्षा के लिए महर्षि ने क्या-क्या प्रयास किए इसके बारे में काफी लोग अनभिज्ञ हैं, इसके ऊपर मैंने कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया है, कृपया पाठकगण इससे लाभ उठायें। महर्षि जी अच्छी प्रकार जानते थे कि वेद जैसे अपनी शिक्षाओं से मनुष्य को चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को परोपकार की भावना से करते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है। उसी प्रकार गऊ भी अपने शुद्ध दूध, घी, दही, छाछ से मनुष्य के शरीर को हृष्ट-पुष्ट तथा बुद्धि को शुद्ध व पवित्र बनाती है। जिससे मनुष्य धर्म के कार्य करता है। मनुष्य गऊ के पंचगव्य से अनेक प्रकार की दवाइयां बनाकर तथा बैलों द्वारा कृषि व माल ढोने का काम करके धन उपार्जन करता है तथा शरीर की शक्ति व पवित्र बुद्धि से अपनी सब कामनाऐं (इच्छाएं) पूरी करता है तत्पश्चात् सब काम धर्मानुसार करने से मोक्ष पाने का भी अधिकारी बन जाता है। इसलिए वेद के प्रचार के समान गऊ पालन भी उपयोगी व लाभदायक है। इस बात को महर्षि ने समझा और दोनों की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। सबसे पहले महर्षि ने गौमाता की दयनीय दशा देखकर, "**गो करुणा निधि**" नाम की एक लघु पुस्तिका लिखी, जिसमें गो हत्या पर अपनी हृदय की वेदना ही प्रकट नहीं की बल्कि फूट-फूट कर रोये भी। ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था व विश्वास रखने वाले व्यक्ति ने भी ईश्वर को यहां तक कोसा कि "**हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इसके लिए तेरी न्याय सभा बंद हो गई है? क्यों नहीं इनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान देता और इनकी पुकार नहीं सुनता। क्यों इन मांसाहारियों की आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कर्मों से बचें।**" गऊ मानव मात्र के लिए कितनी उपयोगी व जरूरी है, वह अपनी उम्र में कितने हजार लोगों का पालन-पोषण कर देती है, यह सब दर्शाया है। यदि गऊ के हत्यारे "**गो करुणा निधि**" पुस्तक को पढ़ लेवें और चिन्तन-मनन करें तो कोई पत्थर हृदय ही होगा जो पिघल न जाए। खेद का विषय है कि आज की सभी गो हत्यारी सरकारें जो गो पालक कृष्ण को भगवान का रूप मानती हैं और महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी और विनोबा भावे के आदर्शों पर चलने वाली कहलाती हैं, फिर भी गो हत्या बंद नहीं करती। इसीलिए यह सभी सरकारें सिर्फ निन्दनीय ही नहीं, भर्त्सना करने योग्य हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने सबसे पहली गऊशाला राव युधिष्ठिर रेवाड़ी नरेश के द्वारा रेवाड़ी में खुलवाई थी। इसके साथ ही हजारों गऊशालाएं पूरे भारत में चल रही हैं। यह सब महर्षि दयानन्द महाराज की कृपा का फल है। अत: हम सबको गऊ भक्त बनकर महर्षि दयानन्द महाराज का सपना साकार करना चाहिए। इसी में विश्व की भलाई है।

'परमेश्वर' जगत् का रचयिता

- मृदुला अग्रवाल -
१९-सी, सरत बोस रोड़
कोलकाता - (प. बंगाल)
चलभाष क्रमांक : ९८३६८४१०५१

''**परमेश्वर**'' जो इस संपूर्ण जगत् का रचयिता है, वह तीन प्रकार के स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप जगत् का रचयिता होकर भी इनसे अलग है। वह इस दृष्टिगोचर जगत् के सब पदार्थों में विद्यमान है। वह सर्वव्यापी, अन्तर्यामी सबके जीवन का आधार है। वह सृष्टि-रचयिता परमेश्वर ''**हिरण्यगर्भ**'' है। स्वामी दयानन्द जी ने संस्कार-विधि में ''**हिरण्यगर्भ**'' का अर्थ '**स्वप्रकाश स्वरूप**' लिखा है। अपना प्रकाश ही परमेश्वर का स्वरुप है।

''हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।''
- यजुर्वेद, अध्याय-१३, मन्त्र-४ ।।

अर्थात् - हिरण्यगर्भः जो परमेश्वर है, वही एक इस सृष्टि के रचने से प्रथम विद्यमान था। जीव गाढ़ निद्रा सुषुप्ति में लीन और जगत् का कारण अत्यन्त सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एक रस स्थिर था। जो सब जगत् का स्वामी पृथिवी से लेकर प्रकाशमान सूर्य पर्यन्त सब जगत् को रच के धारण करता है एवं अन्त समय में प्रलय भी करता है, उस सुख रूप प्रजा पालने वाले प्रकाशमान परमेश्वर की सब मनुष्य उपासना करें।

परमेश्वर को छोड़के अपने-आप स्वभाव मात्र से सिद्ध होने वाला अर्थात् जिसका कोई स्वामी न हो, ऐसा संसार जगत् नहीं हो सकता, क्योंकि जड़ पदार्थों के अचेतन होने से यथायोग्य नियम के साथ उत्पन्न होने की योग्यता कभी नहीं होती। परमेश्वर कायारहित एक अध्यात्म चेतन सत्ता है जो सृष्टि के कण-कण में मौजूद है। हम साधारण मनुष्य उसे देख नहीं सकते। जो मेघावी विद्वान परमेश्वर को अपनी ज्ञानदृष्टि से, दिव्य विधाओं के प्रकाश से, समाधियुक्त योग एवं प्राणायाम से, शास्त्र एवं वेद के स्वाध्याय से युक्त बुद्धियों से जानकर पुरूषार्थी होते हैं, वे ही निर्मल विज्ञान से श्रेष्ठ तथा शुद्ध ज्ञान द्वारा उसके प्रकाश को अनुभव कर सकते हैं।

सृष्टि-उत्पत्ति के समय अपने कार्यों को करने में स्वयं समर्थ, किसी दूसरे की सहायता की अपेक्षा ना रखने वाला परमेश्वर ''**यः स्वयं भवति स स्वयंभूरीश्वरः**'' जो आप से आप ही है, किसी से भी उत्पन्न नहीं हुआ है, इससे उसका नाम ''**स्वयंभू**'' है।-सत्यार्थ प्रकाश, समुन्मलास-१ ''**स्वयंभू**'' अनादिकाल से निरंतर वर्ष-वर्षान्तर से सृष्टि का यथार्थ प्रबन्ध करता है। **मीमांसा दर्शन, महर्षि जैमिनी प्रणीत** :- मनुष्य आनन्दमय है। वह सुख चाहता है, विघ्नों को हराकर दुःख दूर करना चाहता है। धन-साधना-सम्पन्नता से सुविधा बढ़ती है, पर आन्तरिक सुख नहीं मिलता है। ऐसे में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और उसकी कृपा ही समस्या का समाधान है। दर्शन-विद्या के बिना व्यक्ति स्वयं का दोष कभी नहीं जान पाता।

मनुष्य जीवन एक यज्ञ है। इसके रचयिता परमेश्वर हैं। वही इस जगत् रूपी यज्ञ को सिद्ध करके हम सबको सुख युक्त करता है। परमेश्वर ने जीवात्माओं के जन्म-मरण की व्यवस्था हेतु सृष्टि का निर्माण किया। वह स्वयं अजन्मा है। जहां जन्म है वहां मृत्यु भी निश्चित है। परमेश्वर इस सत्य को जानता है।

सब प्राणियों के लिए उसके यथायोग्य शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार सुख-दुःख रूपी फल को भोग करता है। जो जिस वस्तु के योग्य है उसके कल्याण हेतु न्याय प्रदान करता है। मनुष्य-जीवन परमेश्वर की न्यायकारी व्यवस्था के अन्तर्गत है, जो हमें पुनः जन्म देता है। हम फिर से माता-पिता, स्त्री, पुत्र, बंधु आदि देखते हैं।

परमेश्वर ने जीवात्माओं का और प्रकृति का मिलन कराया है। प्रकृति से युक्त होकर जीवों का जन्म है। जैसे कि तैत्तरीय उपनिषद में कहा है कि परमेश्वर और प्रकृति से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथिवी से औषधियाँ, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से स्त्री एवं पुरुष। इन्ही पाँच तत्वों से मनुष्य शरीर बना है। इसीलिए स्वामी रामतीर्थ ने इसे अर्थात् प्रकृति एवं पाँच तत्वों को हमारे ''**वास्तविक सगे-संबंधी**'' कहा है। प्रकृति के रूपों में, समुद्र की व्यापकता समुद्र के अन्दर विराजमान, हिमाच्छादित पर्वतों से उच्च फैले हुए शिखर, बादलों के क्षणपरिवर्ती रूपरंग तथा इन पर पड़ती हुई सूर्य की किरणों की मनमोहक छवि परमेश्वर के इस जगत् के रचियता होने का भान कराते हैं। उसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नक्षत्र-ग्रह, ब्रह्माण्ड आदि की रचना की है। जो कि उसकी नियम-व्यवस्था अनुसार अपनी-अपनी जगह पर स्थित हैं। उस परमेश्वर का सामर्थ्य और बल अपरम्पार है। यह सब दृश्यमान जगत् सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व प्रलयकाल में तम अर्थात् मूल प्रकृति रूप में अन्धकार से आच्छादित था। सूक्ष्माति सूक्ष्म परमात्मा से यह जगत् व्याप्त था। उस परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप से कार्यरूप में परिणत करके सृष्टि की रचना की। वही इसका पालनकर्ता और प्रलयकर्ता है। ''**चेतन प्रभु के संकल्प से अव्यक्त जगत् ने व्यक्त स्वरुप प्राप्त किया। सृष्टि और वेद के गम्भीर ज्ञान को पूर्णरूप से परमात्मा ही जानते हैं। जिसके कारण यह विविधरूपा सृष्टि प्रकाश में आई, जो इसकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयकर्ता है वह**

परमात्मा है।'' -सत्यार्थ प्रकाश

वेदों में परमेश्वर के असंख्य गुण और नाम हैं। सबसे श्रेष्ठ नाम **''ओ३म्''** है। वह निराकार है उसकी कोई मूर्ति नहीं। मूर्ति तो हम हैं, जीव हैं, वह हमें सब जीवों को बोध कराता है। संसार की अनिवार्यता एवं जीवात्मा की नित्यता का बोध कराता है।

''अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्व१न्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानि विश्वोतामूं द्यां वर्ग्णणोप सपृशामि।।''
-अथर्ववेद, काण्ड -४, सूक्त-३०, मन्त्र-७।।

भाषार्थ :- मैं इस जगत् के नियम के निमित्त पालन करने वाले गुण को उत्पन्न करता हूँ। मेरा घर अंतरिक्ष में वर्तमान व्यापनशील रचनाओं के भीतर है, इसी से सब प्राणियों में व्यापक होकर वर्तमान हूँ और उस प्रकाशमान और उदीन प्रकृति से उत्पन्न हुए सूर्य को अपने ऐश्वर्य से छूता रहता हूँ।

भावार्थ :- परमेश्वर सबमें व्यापक रहकर सबका पालनकर्ता और नियन्ता तथा उपास्य है।

''अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विंचक्रमे।
पृथिव्याः सप्त धममिः।। ''
-ऋग्वेद, मंडल-१, सूक्त-२२, मन्त्र-१६।।

पदार्थ :- जिस सदा वर्तमान नित्य कारण से चराचर संसार में व्यापक जगदीश्वर पृथ्वी को लेकर सात अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, विराट्, परमाणु और प्रकृति पर्य्यन्त लोगों को जो सब पदार्थों को धारण करते हैं उनके साथ रहता है। उसी से विद्वान लोग हम लोगों को उक्त लोकों की विद्या को समझते व प्राप्त करते हुए हमारी रक्षा करते हैं। विद्वानों के उपदेश के बिना किसी मनुष्य का यथावत् सृष्टि विद्या का बोध कभी नहीं हो सकता। परमेश्वर ने इस जगत् में तीन प्रकार का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्राप्त होने वाला जगत् रचा है। अर्थात् एक पृथिवी रूप, दूसरा अंतरिक्ष आकाश में रहने वाला त्रसरेणुरुप और तीसरा प्रकाशमय सूर्य आदि लोक तीन आधार रूप हैं। इनमें से आकाश में वायु के आधार से रहने वाला जो कारणरूप है वही पृथिवी और सूर्य आदि लोकों को बढ़ाने वाला है। परमेश्वर ने सूर्य लोक को अपने ताप और छेदन शक्ति द्वारा रचा है। इस जगत् को परमेश्वर के बिना कोई बनाने को समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि किसी का भी ऐसा सार्मथ्य नहीं है। परमेश्वर, जीव और प्रकृति जगत का नियन्ता है। तीनों अनादि हैं। जलरुप सृष्टि का होना, परमेश्वर के सत्य-सिद्धांतों से हमारी इस भूमि का निर्माण होना, जल से तलछट जानने की क्रिया से पृथिवी का टापू रूप प्रकट होकर विस्तृत होना, फिर वनस्पति जगत्, अन्य जीवधारियों और फिर मनुष्य का निर्माण होना, जगत् और वृहद आकाश दोनों के द्वारा ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान तथा पंचभूत का ज्ञान मनुष्यों को मिलना- ये सब कार्य स्वयं नहीं होते। इसलिए सृष्टि किसी ने बनाई है। प्रकृति जड़ है, उसका नियंत्रण कोई चेतन शक्ति करती है।

जिस कारण परमेश्वर सकल संसार को रचता है, इससे सब पदार्थ परस्पर अपने-अपने संयोग से बढ़ते हैं और ये पदार्थ क्रियामय यज्ञ और शिल्पविद्या में अच्छी प्रकार संयुक्त किए हुए बड़े-बड़े सुखों को उत्पन्न करते हैं। जैसे, पौधा उगता है, बढ़ता है, फूल खिलता है, फूल की सुगंध फैलती है। वृक्ष उगता है, बड़ा होता है, फलों से लद़ जाता है। चींटी चली जाती है, मीठे के कण तक पहुँच भी जाती है, फिर भी चलती रहती है। मनुष्य प्रकृति से बंधा अपने कर्म नहीं छोड़ सकता।

जगत् को रचने वाला परमेश्वर सब को पुष्ट करने हारे हृदयस्थ प्राण और जीव को जानता है। मनुष्य-जीवन में प्राण सबसे श्रेष्ठ हैं। कर्म ही सृष्टि का प्राण है। जीव जो श्वास-प्रश्वास ले रहा है, परमेश्वर के द्वारा अन्न को खाता है, जल-पान करता है, अन्य क्रियाएं करता है, प्रकृति के गुणों पर मुग्ध होकर वह जो क्षण-क्षण राग अलाप रही है, उसकी भिनभिनाहट को सुनता है- परन्तु वास्तव में वह कुछ नहीं सुनता। श्वास-प्रश्वास व प्राण लेता हुआ भी परमेश्वर को अनुभव नहीं करता, संसार के विविध पदार्थों को देखता हुआ भी नहीं देखता। उसको विचारना चाहिए कि परमेश्वर ही पूर्ण जगत् का आश्रय है, वही जगत् का सार है, उसका मनन किया जाये तो उसकी सत्ता को कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। प्राकृतिक जगत् में जिधर नज़र उठती है उधर से परमेश्वर ही जीवन-मार्ग का उपदेश देता हुआ दिखता है। किसी शायर ने ठीक ही कहा है - **''समाया है जब से तू नज़रों में मेरी, जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।''** परमेश्वर के रचे हुए संसार में अनेक उपकार ग्रहण किए जा सकते हैं। परमेश्वर के रचे हुए पदार्थों को देखकर हमें उनका धन्यवाद कर उनकी स्तुति करनी चाहिये। ये पदार्थ रचने वाले का निश्चय कराते हैं। जो मनुष्य परमेश्वर को नमस्कार करते हैं, उनकी स्तुति करते हैं उनको वह अपने अनुग्रह से विद्यादान से प्रसन्न करता है, उन्हें उनके कर्मानुसार सन्मार्ग दर्शक ऋषि, उत्तम बुद्धि वाले तेजस्वी विद्वान बनाता है। वे मनुष्य सत्य भाषण से संयुक्त, अविधा आदि रोगों से रहित, शरीर में आत्मा की पुष्टि वाले होकर, ईश्वर की रक्षा को प्राप्त होते हैं। जो उस परमेश्वर को नहीं जानते, नास्तिक हो जाते हैं, वे पुरुष हीन होकर नष्ट हो जाते हैं। **''सूक्ष्मदर्शी ऋषि लोग वेद द्वारा परमेश्वर की शक्तियों को अनुभव करते हैं कि वह तीनों काल, तीनों लोकों में विराज कर सब सृष्टि का प्राणदाता है।'' -अथर्ववेद, काण्ड-९, सूक्त-१०, मन्त्र-१९।।**

षड्शास्त्रानुसारः- सांख्य प्रकृति, योग-पुरुषार्थ, न्याय-परमाणु, वैशेषिक का कारण मानते हैं अर्थात् वेद, उपनिषद्, षड्शास्त्र आदि सभी प्रकारान्तर से ''परमेश्वर'' को ही सृष्टि व जगत कर रचयिता मानते हैं। इति ओ३म्

संस्कारों का महत्व

- आचार्य सोमदेव आर्य -
वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्यवन रोजड़, गुजरात
चलभाष - ८६१९६३५३०७

संस्कार का जीवन में अत्यधिक महत्व है, जो व्यक्ति, समाज, वस्तु जितनी संस्कारित होगी वह उतनी ही उपयोगी होगी। बिना संस्कार के विशेष उपयोगी न होगी। भूमि से निकाले हुए लोहे का संस्कार (शुद्धिकरण) कर देने पर ही वह उपयोग में आ पाता है, बिना संस्कार किये नहीं आ पाता। ऐसे ही जो समाज अपने नियमों अनुशासन आदि से संस्कारित होता वह अधिक अपना विकास करता है। व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही है।

संस्कार शुद्धिकरण, परिशोधन करने को, व्यवस्थित करने आदि को कहते हैं। महर्षि दयानन्द संस्कार करने का परिणाम लिखते हैं - **''जिसे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं।''** महर्षि दयानन्द ने मनुष्य के लिए सोलह संस्कार कहे हैं, इनके यथावत् करने से ही मनुष्य उन्नत हो सकता है अन्यथा नहीं।

संस्कार जीवन में आधार (नींव) का काम करते हैं जिस भवन या वृक्षादि का आधार दृढ़ होता है वह भवन व वृक्षादि उतना ही लम्बी आयु वाला होता है। इस विषय में पं. गंगाप्रसाद जी कहते हैं - जितने वृक्ष ऊंचे और विशाल होते हैं उनकी जड़ें अधिक गहराई तक भूमी के अन्दर प्रवेश करती हैं। कद्दू या लौकी की जड़ बहुत गहरी नहीं होती इसलिए वह रहती भी एक या दो मास। कोई कद्दू की बेल पचास वर्ष पुरानी न मिलेगी। जैसी जड़ वैसी बेल। परन्तु नीम, पीपल की जड़ बहुत गहरी होती है, इसलिए वृक्ष लम्बे होते हैं और दीर्घ आयु वाले भी। ऐसे ही जिन मनुष्यों का संस्कार ठीक-ठीक हुआ वे अधिक सभ्य व दीर्घजीवी होते हैं।

संस्कार करने से मनुष्य के अतिरिक्त पर प्रभाव पड़ता है तो मनुष्य पर क्यों नहीं। किसान फसल बोने से पहले खेत का संस्कार करता है अर्थात् भूमी को उर्वरा बनाता है, उसको जोत कर उसमें खाद आदि देकर। संस्कृत हुई भूमी में फसल उत्तम होती है, भूमी के साथ-साथ बीज का संस्कार होता है उत्तम बीज उत्तम भूमी में बोया हुआ फसल अच्छी देता है।

पशुओं-पक्षियों को संस्कारवान् बनाया जा सकता है तो मनुष्यों को क्यों नहीं। विडम्बना इस बात की है कि मनुष्य इतना बुद्धिमान होते हुए भी अपने आप को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध नहीं कर पाया।

इस विषय में उपाध्याय जी लिखते हैं - ''जो कृषक अपने बैलों की वंशपरम्परा का ध्यान रखता है वह अपनी संतान के विषय में उतना सावधान नहीं रहता। जो राजा देश के पशु, पक्षी और सारे राष्ट्र का ध्यान रखता है, वह कभी यह सोचने का कष्ट भी नहीं करता कि राज-परिवार के राजकुमारों को किस प्रकार जन्म दिया जाये या किस प्रकार पालन हो। एक कृषक यह नहीं सोचता कि किस प्रकार सुन्दर कृषक उत्पन्न किये जावें। एक पण्डित यह कभी स्वप्न में भी नहीं विचारता कि उसकी सन्तान किस प्रकार उसके समान योग्य और प्रतिभाशाली बन सकेगी। यह सब इस कारण से हैं कि हमने संस्कारों के महत्व को उचित रुप में नहीं समझा है... इसलिए हमारे **ऋषियों ने यह उपदेश दिया कि सन्तानोत्पत्ति के पूर्व इस प्रकार के नियमों का पालन किया जाये कि अयोग्य सन्तान किसी भी प्रकार उत्पन्न ही न हो सके।''** जब तक मनुष्य अपने को उन्नत करने के लिए संस्कार युक्त न होगा तब तक उन्नत भी न होगा।

महर्षि ने सोलह संस्कारों का वर्णन शरीर और आत्मा सुसंस्कृत करने के लिए किया है। तीन संस्कार जन्म से पूर्व होते हैं, बारह संस्कार जीवन की अलग-अलग अवस्थाओं में और एक संस्कार मरण पश्चात्। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन ये जन्म से पूर्व के संस्कार हैं, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चूडाकर्म, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास ये जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में किये जाने वाले संस्कार और अन्त्येष्टिकर्म संस्कार मृत्यु के बाद का संस्कार है।

मनुष्य श्रेष्ठ मनुष्य उत्पन्न हो इसलिए विवाह तथा गर्भाधान संस्कार ऋषियों ने रखे। गर्भाधान से पूर्व स्त्री पुरुष का शरीर व मन स्वस्थ हो कि जिससे आने वाली संतान शरीर व मन से स्वस्थ रहे। यदि गर्भाधान से पूर्व मन बुद्धि आदि स्वस्थ नहीं है तो बच्चा भी वैसी मन बुद्धि वाला होगा। इस विषय में इंग्लैंड वालों ने यह पता लगाया कि जो बच्चे मार्च या अप्रैल में जन्म लेते हैं, उनके मस्तिष्क में कुछ न कुछ खराबी पाई जाती है। इसका कारण यह बताया जाता है कि मार्च और अप्रैल में जन्म लेने वाले बालकों का गर्भाधान जुलाई या अगस्त में हुआ होगा उस समय इंग्लैंड में अंगूर की फसल होती है और लोगों को अधिक मात्रा में शराब पीने को मिलती है। पुरुष और स्त्री नशे में मस्त होते हैं और इसी मदहोशी में गर्भाधान होता है। इनके नशे का प्रभाव संतान के मस्तिष्क पर होता है। जिस रज वीर्य से शरीर बनता है, उसमें शराब के दुर्गुण सम्मिलित होते हैं और वही प्रभाव उनके मस्तिष्क पर जन्म के समय होता है और भावी जीवन को प्रभावित करता रहता है। **यदि गर्भाधान के समय सावधानी न रखी गई तो भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों का आक्रमण हो जाता है, जिसका दुष्परिणाम सन्तान को जीवनभर उठाना पड़ता है।**

बालक का बालकपन सुख से व्यतीत हो और भावी शारीरिक तथा मानसिक उन्नति के बीज उसमें अंकित किये जावें, इसलिए पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म तथा कर्णवेध संस्कार ऋषियों ने रखे। मनुष्य का बच्चा विद्यानुरागी इसके लिए यज्ञोपवीत संस्कार रखा। बालक ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके बलवान, विद्वान् और मनुष्य जाति का प्रेमी हो सके इसके लिए वेदारम्भ संस्कार था। गृहस्थ में प्रवेश करने से पहले समावर्तन संस्कार किया जाता था । गृहस्थों की जब वृद्धावस्था आरम्भ हो जब उसको जितेन्द्रिय, तपस्वी, जिज्ञासु और प्रेम द्वारा मनुष्य जाति की सेवा करने के योग्य बनाने के लिए वानप्रस्थ था व लोकोपकार व मुक्ति के लिए सन्यास संस्कार और मृत्यु होने बाद इस शरीर का दाह कर देना (वेदानुकूल दाह) अन्त्येष्टि संस्कार होता था।

संस्कार रस्म रिवाज न होकर मानसिक अर्थात् अन्तःकरण की शुद्धि तथा शारीरिक शुद्धि के लिए जो क्रियाऐं यथावत् की जावें उनको ऋषियों ने संस्कार कहा है। इन्हीं संस्कारों से मनुष्यों का कल्याण सम्भव हैं अन्यथा नहीं।

(इस लेख में संस्कार चन्द्रिका व पं. गंगाप्रसाद जी के लेख का सहयोग लिया गया है।)

वैदिक मान्यताओं का वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विवेचन

पुस्तक-परिचय

- पं. देवमुनि वानप्रस्थी -
४८, वरेण्यम्, श्याम नगर,
अजमेर (राज.)
चलभाष : ७७४२२२९३२७

लेखक - डॉ. राजपाल सिंह मूल्य - ७५ =००

प्रकाशक - विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द पृष्ठ संख्या १०८

४४०८ नई सड़क, दिल्ली - ०६

आज के युग में सृष्टि की उत्पत्ति, जीव की उत्पत्ति, आत्मा के अजर-अमर, आदि तथ्यों पर भिन्न-भिन्न धारणायें हैं। युवा पीढ़ी में प्रश्नों का प्रवाह उमड़ता रहता है। ईश्वर, ईश्वर की सत्ता पर भी मंथन चलता रहता है। ईश्वर को किसने देखा है, कहां रहता है? आदि विचार चलते चले आ रहे हैं। महाभारत युद्ध हुआ या नहीं, राम सेतु कब कैसे बना। इन सब पर वैदिक मान्यताओं पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को डॉ. राजपाल सिंह जी ने गहन तार्किक आधार पर जनमानस के लिए सरलतम रुप में रखा है। डॉ. साहब ने प्रमाण, पंचतत्व, उर्जा, आत्मा, धारणा, नारी, मंथन, सच्चाई एवं मोड़ पर सटीक विवेचना की है। सभी महत्वपूर्ण विषय हैं वेद, दर्शन एवं विज्ञान पर किस प्रकार खरे उतरे हैं। मैं सर्वाधिक मंथन से प्रभावित हुआ हूँ। डॉ. साहब ने योग को योगा, कढ़ी को करी देशकाल व भाषा के आधार पर परिवर्तन है। गांधीजी के तीन बन्दर है। यजुर्वेद के मंत्र **भद्रं कर्णेभि श्रुणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा** यजुर्वेद २५/२१ हे ईश्वर हम कानों से अच्छा सुनें, आंखों से अच्छा देखें, चीन ने मुख से बुरा ना कहें जोड़कर तीन वानर प्रस्तुत कर दिए यह चीनी कहावत बन गई गांधी जी ने वेदों का अध्ययन नहीं किया। तीनों बन्दर गांधीजी के कारण प्रचलित हो गए। इस पर वैज्ञानिक, वैदिक आधार देकर स्पष्ट किया है। प्रेम शब्द पर चर्चा, महर्षि अगस्त के आश्रम में हिंसक, अहिंसक पशु भी प्रेम से रहते। दो व्यक्तियों के परस्पर आकर्षण को प्रेम की संज्ञा नहीं दी जा सकती। किसका क्या कर्तव्य है सब अपना-अपना निर्वाह कर रहे हैं। कर्तव्य और कर्म एक दूसरे के पूरक हैं। **मानव योनि कर्म और भोग दोनों के लिए जानी जाती है, जिन कर्मों का फल इस जीवन में नहीं मिलता तो आगे क्या होगा। संसार का निर्माण ईश्वर का कार्य है अब वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं** जापान की सुनामी ने उन्हें बौना बना दिया। अनेक मंथन की बातें हैं।

यह सामान्य रूप से एक बानगी पाठकों के समक्ष है अनेक उदाहरणों के साथ पढ़ेंगे तो आपका ज्ञान बाग-बाग हो जायेगा। इसी प्रकार सभी बिन्दु हैं। पाठक स्वयं आद्योपांत अध्ययन करेंगे तो गहन सार तत्व प्राप्त होगा। आपका चिन्तन बनेगा कि हम अभी तक अंधेरे में थे। कल्पना के सागर में गोते लगा रहे थे वास्तव में विश्लेषण, तथ्यात्मक वैज्ञानिक बिन्दु धर्म, दर्शन की कैसे समझा जाये। गोताखोर गोता लगाते हैं मोती किसी-किसी को मिलते हैं।

२२वाँ आर्य परिवार युवक-युवति वैवाहिक परिचय सम्मेलन

दिनांक : २७ अक्टूबर २०१८, प्रात: १० बजे **स्थान :** आर्य महासम्मेलन, स्थल दिल्ली

उच्च आय तथा उच्च शिक्षित-व्यवसायिक
आर्य परिवार युवक-युवति वैवाहिक परिचय सम्मेलन

दिनांक : २६ अक्टूबर २०१८, **प्रात: १० बजे स्थान :** आर्य महासम्मेलन स्थल, दिल्ली

अर्जुन देव चड्ढा ९४१४१८७४२८ | विस्तृत विवरण एवं पंजीयन हेतु सम्पर्क | **एस.पी. सिंह** ९५४००४०३२४

पंजीयन फार्म डाउनलोड हेतु -www.thearysamaj.org

आनलाईन पंजीयन हेतु -matrimony.thearyasamaj.org

पंजीयन शुल्क - ३००/- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से चेक, डिमांड ड्राफ्ट, मनिआर्डर द्वारा अथवा एक्सिस बैंक, करोल बाग शाखामें खाता क्र. 910010001816166 IFSC- UTIB0000223 में आनलाईन जमा किये जा सकते हैं।

विकलांग युवक-युवति तथ विधवा परित्यक्तता युवति हेतु ५० प्रतिशत छूट

पत्र व्यवहार हेतु पता :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-०१

श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली का वार्षिकोत्सव

दिनांक २० से २४ अक्टूबर २०१८ तक

एक शताब्दी पुरातन श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली का वार्षिक उत्सव प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी वर्णित तिथियों में आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमन्त्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान

स्वामी चेतनानन्द जी सरस्वती, जयपुर, **स्वामी मोक्षानंद सरस्वती,** नागदा, आचार्य - **योगेंद्र जी याज्ञिक,** होशंगाबाद, **आचार्य पवन वीर** मुजफ्फर नगर, **पं. सत्यपाल जी सरल,** देहरादून, **श्रीमती श्रुति आर्या,** जयपुर, **संपर्क** -संजू जायसवाल ९९९३३७०६८२ सुरेश मालवीय ६२६४३४५८३४

ऋत् सत्य और सत्य का रहस्य

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -

गढ़निवास मोहकमपुर

जनपद - देहरादून, उत्तराखण्ड

चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

ऋत् सत्य- ईश्वर ऋत् सत्य है और भूत, भविष्य व वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता है। वह तीनों कालों के चपेट में नहीं आता है। अत: सत्य शब्द केवल मनुष्य से ही सम्बन्ध रखता है। ईश्वर से नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य की अपेक्षा असत्य होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर होते हैं, वहां संयोग व वियोग अवश्य होता है, परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में संयोग, वियोग नहीं होता है, सदैव संयोग रहता हैं। अत: वास्तविक सत्य तो ऋत सत्य है। हम संसार में जो पदार्थ प्राणियों के कल्याण के लिए ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं, उनके गुण कार्य, स्वभाव सदैव एक रस रहते हैं, वह कभी नहीं बदलते हैं जैसे सूर्य का प्रकाश, चंद्रमा की शीतलता, वायु का प्रवाह, अग्नि की उष्णता, जल की प्राणदायिनी शक्ति, धरती की ऊर्जा शक्ति, फलों में खटास, मिठास उसी के अंदर बीज की उत्पत्ति तथा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय, प्राणियों में उत्पत्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति, शरीर के इंद्रियों के गुण, कार्य कभी नहीं बदलते, प्राणियों का जन्म व मृत्यु नियमानुसार, आत्मा की नित्यता आदि में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अदृश्य रूप से ऋत सत्य व्यवहार कार्य कर रहा है, इसलिए यह गूढ़ रहस्य है। ऋत सत्य द्वारा पदार्थों के गुण हमें सहज में प्राप्त हो रहे हैं, इसलिए उनके प्रति हमारा ध्यान नहीं जाता है। इसलिए जीवनदायिनी पदार्थ ऋत सत्य सदैव हमें प्राप्त हैं वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त है।

सत्य - मानवीय जगत् में व्यावहारिक रूप में जो-जो कर्म किए जाते हैं यदि वह कार्य आदान-प्रदान में सच्चे हैं तो वह सत्य है यदि व्यवहार में छल-कपट है तो असत्य है। मानवीय जगत् में 'कर्म' गुण कर्मानुसार बदलते रहते हैं। यदि मानवीय व्यवहार में प्रत्येक कर्म को सच्चाई से सत्य केआधार पर किए जाए तो शांति बनी रहती है। ईश्वर ने मानव को कर्म करने को स्वतंत्र रखा है और सत्य कर्म और असत्य कर्म मनुष्य के विवेक पर निर्भर होते हैं तथा व्यावहारिक सत्य देश काल परिस्थितिनुसार बदलता रहता है।

जरा गहराई से विचार करें तो संसार में जो हमें दिखता है वह असत्य है और जो नहीं दिखता वही सत्य है। जो चलायमान है वह अस्थिर है, परिवर्तनशील है। वास्तव में वह अचलायमान स्थिर तथा अपरिवर्तनशील तत्व के आधार पर टिका हुआ है। हर गति तथा अगतिशीलता अचल, स्थिर, अपरिवर्तनशील तत्व के कारण टिकी हुई है। जैसे वृक्ष दृश्य है जो बीज अदृश्य है। शरीर दृश्य है तो आत्मा अदृश्य है। इसी प्रकार संसार के प्रत्येक दृश्य परिवर्तनशील हैं और उसके आधार ईश्वर और उसके गुण अपरिवर्तनशील हैं। आईए विचार करते हैं।

आत्मा श्रद्धा का आधार सत्य है - भारतवर्ष का इतिहास बताता है कि महाभारत काल के बाद ईश्वरीय धर्म वेदानुकूल प्राचीन पद्धति के अनुसार सत्य पर आधारित मान्यताओं को सदैव के लिए प्रचारित करने के लिए एक सत्य का मंच आर्य समाज के संस्थापक, एकमात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे। उन्होंने दो कार्य बहुत ही उत्तम सर्वहितकारी किए एक सत्यार्थ मार्ग जानने हेतु अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और दूसरा कार्य मानव जीवन को सुखी व सत्यमार्गी बनाने केलिए संस्कार विधि अर्थात जन्म से मृत्यु तक १६ संस्कारों को करने का विधान किया।

प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्मश्रद्धा या आत्मगौरव की एक तौल होती है, यह तौल क्या है अपनी वाणी, विचार और क्रिया के सत्य-असत्य के विवेचन का वह एक माप है, जिसमें वह अपने सम्बन्ध की मान्यता को स्थिर करता है। मनुष्य जितना सत्य से विमुख होगा उतना ही अपने आप में अश्रद्धालु बनता है। **जिसने सत्य का परित्याग कर दिया समझे उसने अपने लिए सुख का मार्ग अवरुद्ध कर दिया।**

''सत्यमेव जायते नानृतम'' सत्य की जय होती है असत्य की नहीं, सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। आत्मा स्वयं शाश्वत सत्य है। सत्य सरल भी है और स्वाभाविक भी है। यदि तुच्छ अहंकार और स्वार्थमयता को प्रमुख न बनाया जाए तो सत्प तथ्य छिपाने की आवश्यकता ही न पड़े। **सत्य की अभिव्यक्ति से ही जीवन की जटिलता का समाधान हो सकता है।**

आत्मा के ऐश्वर्य और सत्य के शाश्वत स्वरूप को शाश्वत बनाए रखने के लिए, सत्य बोलना, सत्य पर चलना, ऋत सत्य पर आधारित मान्यताओं को मानना ही जीवन का अर्थात् जीव का प्रमुख कृत्य है। **सत्यधारी को ईश्वर को ढूंढने जाने के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं है वह आत्मा में ही ईश्वरीय दर्शन का आनंद लेता है। सत्य जीवन की मधुरता है, जीवन की पूर्णता है।**

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।

हम असत्य को सत्य, अस्थिर परिवर्तनशील को अपरिवर्तनशील, क्षणभंगुर को सनातन और प्रतीतों के प्रति जागे हुए हैं और प्राप्त के प्रति सोए हुए हैं। असत्य के प्रति जागे हुए हैं और सत्य के प्रति सोए हुए हैं। अस्थिर के प्रति जागे हुए हैं और स्थिर के प्रति सोए हुए हैं। जीवन का लक्ष्य सत्य जानना है। हमारा जीवन असत्य में बीत रहा है, हम चारों ओर से असत्य से घिरे हुए हैं, क्योंकि ऋत सत्य सर्वव्यापक है और निकटतम होने के कारण अदृश्य है। सत्य हमारे जन्म से पहले भी था। और हमारी मृत्यु के बाद भी रहेगा, इसलिए हमारी खोज का विषय ऋत सत्य ही होना चाहिए।

सत्य-असत्य के मूलगत भेद क्या हैं? - विश्व ऋत सत्य के आधार

पर टिका है। असत्य वस्तु, असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर उसके तोड़ने वाले तत्व रहते हैं, इसी को अर्न्तद्वन्द कहते हैं। असत्य के पेट में पड़ा जो अंदर का विरोध है, वह सत्य को धीरे-धीरे फोड़ता जाता है और असत्य के भीतर सत्य अपने पैनेपन से उभर आता है, क्योंकि सत्य दुविधा रहित व द्वेष रहित होता है। जहां भीतर सत्य और असत्य होंगे, वहीं तो संघर्ष होगा। हमने जितनी भी संस्थाएं व धर्म संप्रदाय बनाए हैं, उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को ढूंढना है। कोर्ट में वकील सत्य को ढूंढने केलिए ही तो लड़ते हैं। और जज का कार्य सत्य-असत्य को ढूंढ निकालना है, तभी वेदों ने कहा है सारा संसार ऋत् सत्य पर टिका हुआ है।

निष्कर्ष - वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, ब्रह्मण ग्रन्थ तथा जो वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ है, उसमें वर्णित शिक्षा और संसार में सत्यवादी सत्यपथगामी युग पुरूषों ने सत्य को जाना और प्रचार करते-करते अपने जीवनों की आहुति दे दी। यदि संसार के सभी धर्म-संप्रदाय-संगठन सत्य और ऋत सत्य पर व्यावहारिक चलने का आव्हान करे तो, मानव समाज में तमाम अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, उग्रवाद, हिंसा, द्वेष समाप्त हो जाएंगे। जिस दिन हम सत्य और ऋत सत्य को समझ जाएंगे और तदानुकूल व्यवहार करने लगेंगे, बस उसी दिन से हम ईश्वर को समझ सकेंगे और तब हम किसी भी जगह खड़े होंगे तो यही कहेंगे **सत्यमेव जयते नानृतम।**

अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन - हमें क्या करना आवश्यक

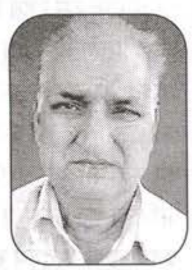

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला - मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७ ९८४१२

श्रीमान सभा प्रधान एवं आर्य परिषद के प्रबुद्ध आर्य (श्रेष्ट) महानुभावों,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - २५ से २८ अक्टूबर-२०१८

विषय : यज्ञ, योग, वैदिक सत्संग और प्रवचन हेतु आव्हान (निमंत्रण)

महोदय, सादर नमस्ते

विनम्र निवेदन है कि समय-समय पर दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, अजमेर या देश के विभिन्न महानगरों में आर्य महासम्मेलन आयोजित समय-समय पर किए जाते रहे हैं, किए जा रहे हैं, किए जावेंगे। खुशी की बात हैं। इनसे जनता में जागृति आती है और विश्व में आर्य वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता है परन्तु कितना? यह एक विचारणीय चिंतन का विषय है। यही कि आर्य समाज विचारधारा वाले ऋषि, तपस्वी, विद्वान और सक्रिय कार्यकर्ता और भक्तगण इकट्ठे होंगे। यज्ञ, हवन, योग, भजन, उपदेश होंगे और समापन होकर खुशी-खुशी लौट जाएंगे। किसी महापुरुष या नेता नायक से उद्घाटन करवायेंगे। वह प्रशंसा कर चला जावेगा। वह भी चाहेगा कि समस्त आयोजक श्रोतागण उसी की पार्टी (सरकार) को समर्थन (वोट) दें। केवल ठकुर सुहाती बातें। आर्य संस्कृति की तरफदारी करने वालों (आयोजकों) को क्या मिला? **वही ढाक के तीन पात। मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा और फेशनेबल प्रगतिशील कही जाने वाली तथाकथित जीवन शैली में जियो, रहो या मरो। इसमें ज्यों-ज्यों दवा की, दर्द बढ़ता गया। यानी दिन-पर-दिन समाज (देश) का चारित्रिक पतन (नैतिक पतन) बढ़ता जा रहा है।** आडम्बर, तांत्रिक पाखण्ड, अंधविश्वास चरम पर है। टी. वी. सिनेमा, कथा-भागवत यो अनेक नये-नये सम्प्रदाय भ्रम फैला कर गुमराह कर रहे हैं। बड़े-बड़े नेता नायक, संत गुरु क्या-क्या गुल खिला रहे हैं, किसी से छिपा नहीं है सभी जानते हैं विस्तार से लिखने की जरूरत नहीं। आज आतंकवाद (बाहरी व भीतरी) कट्टरवाद, हिंसा, आगजनी, तोड़फोड़, जाम, उपद्रव, अपहरण, बलात्कार, हत्या, आम बात हो गई। यहां तक कि सच्चे ईमानदार, त्यागी, राष्ट्रभक्त, नेता-नायक, संत-विद्वानों को भी खदेड़ देने के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। वैदिक संस्कृति पर लार्ड मैकाले के मानस पुत्र (शिष्य) धूल चढ़ा रहे हैं। फिर क्या होगा? मैं निराशावादी सोच (नेगेटिव थिंकिंग) की बात कर रहा हूं, ऐसा आपका सोचना होगा परंतु कटु सत्य है कि दस-बीस प्रतिशत अच्छे विचारों (वैदिक संस्कृति-सभ्यता शिक्षा) वाले लोग अस्सी नब्बे प्रतिशत मैकाले के मानस पुत्रों के आगे क्या कर लेंगे? जब सारे कुऐ में भांग पड़ी है तो शुद्ध पानी कैसे मिलेगा, जब तक कि कुऐ का पूरा पानी बदला न जाय या इसे बंद कर नया शुद्ध पवित्र पानी का जल स्त्रोत चालू न किया जाय। **मैं अल्प बुद्धि छोटा मानस आप जैसे विद्वानों को क्या बता सकु परंतु जब तक विदेशी शिक्षा प्रणाली बंद कर भारतीय आदर्श की वैदिक शिक्षा प्रणाली (संस्कार और सभ्यता युक्त)चालू ना कर दी जावेगीं तब तक कोई भी पार्टी, किसी भी सरकार या कोई भी संस्था देश का भविष्य नहीं बदल सकेगी।** संसद, विधान सभा से लेकर पंचायत तक संविधान की मर्यादा व राष्ट्र की रक्षा जरुरी है। कथनी व करनी सबकी एक हो, नेक हो इसके लिए चरित्र निर्माण सर्वोपरि होता है और किसी का भी चरित्र बनता है, सुशिक्षा और सुसंस्कार से।

अत: मेरा नम्र निवेदन है विज्ञान टेक्नोलॉजी की प्रगतिशील शिक्षा के साथ सबके लिए (गुरु और शिष्य) को प्राथमिक से हाई स्कूल तक संस्कार, शिष्टाचार, सभ्यता, नैतिकता, ईमानदारी का पूर्ण अनुशासन का एक सही पाठ्यक्रम (सिलेबस) अनिवार्य करने का प्रस्ताव केन्द्र व राज्यों की केबिनेट्स में पारित कर लागू करने की स्वीकृति हेतु साग्रह सुझाव/प्रस्ताव/निवेदन किया जावे। मेरा आशय किसी धर्म सम्प्रदाय, मजहब पंथ विशेष के प्रति या विरोध में नहीं है। केवल सुराज/सुशासन/शांति और मानवजाती के सुख-उत्थान हेतु सुझाव है।

उऋण हो गये वे, रह न जायें हम ऋणी

- देवनारायण भारद्वाज -
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ. प्र.)
दूरभाष : ०५७१ - २७४२०६१

भारतीय दर्शन चौरासी लाख योनियों की चर्चा करते हैं। हम लोगों के लिये तो असंख्य ही है, जो धरती, समुद्र एवं आकाश सर्वत्र ही अपना जीवन चक्र पूरा करते हुए जन्मते व मरते रहते हैं। प्राणियों के इस वृहततिवृहत समूह में से एक मनुष्य के अतिरिक्त शेष सभी योनियों की एक ही गति है-आहार, निद्रा, भय, मैथुन अथवा स्वसन्तति प्रजनन। इनमें से कोई भी जीव निरर्थक नहीं है। प्रकृति में इन सभी की प्रभावकारी भूमिका है। गहनता से देखें तो ये सभी प्राणी किसी न किसी रूप में पर्यावरण का शोधन कर मनुष्य की सहायता करते हैं। इतने पर भी मनुष्य इनका सदुपयोग कम दुरुपयोग ही अधिक करता है। प्रकृति एवं प्राणियों का अवांछित असन्तुलित दोहन-हनन करके मनुष्य ने न केवल, इनका अपितु मानव समुदाय का जीना भी दूभर कर दिया है। विज्ञान जिन आविष्कारों का उपहार संसार के कल्याण के लिये देता है, यह स्वार्थी मनुष्य उनका विनाशकारी प्रयोग करके संसार को रण-मरण क्षरण का श्मशान बना देता है। विश्व में आज ७ अरब से अधिक मनुष्य शारीरिक आकार-प्रकार में समान होते हुये भी यदि वास्तव में वे सब मानव होते, तो वेद को कभी नहीं कहना पड़ता - '**मनुर्भव**' (ऋ. १०-५३-६) अर्थात् हे मनुष्य ! तू मननशील मानव बन।

हर दिशा में हर ओर असीम आदमी। फिर भी एकाकी अभिशाप आदमी। धातु का तार, जब उसमें विद्युत प्रवाहित होती है, तो तार नहीं रहता-विद्युत हो जाता है। यही धनात्मक, ऋणात्मक एवं उदासीन विद्युत के तीन तार प्रकाश, ध्वनि, गति के यन्त्र-उपकरण व यान चलाने लगते हैं। विद्युत प्रवाह भंग हुआ, तो रह गये तार के तार, सब बेकार। इसी प्रकार पशु सदृश उत्पन्न मनुष्य में जब '**मननशीलता**' की विद्युत धारा का आवेश होता है, तो वह पशु नहीं रहता है, बन जाता है श्रेष्ठ मानव। विद्युत की भाँति इस '**मननशीलता की द्युति**' का प्रवाह निरन्तर होता रहना चाहिये। वेद ने इस तथ्य की पुष्टि में दृढ़ कथ्य इस प्रकार किया है-

पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्योजनः। जीवं वातँ, सचेमहि।।

- यजुर्वेद ३.५५

भावार्थात्-उत्पादक अन्न, शिक्षा व विद्या को देकर रक्षा करने वाले माता-पिता आचार्य आदि पितरजन पुनः-पुनः धारणावती बुद्धि एवं मननशीलता की शक्ति प्रदान करते हुए समाज में उपकारी दिव्यजनों का निर्माण करें, जिससे सर्वत्र जीवन शक्ति एवं सद्गुणों की सचमुच में वृद्धि होती रहे। मन्त्र-सारांश यह है कि पितरों की शिक्षा के बिना मनुष्यों का जन्म सफल नहीं होता। यन्त्र, उपकरण, यान के संचालन हेतु जिस प्रकार तारों में विद्युत का प्रवाह आवश्यक है. उसी प्रकार मनुष्य की दिव्यता के लिए आवश्यक है-निरन्तर मननशीलता की द्युति का संचार। इस ''**मननशीलता की द्युति**'' की लघु संज्ञा है-ऋण। विद्युत के तीन तारों की भाँति शास्त्रों में यह भी तीन ही हैं-ऋषि ऋण, पितृ ऋण एवं देव ऋण। वेद का संकेत है-

''**एतत् तदाग्ने अनृणो भवानि अहतो पितरौ मया।**'' - यजुर्वेद १९.११

अर्थात्- उपकारी विद्वान पितरों की परम्परागत धारा को भंग न करते हुए योग्य संतान का निर्माण कर पितृगण उऋण हो जाते हैं। इस कथन का स्पष्टीकरण अगले मन्त्र में दृष्टव्य है

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम्।
- ये देवयानाः पितृयाणाश्य लोकाः सर्वान् पथो, अनृणा आक्षियेम।।
(अथर्व० ६.११७.३)

प्रथम लोक बालपन में विद्यार्थी बन विद्याग्रहण करें, द्वितीय लोक युवापन में पुरुषार्थी बन विद्या प्रयोग से धनार्जन कर गृहस्थ, धर्म का पालन करें, साथ ही राष्ट्रोत्थान में स्वयं योग करें तथा इसकी अग्रिम भूमिका हेतु योग्य सन्तान प्रदान करें, और तृतीय लोक वृद्धपन में व्रतार्थी बन जन-कल्याणार्थ समर्पित हो जायें। इस प्रकार ऋषि-पितृ एवं देव ऋण के भार को देवताओं एवं पितरों के मार्गों पर यान-प्रयाण कर उतारते हुए आगे ही आगे बढ़ते रहें। वेदानुसार ''**साधु पुत्रं हिरण्यम्**'' (अथर्व० २०.१२९.५) हमारी सन्तानें स्वर्ण सी ज्योतिर्मय सुशील हों। कैसे हो? वेद ने ही बताया - ''**मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्**'' (ऋ० १०.५३.६) अर्थात् मननशीलता की द्युति धारी मानव ही प्रतिभापूर्ण दिव्य सन्तानों को जन्म देकर कर्तव्य परायण नागरिकों से राष्ट्र को समृद्ध करते हैं।

नदियाँ अपने उद्गम से निरन्तर आगे बढ़ती हैं, विद्युत अपने शक्तिस्त्रोत से निरन्तर बहती है, ऐसे ही मानव की मननशीलता उसे ऋणों का बोध कराती है और इन्हें निरन्तर उतारते रहने की प्रक्रिया ही व्यक्ति परिवार, राष्ट्र एवं विश्व को सुख-शान्ति से समृद्ध करती है। जिन दिनों लेखक इन पक्तियों को अंकित कर रहा है, यह श्रुति-सूत्र-नन्दन द्वारा सरस्वती श्री-शैलजा के रक्षा बन्धन को लाने वाले श्रावणी पर्व का श्रावण मास है। इसी श्रुति-श्रवण से ही भारत में जन्मते है श्रवण कुमार, जो इन्हीं ऋणों को न उतार कर वे माता-पिता को ही उतार देते हैं, और दूर निकलने पर उनका उन्माद उतर जाता है, तो माता-पिता सादर श्रवण-कन्धों पर फिर से चढ़ जाते हैं। तब ही नहीं, यहाँ अब भी ऐसा होता है। जनपद इटावा के ग्राम इन्दिरापुरम के वृद्ध रघुवंशी अपने दत्तक पुत्र से बिछुड़ कर स्मृति खो बैठे। उन्मादित दशा में ३८ वर्ष तक आगरा के मानसिक चिकित्सालय में रहे। इस बीच में उनका वह दत्तक पुत्र विस्थापित होकर सीतापुर पहुँच गया और सेवा निवृत होकर वहीं बस गया। इतने सुदीर्घ अन्तराल के बाद रघुवंशी स्वस्थ हुए और उन्हें पुत्र की याद ने सताया। चिकित्सकों तथा अधिकारियों ने सतर्क प्रयासों से वृद्ध पुत्र व अतिवृद्ध पिता का मिलन हुआ, तो वहाँ पर राम-दशरथ मिलाप के आनन्दोल्लास की वर्षा होती देखी गयी।

किसी शायर ने ठीक ही कहा है ''**हालात न बदलें तो इस बात पर रोना। बदलें तो बदलते हुए हालात पर रोना।।**'' श्रवण-दर्शन-चिन्तन की त्रिवेणी से प्रकट होता है सजीव मनुष्य। माता का संकल्प श्रवण कर हरिश्चन्द्र एवं श्रवण कुमार के नाट्य दर्शन कर तथा संस्कृति का चिन्तन

कर मोहनदास इंग्लेण्ड गये और स्वदेश लौट कर वे महात्मा गाँधी बने। इसी प्रकार पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तथा महर्षि अरविन्द आदि के उदाहरण हमारे सम्मुख हैं। पश्चिमी देशों के साथ अविरल आवागमन व निकट सम्पर्क के कारण हम वहाँ की ऊपरी चमक से आकर्षित होकर अपने आन्तरिक चरित्र को खोते जा रहे हैं। दीर्घ प्रवास, दूर दर्शन एवं दूरभाष ने दुनियों को इतना छोटा कर दिया है कि जो वहाँ घटित होता है, लगता है मानो हमारे पड़ोस में ही हो रहा है। भारत विकास परिषद की बहु संख्य प्रसारित पत्रिका **'नीति'** के प्रबन्ध सम्पादक श्री सुरेश चन्द्र, वयस्वी सहयोग मण्डल के सदस्य प्राचार्य गंगा स्वरूप गोयल तथा आर्य समाज के महोपदेशक आचार्य ज्ञानेश्वर ने क्रमशः कनाडा, आस्ट्रेलिया एवं इंग्लैण्ड के लम्बे प्रवास से लौटकर भारतीयों की आँखें खोल दीं। विवाहित, अविवाहित एवं अवैध सम्बन्धों से उत्पन्न सन्तानों का वहाँ घाल मेल हो रहा है। वहाँ का समाज पितृत्व विहीन होने की ओर अग्रसर है।

मातृत्व स्वाभाविक प्रकृति की देन है। पशु-पक्षियों में इसी की प्रचुरता है। इसके साथ पितृत्व के जुड़े रहने पर ही मानवीय संस्कृति का विकास होता है। अमेरिका में अपने माता-पिता के साथ १९६० में ८०प्रतिशत बच्चे रहते थे, १९९० में यह संख्या ५८ प्रतिशत रह गयी, और अब तो यह आंकड़ा ५०प्रतिशत से नीचे ही खिसकता जा रहा है। ऐसी दशा में वहाँ की नव पीढ़ी उद्दण्ड उच्छृंखल, हिंसक व स्वेच्छाचारी होती चली जा रही है। चल चित्र श्रृंखलाओं से दुष्प्रेरित हमारे यहाँ के युवक व युवा दम्पति अपने माता-पिता आदि से दुर्व्यवहार करने लगे हैं। इसी माह में जब भक्तजन कन्धों पर काँवड़ों को लेकर यात्रा कर रहे थे, कुछ पुत्रों ने यहाँ की रामघाट रोड़ पर अचेतावस्था में अपने वृद्ध पिता को लाकर छोड़ दिया। तीन दिन तक जब वेतन भोगी दायित्वधारियों ने उसकी कोई सुध न ली, तो आखिर यहाँ की लोकप्रिय युवा वाहिनी **'मानव उपकार'** संस्था के श्रवण कुमारों-विष्णु कुमार बन्टी तथा नीरज शर्मा शुभम् आदि ने ही उसका उपचार कराया। अखबारों में पुरातन प्रेरक प्रसंगों को छोड़कर हर पंक्ति राष्ट्र नियन्ताओं के अदूरदर्शी, स्वार्थमूलक घृणास्पद कृत्यों की गाथायें प्रदर्शित करती प्रतीत हो रही हैं। हत्याचार, अत्याचार, बलात्कार और आत्महत्याओं की भरमार से सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच रही है।

इसके कारण का पता होते हुए भी निवारण की ओर प्रबन्धकों का ध्यान नहीं है। **जैसी सुनो कहानी वैसी बनी जवानी, जैसा पियो पानी, वैसी बने वानी, जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन, और जैसी देखे दृष्टि वैसी होवे सृष्टि।** विश्व में बुद्धि का अपार विस्तार हो रहा है, किन्तु उसका गायत्री गुरूमन्त्र के अनुसार परिष्कार नहीं हो रहा है। एक शायर ने इस दशा को यूं व्यक्त किया है-

''लगे जब से बढ़ने कि होशो-खिरद, लगी साथ बढ़ने परेशानियाँ।
बुढ़ापे की दानाई लेकर कोई, बदल दे वो बचपन की नादानियाँ।।''

इन पंक्तियों का हिन्दीकरण यूँ करते हैं-डॉ० त्रिलोक तुलसी- **''लगे जब से बढ़ने बोध और बुद्धि, लगी साथ बढ़ने चिन्ताएँ। बुढ़ापे की बुद्धिमत्ता लेकर कोई, बदल दे वे बचपन की मूर्खताएँ।''** अन्य स्थानों की भांति इस अलीगढ़ महानगर के युवक बड़ी संख्या में भौतिक समृद्ध पश्चिमी देशों में न केवल प्रवास कर हैं, प्रत्युत वहाँ नागरिक ही बन गये हैं। कुछ तो वहीं पद-प्रतिष्ठा-ऐश्वर्य प्राप्त कर लेते हैं, पर इनसे भी अधिक संख्या में वे युवक युवतियाँ है, जो अपनी सन्तानों द्वारा परित्यक्त वृद्धजनों के घर सेवा का कार्य करके धन अर्जन करते हैं। जिन हेय अखाद्य दूषित वस्तुओं को वे भारत में छूना पसन्द नहीं करते हैं, उन्हीं को पकाकर उन बद्धों को खिलाते हैं। अलीगढ़ में भारत विकास परिषद, वयस्वी सहयोग मण्डल तथा ब्रह्म विद्या सत्संग की त्रिवेणी बहाने वाले भगीरथ प्रो० राज कुमार वाष्णेय उपरोक्त सभी परिस्थितियों से सुपरिचित थे। इसीलिये वे अपने ज्येष्ठ पुत्र के सम्पन्न परिवार को अमेरिका से समय-समय पर भारत बुलाकर संस्कारित करते रहते थे, और स्वयं भी लम्बी अवधि वहाँ जाकर बिताते थे, और परिवार ही नहीं प्रवासी भारतियों को भी संस्कारित करते रहते थे। उनके पौत्र लव एवं कुश जब किशोर हुए तो उन्हें यज्ञोपवीत संस्कार के लिए भारत बुलाया गया, जब उन किशारों को बड़े होने पर राष्ट्र स्तरीय उच्च छात्रवृत्तियाँ मिलीं तब भी उन्हें प्रभु कृतज्ञता यज्ञ करके संरकृति का सान्निध्य प्रदान किया गया। वे युवक भी अपने दादी-बाबा व परिवार से दूरसंचार द्वारा सदैव जुडे रहे। इसीलिए यह परिवार अमेरिका में जब दीपावली पर्व मनाता है, तो इसे अनुकरणीय समझकर उनका आस-पास व संस्थान भी इसे मनाने लगते हैं।

अकेला चना भाड़ तो नहीं फोड़ सकता है, पर वह उस भूमि को अवश्य फोड़ सकता है, जिस पर वह भाड़ खड़ा होता है। चना गल-समर्पित होकर अंकुर उपजाता है, जो भूमि को फोड़कर पादप बन जाता है, जिसमें से एक के स्थान पर अनेकानेक चने किसान के हाथ में आ जाते हैं। ऐसे ही प्रोफेसर साहब ने अनेक संस्थाओं को खड़ा कर नगर के आबाल-वृद्धजन एवं दम्पतियों को आधुनिकीकरण, बिना पश्चिमीकरण की उन्नतदिशा की ओर मोड़ दिया। उन्होंने नगर के मेधावी छात्रों के पुरस्कार, निर्धन छात्रों के शुल्क सहकार, निर्धन कन्याओं हेतु शिक्षा स्वास्थ्य एवं विवाह संस्कार के प्रकल्पों को कार्यान्वित किया। राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिताओं द्वारा छात्रों में देश भक्ति संचार, वरिष्ठ नागरिकों की गोष्ठियों व शिविरों द्वारा परोपकार का वातावरण निर्मित कर दिया। सुख सुविधाओं में निमग्न उच्च पदों से सेवा निवृत विभूतियों को उनकी क्षमतानुसार समाजोत्थान के कार्यों में संलग्न कर दिया। कोई लेखक, कोई उपदेशक प्रवक्ता, कोई अर्थ संपोषक, कोई औषधि रहित चिकित्सक, कोई प्रशिक्षक और कोई उत्तम व्यवस्थापक बनकर नये-नये कर्तव्यों का पालन करके, समाज के अभ्युदय का आधार बन गया। स्वयं अपनी धर्मपत्नी नर्वदा देवी को साथ लेकर आर्य समाज के गुरुकुल में पहुँच जाते थे, उनके कनिष्ठ पुत्र प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० प्रवीण अत्यन्त व्यस्त होते थे, तो पुत्रवधू श्रीमती ऋषिमा कार चलाकर ले जाती। यज्ञोपरान्त ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते श्रीमती नर्वदा जी हर बच्चे के पास जाकर उसे दुलारती और बिस्कुट का पैकेट पकड़ा कर आगे बढ़ जातीं और ऋषिभा भी गुरुकुल के लिए दान कर आतीं। हम सभी का मन श्रद्धा में करता नमन-अनुगमन। आपने-अपने कर्तव्य धर्म ऋणों को स्वीकार किया और उन्हें उतार कर उऋण हो गये।

प्रभु वर ! हम लोगों को भी ऋणों के आभास बोध दें तथा इन्हें उतारने का सम्बोध दें, ताकि हम ऋणी लोग भी राष्ट्र उत्थान, समाज-कल्याण के लिए कृत संकल्प होकर उऋण हो सकें ।

आर्य समाज बड़ा बाजार का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बड़ा बाजार (कोलकाता) का वार्षिक चुनाव रविवार दिनांक ११ मार्च, २०१८ को सम्पन्न हुआ।

नव निर्वाचित पदाधिकारी इस प्रकार है :-

प्रधान- श्री दीनदयाल जी गुप्ता, **मंत्री**- श्री आनन्द देव आर्य, **संयुक्त मंत्री**- श्री जोगेन्द्र गुप्ता, **कोषाध्यक्ष**- श्री सज्जन बिन्दल। उपरोक्त जानकारी मंत्री आनन्द देवजी आर्य द्वारा दी गई।

आर्य समाज कोलकाता का वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज कोलकाता की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनांक १५.०७.२०१८ को प्रधान श्री सुरेश चन्द जायसवाल जी की अध्यक्षता में आर्य समाज कोलकाता के सभागार में सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य समाज कोलकाता तथा सम्बन्धित विभागों, ट्रस्टों का वार्षिक विवरण तथा आय-व्यय का लेखा-जोखा सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। वर्ष २०१८-१९ के लिए पदाधिकारियों और अन्तरंग-सभा के सदस्यों का सर्वसम्मति से निर्वाचन निम्न प्रकार संपन्न हुआ :- **प्रधान**- श्री मनीराम आर्य, **उप प्रधान**- श्री सत्यप्रकाश जायसवाल, श्री ध्रुवचन्द जायसवाल, श्री दीपक आर्य, **मन्त्री**- श्री मदन लाल सेठ, **उप मन्त्री**- श्री शिवकुमार जायसवाल, श्री आनन्द प्रकाश गुप्त, श्री विवेक जायसवाल, **कोषाध्यक्ष**- श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, **हिसाब परिक्षक**- श्री विनायक कुमार आर्य, **पुस्तकाध्यक्ष**- श्री सुरेश अग्रवाल, **सह पुस्तकाध्यक्ष**- श्रीमती सुषमा गोयल, श्री सत्येन्द्र जायसवाल, **यज्ञ व्यवस्था**- श्री लक्ष्मीकान्त जायसवाल, श्री सुरेश चन्द जायसवाल, श्री सुदेश कुमार जायसवाल, **अंतरंग सदस्य**- श्री श्रीराम आर्य, श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्री अच्छेलाल सेठ, श्री छोटेलाल सेठ, श्री द्वारका प्रसाद जायसवाल, श्री राजमणि वर्मा, श्री रंजीत झाँ, श्री अमर सिंह सैनी, श्रीमती सन्तोष गोयल, श्रीमती प्रवीणा जायसवाल, **अधिष्ठाता आर्य युवा शाखा**- श्री संजय अग्रहरी, **प्रतिष्ठित सदस्य**- श्री सुधीर पोद्दार, श्री निर्दोष अग्रवाल, पं. योगेश राज उपाध्याय, श्रीमती सुषमा अग्रवाल, श्री नन्दलाल सेठ, श्री अच्छेलाल जायसवाल, **विशेष आमंत्रित सदस्य**- श्री अजय गुप्ता, श्री आशाराम जायसवाल, श्री संतोष सेठ, श्री हीरालाल जायसवाल, श्री जुगल किशोर गोयल, श्री अशोक सिंह, श्री विशाल आर्य, श्री सतीश जायसवाल, **पदेन**- श्री राजीव सरकार (टीचर इंचार्ज) रघुमल आर्य विद्यालय, श्रीमती लिपिका आदित्य (टीचर इंचार्ज) आर्य कन्या महाविद्यालय।

वैदिक संसार की और से सभी सम्माननीय पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

नवोदित वैदिक साहित्यकार ध्यान दें.....

यह देखने में आया है कि नवोदित वैदिक साहित्यकार जो लघु आकार की पुस्तकें, लेखों, भजन, कविताओं, उपदेशों का संग्रह आदि प्रकाशित करवाते हैं उन महानुभावों से विनम्र आग्रह है कि -

❒ प्राय: यह देखने में आया है कि उन्हें पुस्तक प्रकाशन का अनुभव नहीं होता और बाजार में कम्प्यूटर टाइपिंग, प्रिन्टिंग, बाईन्डिंग आदि कार्य में कार्यरत लोगों के द्वारा अधिक मूल्य ले लिया जाने पर ठगे जाते हैं।

❒ उनके द्वारा प्रकाशित प्रतियों की संख्या पाँच सौ और खूब हुआ तो एक हजार छपवाई जाती है जिससे उसका लागत मूल्य बढ़ जाता है, जबकि किसी भी पुस्तक की एक बार में न्यून से न्यून ३००० प्रतियां प्रकाशित करवाने से लागत मूल्य में कमी आती है।

❒ उपर के दोनो कारणों से उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तक का व्यय बढ़ जाता है और पुस्तक का मूल्य कितना होना चाहिए यह भी अनुभव नहीं होता और उत्साह में आकर वे अधिक मूल्य पुस्तक पर चढ़ा देते हैं। जबकि उसी आकार, उतनी ही पृष्ठ संख्या की पुस्तक उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तक से आधे दामों से भी कम मूल्य में मिल जाती है। ऐसा प्राय: देखने में आया है।

❒ जिस कारण से उनकी पुस्तक को प्राप्त करने में सामान्य जनों की रूचि का अभाव देखा जाता है।

❒ पुस्तक प्रकाशित करने के उत्साह में यह भी भूल ही जाते हैं कि इसका वितरण कैसे होगा? वितरण के अभाव में पुस्तकें या तो घर में पड़ी रहती है अथवा थैली में लिए उपरोक्त साहित्यकार महोदय आयोजनों में लोगों के मध्य बांटते रहते हैं, ऐसा प्राय: देखा गया है। अन्यथा उनके संसार से विदा होते ही उनके परिजन रद्दी में बेचकर स्थान भी रिक्त करते हैं और पैसा भी प्राप्त कर दोहरा लाभ कमाते हैं। जिसका स्वाध्याय की दृष्टि से लाभ बहुत कम लोगों को ना के बराबर होता है जबकि वही सामग्री वैदिक संसार में प्रकाशित होने पर हजारों लोग त्वरित लाभान्वित होते है।

अत: सम्माननीय रचनाकार विद्वान महानुभावों से अनुरोध है कि वैदिक संसार आप महानुभावों की सेवा हेतु ही तो प्रकाशित किया जा रहा है यह आपकी भावनाओं-विचारों को लेकर दूरस्थ स्थानों, देश के कई कोनों में पहुंचता है। कहां आप द्वारा प्रकाशित पत्रों की संख्या १००० से ५०० एक बार और कहां वैदिक संसार की प्रतियों की संख्या ३४०० - ४००० प्रति माह जो लगभग २२ राज्यों में प्रेषित होता है और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से दुनिया के कोने-कोने में अपनी उपस्थिति दर्ज करता है अत: आप श्रीमान जनों से निवेदन है कि आपकी भावना-विचार वैदिक संसार में प्रकाशित हो सकते हैं तो पुस्तक प्रकाशित करवाने का विचार त्याग दें और वैदिक संसार को अधिक रुप से सहयोग कर आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करें। अपने स्तर पर जितने सदस्यों को वैदिक संसार से जोड़ सकते हो जोड़िये।

धन्यवाद **सुखदेव शर्मा, प्रकाशक- वैदिक संसार**

धैर्य रखें

- आर्य हरिओम शास्त्री -
वेदयोग गुरुकुल आश्रम
केहलारी, जिला खंडवा (म. प्र)
चलभाष - ९९२६२ ७३४१७, ९८७९१ ८३८३३

धैर्यवान होना एक अच्छा गुण है, लेकिन धैर्य रख पाना सबके लिए संभव नहीं हो पाता है। धैर्य प्रतीक्षा करने की कला है। जो सीमा धैर्य की होती है, वही हमारी उम्मीदों की भी होती है। हम सभी जानते हैं कि कार्य करने की अलग गति होती है और उसका परिणाम पाने की अलग लेकिन इसके मध्य धैर्य की समय सीमा होती है, जिसे पार करना पड़ता है और इस समय सीमा में होती है - उम्मीदें, बेचैनी, जिन्हें धैर्य के साथ सहना होता है। धर्म का प्रथम लक्षण

''धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विधा सत्यं अक्रोधो, दसकं धर्म लक्षणम्।।''

अर्थात् धैर्य रखना बताया है। इसी क्रम में कहा गया -

''धैर्य यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिशिवरं गेहिनी''

अर्थात् जिसका पिता धैर्य, माता क्षमाशीलता हो और शांति चिरकाल तक साथ देने वाली पत्नी हो, उसे कैसा भय? व्यक्ति जब किसी कार्य को हड़बड़ी में करने का प्रयत्न करता है तब वह सत्य एवं वास्तविकता को अनुभव नहीं कर पाता है और बेचैनी में किए गए कार्यों के कारण कई बार उसे निराशा का भी सामना करना पड़ता है। इस दौरान वह ऐसी बातें बोल बैठता है, जो उसे नहीं बोलना चाहिए और ऐसे कार्य भी कर बैठता है, जो उसे नहीं करने चाहिए।

धैर्य न धारण कर पाने के कारण कई बार व्यक्ति के कदम गलत दिशा में मुड़ जाते हैं। ऐसा अक्सर होता है कि हमारा धीरज तब जवाब दे जाता है, जब उसकी हमें सबसे अधिक जरुरत होती है। धैर्य की कमी के कारण ही व्यक्ति के अन्दर हड़बड़ाहट होती है व्यक्ति जैसे ही धैर्य खोता है, वह एक तरफ से सफलता की सम्भावना को नकार बैठता है। सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य को जल्दबाजी न करते हुए धैर्यपूर्वक अपने प्रयासों को करते रहना चाहिए।

धैर्य रखना केवल एक अच्छा गुण ही नहीं है, बल्कि यह एक कौशल भी है। धैर्य को आंग्ल भाषा में '**पेशन्स**' कहते हैं, जिसका अर्थ है- बिना आशा खोए देरी, मुसीबत के क्षणों को स्वीकारने या सहने की क्षमता। **'धैर्य इंतजार करने की क्षमता मात्र नहीं है, बल्कि इस दौरान हम कैसा व्यवहार करते हुए इंतजार करते हैं, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है।'** धैर्य में हमें उचित समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है लेकिन यह जरुरी नहीं है कि प्रतीक्षा के समय कुछ कार्य न किए जाएं। यदि प्रतीक्षा का समय व्यर्थ गंवाया जाएगा तो व्यर्थ समय गुजरने के कारण बेचैनी होना स्वाभाविक है। इसलिए प्रतीक्षा की अवधि में भी हमें स्वयं को किसी न किसी कार्य में लगाना चाहिए और उस समय का सदुपयोग करना चाहिए।

कभी-कभी शरीर में बहुत दर्द होता है, लेकिन जिन्दगी में कुछ अच्छा, होने की आशा उस दर्द को झेलने की ताकत प्रदान करती है। इसलिए धैर्य के अवसर पर व्यक्ति को वे सभी कार्य यथावत् करते रहना चाहिए, जिन्हें वह कर सकता है। हमेशा याद रखों -

''सफलता एक दिन में नहीं मिलती हैं।
लेकिन परिश्रम से सफलता एक दिन जरुर मिलती है।''

ऋण तभी चुकेगा

ऋण तभी चुकेगा, उस ऋषिराज का।
विश्व का गुरु बने, भारत यह आज का।।
वैदिक धर्मी आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था, बतलाता इतिहास हमारा,
इसीलिए पूरे भू-मंडल को सुखी बनाने का, रहता था प्रयास हमारा,
सम्पूर्ण विश्व चारित्रिक शिक्षा पाने के लिए, आता था पास हमारे,
हमारे ही देशवासियों की फूट व अज्ञान के कारण हो गया ह्रास हमारा,
जिससे बने हम गुलाम और **सोने की चिड़िया** भारत में हो रहा, आज अभाव अनाज का।
ऋण तभी चुकेगा........।

स्वराज्य ही सबसे उत्तम होता, सबसे पहले यह पैगाम दिया ऋषिराज ने,
पारस के समान भारत को विश्व का सर्वोत्तम धाम, बताया ऋषिराज ने,
ऋषियों की पुण्य भूमि भारत को करते थे सभी प्रणाम, बताया ऋषिराज ने,
वेदानुकूल, जीवन यापन करना, होता सर्वोत्तम काम, बताया ऋषिराज ने,
अब आर्यो! यही तुम्हारा काम, फैला दो वैदिक धर्म ग्राम-ग्राम, जो था स्वप्न योगीराज का।
ऋण तभी चुकेगा........।

वैदिक धर्म अपनाने से ही भारत बन सकेगा पुनः विश्व गुरु और स्वर्ग धाम,
तब घर-घर होगा मित्र जनों का सम्मान और सन्ध्या करेंगे सुबह और शाम,
देश, धर्म, समाज की सेवा का लेंगे व्रत और स्वार्थ रहित करेंगे सभी काम,
चारों वर्णों, आश्रमों का होगा पूर्णतः पालन करेंगे वेद प्रचार बिना किए आराम,
सभी बनेंगे वेदव्रती **खुशहाल** बनेगी पूरी धरती, और सभी रखेंगे ध्यान परहित के काज का।
ऋण तभी चुकेगा........।

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८०, महात्मा गांधी रोड़, कोलकाता
चलभाष - **९८३०१ ३५७९४**

पवित्र दिन पर यह पाप क्यों

जांगिड कुलभूषण - रामफल सिंह आर्य -
वरि.उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष ०९४१८४७७७१४

विश्व के धरातल पर भारत एक अत्यन्त प्राचीन देश है और उतनी ही पुरानी है इसकी संस्कृति। किसी भी देश की संस्कृति उसके पर्वों में परिलक्षित होती है। जिस देश के जैसे पर्व होते हैं उसी प्रकार की परम्परायें वहां प्रचलित होती है अथवा यूं भी कह सकते हैं कि जैसी परम्परायें होती हैं वैसे ही पर्व मनाये जाते हैं जो लगातार कार्यों में व्यस्त जनमानस के अन्दर एक उत्साह एवं उल्लास की लहर द्वारा उसे पुन: स्फूर्त कर देते हैं। जीवन की इस भाग दौड़ में नीरस हुए मन के अन्दर पर्वों से एक अद्भुत नव उत्साह का उदय होता है।

भारत देश में पर्वों की भरमार है। एक के पश्चात् दूसरा पर्व लगातार आता रहता है और हम जीवन में नित्य नूतनता का अनुभव करते हुए निरन्तर कार्यशील बने रहते हैं। हमारे पूर्वजों ने भली भांति पर्वों के इस महत्व को समझा था अत: एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दिया कि हम आर्य लोग कभी भी जीवन में निराशा का अनुभव नहीं करते थे। कोई भी ऋतु हो कैसा भी समय हो हम निरन्तर नवीनता से भरे रहते हैं और एक प्रेममय मिलन का उल्लासमय वातावरण सदैव बना रहता है। मात्र प्रसन्नता से युक्त समय को ही नहीं अपितु देशभक्त वीरों के समाज एवं मानव कल्याण के महान कार्यों को करते हुए अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले योद्धाओं के परलोक गमन के दिवस को भी यहां पर उनके लिये शोक न मना कर, उनसे अन्यों को भी प्रेरणा मिले इस उद्देश्य से एक पर्व का रूप दे दिया गया। उन महापुरूषों के प्रति हम अपना आदर एवं सत्कार प्रकट करके कृतघ्नता के महापाप से तो मुक्ति पाते ही हैं इसके साथ-साथ उनके उज्जवल जीवन से अनेक गुणों को स्वयं में धारण करने का भी प्रयत्न करते हैं।

> अनेक क्षेत्रों में दीपावली पर्व के अवसर पर **'द्युत'** अर्थात् जुआ खेलने का भी प्रचलन है। मानव जाति के लिये अभिशाप स्वरुप इस खेल के दुष्परिणाम इस विश्वगुरु ने महाभारत के रुप में भोगा है जिसका परिणाम एक हजार वर्षों की दासता है और आज भी यह अपनी रुग्णावस्था से उबर नहीं पा रहा है। सज्जन मनुष्यों को इस और भी ध्यान देना अति आवश्यक है।

भारत क्योंकि एक कृषि प्रधान देश है अत: यहां के अधिकतर पर्व भी हमारी कृषि के कार्य कलापों से जुड़े हुए हैं। पर्वों की इस माला में एक अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण पर्व है **दीपावली या दीवाली** । परन्तु इसका प्राचीन नाम है **शारदीय नवसस्येष्टि'**। क्योंकि हमारे देश में दो फसलें मुख्य रूप से होती हैं आषाढ़ी एवं श्रावणी या सावनी। दोनों फसलों के आगमन पर किसान का मन प्रसन्नता से नाचने लगता है। यह ऐसा अवसर है। जब उसके अनथक श्रम का प्रतिफल मिलने वाला है। शीतोष्ण को सहन करके दिन-रात फसल को बच्चों की भांति पालते हुए आज उसका घर भरने का समय आन पहुंचा है। यह ऐसा शुभ अवसर है जब किसान का अपना पेट पलने के अतिरिक्त पूरा संसार इस अन्न देवता से अपनी उदर पूर्ति कर सकेगा। वास्तव में तो कृषक की समाज यज्ञ में यह ऐसी आहुति है जिस पर न्यौछावर होने को मन करता है। समाज यज्ञ में तो उसने आहुति डाल ही दी है परन्तु बिना अग्नि को भोग लगाये वह भला इस भोग का भक्षण कैसे कर सकता है। इसलिये वह अपना सब नवान्न ले आया अग्नि देवता के समीप और एक-एक करके आहूति डालता चला गया। सब नये अन्न, दलहन एवं तिलहन उसने यज्ञ में डाले और अपने लिये यज्ञशेष रखा। नव सस्येष्टि शब्द ही कह रहा है नव=नयी, सस्य=फसल, अन्न, ईष्टि-यज्ञ। यह था इस पर्व का महत्व। पूरे परिवार, आस पड़ौस, ईष्ट मित्र, सम्बन्धियों को आमन्त्रित करके यज्ञाग्नि में नये अन्न से आहूतियां डाल कर सबके साथ मिलकर अब नृत्य एवं गायन के साथ पूरे उत्साह में भरकर वह मारे प्रसन्नता के फूला नहीं समा रहा। यह थी हमारी मिल बांट कर खाने एवं पर्व मनाने की अति पावन पुनीत परम्परा। **दीपावली के इस पावन पर्व पर आज जो कुप्रथा चल पड़ी है पटाखे चलाने की इसने तो सारे पर्व का स्वरूप ही विकृत कर डाला है। प्रतिवर्ष अरबों खरबों रूपये के पटाखे उस देश में फूंक दिये जाते है जिस देश में ५० प्रतिशत लोगों का जीवन गरीबी रेखा से नीचे है और लगभग २० करोड़ लोग जिसमें प्रतिदिन भूखे पेट सोते हैं।** मात्र इतना ही नहीं, पटाखों के चलने से पूरे देश में आकाश से बारूद युक्त आग बरसती है जिससे भंयकर रूप से वातावरण प्रदूषित होता है अपितु विषैला हो जाता है जिसके कारण दीपावली के उपरान्त रोगों का अम्बार लग जाता है। खांसी, जुकाम, बुखार, एलर्जी, दमा, नेत्र रोग, फेफडों के रोग, हृदय रोग आदि का प्रकोप भरपूर रहता है। इस रात को यदि आप घर से बाहर निकल कर देखें तो पता लगेगा कि प्रदूषण के कारण सांस लेना भी कठिन हो जाता है। मान लिजिये किसी नगर में यदि दस हजार घर भी हैं और एक घर में पांच सौ रूपये के भी पटाखे आते हैं तो कुल मिला कर ५००×१००००=५०,००,०००/- रूपये के पटाखे जल गये। जबकि ५००/- रूपये की यह राशि बहुत कम है। कुछ घर तो ऐसे हैं जिनमें दो से अढाई हजार के पटाखे फूंक देना अति सामान्य सी बात है। अब पूरे देश का

अनुमान आप स्वयं लगा लें। वातावरण के प्रदूषण के साथ-साथ ध्वनी प्रदूषण भी भयंकर रुप से फैलता है। प्रतिवर्ष लगातार कम होती वर्षा इस प्रदुषण के कारण और भी कम होती जाती है। जबकि उगती फसल के लिये इस समय वर्षा की अन्यन्त आवश्यकता होती है। सारा वायुमण्डल बारुद से भर जाने के कारण यदि वर्षा होगी तो वह भी प्रदूषित ही होगी जो जीवनदायी होने के स्थान पर विष का काम करेगी। हमारा वायुमण्डल तो पहले से ही विषैली गैसों के कारण जो कि फैक्टरियों, वाहनों, धूम्रपान, कूड़ा कचरा आदि से निकलती है प्रदूषण स्तर को पार कर चुका है उस पर यह पटाखों का कार्य तो कोढ़ के खाज के समान है। इसका एक और पक्ष भी है। प्रतिवर्ष पटाखों के कारण लगने वाली आग से करोड़ों रुपयों की हानि भी लोग उठाते हैं जिसमें सब कुछ जलकर नष्ट हो जाता है। कितनी दुकानें, कितने घर, कितने खेत खलिहान, कितने जंगल प्रतिवर्ष जलते हैं इसका अनुमान तो आंकड़े एकत्रित करने पर ही हो सकता है। कितने बच्चों के अंग झुलस जाते हैं कितनों की आंखें चली जाती है जो जीवन भर अन्धकार में जीवन यापन करने पर विवश है। फुलझड़ी, अनार आदि के तीव्र प्रकाश से आंखों को कई प्रकार से हानि पहुंचती है और कई बार अन्धेपन की घटना देखी जाती है। कभी आपने अनुमान किया कि पटाखा फैक्टरी जिनका वातावरण दुर्गन्ध एवं सीलन भरा रहता है, उनमें कार्य करने वाले लोगों को असाध्य रोग हो जाते हैं। यद्यपि पटाखों के उपर लिखा रहता है कि इनके बनाने में बाल श्रमिकों से कार्य नहीं किया गया है। परन्तु यह कहने मात्र को है, वास्तव में इन फैक्टरियों में आग लगने की दुर्घटनायें हो जाती है तो मजदूर जीवित ही आलू की तरह भून जाते हैं। कई वर्ष पूर्व हरियाणा प्रान्त के रोहतक में पटाखा फैक्टरी में आग लगने से चालीस व्यक्ति अन्दर ही भस्म हो गये थे।

आश्चर्य है कि इन अनेक कारणों के होते हुए भी हम कभी यह नहीं सोचते कि पटाखों का प्रयोग न करें। पता नहीं क्यों हमने यह वृति बना ली है कि बाजार में चाहे कुछ भी आ जाये हम कभी उसके उचित या अनुचित पर ध्यान नहीं देते बस लकीर के फकीर बन कर अन्धाधुन्ध अपना लेते हैं। **पता नहीं किस मूर्ख के मन में यह पटाखे चलाने का विचार उत्पन्न हुआ होगा और अपनाने वालों ने इसे बिना सोचे समझे अपना लिया होगा। उससे भी अधिक आश्चर्य तो इस बात का है कि कई अरब रूपये के पटाखे उस देश में जलाये जाते हैं। जिस देश में २० करोड़ लोग प्रतिदिन भूखे सोते हैं, रहने को घर नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, करने को कोई काम नहीं ? अब ठण्ड का मौसम आने वाला है, कितनों की सर्दी से मृत्यु हो जाती है। कितने लोग रोगों के होने से दवाईयों के अभाव में प्राण त्याग देते हैं अथवा मृत्यु से भी अधिक भयानक कष्ट भोगते हैं। अब, जब लोगों को रोग होने लगते हैं तो कहते है कि सूखी ठण्ड पड़ रही है, वर्षा होनी चाहिये। अरे भाई वर्षा कहां से होगी आसमान से तो आप आग बरसा रहे हैं, विषैला दुर्गन्धयुक्त धुआं छोड़ रहे है। वर्षा तो यज्ञ से होती है वह भी बिल्कुल शुद्ध. अमृत के समान लाभकारी जिससे जीव एवं वनस्पति जगत दोनों का कल्याण होता है।** लोग मानते हैं कि दीपावली के दिन मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम चन्द जी अपना वनवास पूर्ण करके अयोध्या वापस आये थे तो अयोध्यावासियों ने दीपमाला करके उनका स्वागत किया था। वैसे तो यह विचार ही भ्रान्त है, श्री राम एवं दीपावली को परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु थोड़ी देर के लिये मान भी लें कि श्रीराम के आगमन पर दीपमाला की गई थी उसी का प्रतीक हम आज भी दीपावली का पर्व मनाते हैं तो श्रीराम के आगमन पर पटाखे भी चलाये थे क्या ?

यह एक भयानक समस्या है जो प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है और इसके कारण बढ़ रहे हैं अनेक रोग। ऐसे में हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम जागरूक बनें और वर्तमान की इस समस्या का समाधान करें। लोगों को समझायें कि पटाखों का खेल समाप्त करें। धार्मिक संस्थाओं का भी यह दायित्व है कि अपने लोगों को इस कार्य से रोकें। धार्मिक प्रचारकों को भी इस दिशा में प्रचार करना चाहिये। सरकार भी यदि चाहे तो पटाखों के प्रयोग पर रोक लगा सकती है। प्रदूषण नियन्त्रक बोर्ड को भी इसका कड़ा संज्ञान लेना चाहिये।

कितना अच्छा हो कि पटाखों पर होने वाले व्यय का यदि आधा भाग भी किसी परोपकार के कार्य के लिये, लोगों के कल्याण के लिये, सामूहिक यज्ञादि करने के लिये, असहायों की सहायता के लिये होने लग जाये तो कितना बड़ा कार्य हो सकता है। एक और जनता मंहगाई की मार से संतप्त है तो दूसरी ओर यह व्यर्थ का खर्च। तनिक विचारिये :-

पटाखों से :-

१. न तो कोई लाभ होता है न ही ये किसी के काम आते हैं।

२. ध्वनि एवं वायु प्रदूषण फैलता है।

३. अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

४. धन को सामने रख कर आग लगा दी जाती है।

५. अनेक दुर्घटनायें होती हैं।

६. त्यौहारों का स्वरूप विकृत होता है।

७. जीवनदायिनी वायु अत्यधिक विकृत होती है। तो फिर यह पाप नहीं महापाप हम लोग बिना सोचे विचारे क्यों किये जाते हैं। करने के कार्य और भी बहुत है धन को वहां पर लगाईये।

दीपावली मनाते समय :-

१. सबसे उत्तम ढंग तो यह है कि सामूहिक रूप से विशाल यज्ञ करें जिससे हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर सुरक्षित रहे।

२. शुद्ध घी अथवा सरसों के तेल के दीप जलायें।

व्यंग्य-कथानक

वैतरणी नदी पर पुल बनाने बाबत्

- जांगिड रामचन्द्र आर्य (लाड़वा) -
धारसी खेड़ा, जिला - धार (म. प्र.)
चलभाष - ९८२६५ ५८०९२

यह समस्या मेरी व्यक्तिगत नहीं। पूरे भारत और अन्य राष्ट्रों में रह रहे हिन्दुओं की हैं। करीब सवा अरब लोगों की समस्या है। गरुड़ पुराण के अनुसार मरणोपरान्त वैतरणी नदी को पार करने के लिए गाय की पूंछ की आवश्यकता होती हैं यदि कम खर्चे में काम हो जावे इसके लिए गाय की जगह बछड़े से काम लिया जाय तो भी सम्भव नहीं। बछड़ा इतनी बड़ी देह को पार नहीं करा सकता। यदि गाय को लेवें तो कम से कम दस हजार से कम नहीं लगते। यदि मरने वाले के पुत्रों ने हिम्मत कर भी ली तो एक और समस्या या तो पण्डित गोदान लेने से इन्कार करेगा और राय देगा कि इसकी कीमत ही हमें प्रदान कर दो। घर पक्का बना है इसको कहां बांधेंगे वह देख-रेख कौन करेगा, फिर भी यदि किसी ब्राह्मण ने गो दान स्वीकार कर भी लिया तो भी समस्या वहीं रहेगी क्योंकि ब्राह्मण तो गाय घर ले जाकर बांध देगा और मरने वाले को वैतरणी पार करने के लिए गाय नदी के किनारे चाहिए। ऐसी समस्या से छुटकारा पाने के लिए मेरे मन में विचार आया कि क्यों नहीं सरकार के सामने इस निदान के लिये प्रस्ताव भेजा जाए। चुनाव सर पर है जहां तक मै सोचता हूं बहुत ही जल्दी सरकार इसको मंजूरी दे देगी वो जनता को नाराज कर चुनाव हारना नहीं चाहेगी इससे २०१९ तक पुल बनकर लोकार्पण हो जाएगा और वैतरणी की समस्या सदा के लिए समाप्त हो जावेगी। अब सरकार इसके इंजीनियर को सर्वे के लिए भेजने से पहले हमसे पूछेगी कि यह नदी कहां पर स्थित है, कितनी चौड़ाई, गहरी कितनी है, कितने पाये बनेंगे, सिंगल वे से काम चल जायेगा या कि टू लेन बनाना पड़ेगा। भविष्य में जनसंख्या वृद्धि से पुल संकरा न पड़ जाये। इस सबके लिए इन लुटेरे पण्डितों से पूछना पड़ेगा कि यह नदी किस जगह बह रही है। क्योंकि इन पाखण्डियों को तो इसका अवश्य पता होगा।

प्रतिक्रिया -

आओ ! वैतरणी पर पुल बनाएं......

श्री रामचन्द्र जी द्वारा पोपों द्वारा गपोड़ पुराण के माध्यम से फैलाये गये वैतरणी और स्वर्ग आदि के अन्धविश्वास और पाखण्ड पर कटाक्ष कर यह व्यंग्य लिखा है आप जन सामान्य व्यक्ति है, आपका आर्य समाज तथा वैदिक धर्म से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध-सम्पर्क नहीं है अत्यंत दूरस्थ ग्रामीण अंचल जो कि वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार से शून्य क्षेत्र के निवासी होने तथा गृहस्थी व व्यवसायी होने से आपका धार्मिक विषय से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है इसके उपरांत भी आपने स्वाध्याय तथा अपनी बुद्धि का सदुपयोग करते हुए चिन्तन शीलता का परिचय दिया है। आप वैदिक संसार पत्रिका का स्वाध्याय गहनता से करते हैं। आपने स्वाध्याय तथा चिन्तनशीलता से आगे बढ़कर कलम रूपी तलवार उठाकर अज्ञानता के तिमिर का नाश करने हेतु समाज में वैतरणी के नाम से फैले अन्धविश्वास और पाखण्ड पर प्रहार किया है आपका कदम स्वागत योग्य है। मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ तथा आपका आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने व्यंग्य ही नहीं लिखा वरन् आपने अपने नाम के साथ **'आर्य'** भी लिखा, बहुत सुन्दर आर्य श्रेष्ठता का सूचक है जो गुण-कर्म-स्वभाव में श्रेष्ठ हैं वह आर्य हैं पुन: आपको धन्यवाद प्रत्येक व्यक्ति को रामचन्द्र जी से प्रेरणा लेना चाहिये अपनी बुद्धि का सदुपयोग, चिन्तन करना चाहिये कि उसे क्या करना चाहिये व क्या नहीं करना चाहिये तथा वैदिक शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिये यही मानव धर्म है यही आर्यत्व है और यही मानव जीवन की सार्थकता है।

आइए जाने आखिर यह वैतरणी है क्या? - वैतरणी दो शब्दों से मिलकर बना है **'वै'** अर्थात् निश्चित रुप से, **'तरणी'** अर्थात् जिसे तरना है, पार करना है। अब प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह क्या है जिसे प्रत्येक मानव को निश्चित रुप से तरना है, पार करना है। इसे यूं भी कहें कि हमें मानव जीवन केवल इसी लिए ही प्राप्त हुआ है कि हम निश्चित रूप से उसे तरे, पार करें। प्रश्न यह भी उपस्थित हो रहा है कि आखिर वह है क्या और उसे तरने या पार करने से क्या प्राप्त होगा? तो इसका उत्तर यह है कि **वह संसार है जिसे निश्चित रूप से तरना है, पार करना है और इस संसार के तरने अथवा पार करने से हमें परमपिता परमात्मा के मोक्षान्द की प्राप्ति होगी। इसे यूं भी कह सकते हैं कि हमारे और परमात्मा के मध्य यह संसार रूपी सागर अवरोध बना हुआ है इसे तरे अथवा पार करे बगैर परमात्मा की प्राप्ति सम्भव ही नहीं है। अर्थात् निश्चित रूप से जिसे तरना है यही वैतरणी है।** यह तो वेद का सन्देश है किन्तु कुछ लोगों ने इसे अपने स्वार्थ पूर्ति तथा उदर पूर्ति का माध्यम बना लिया है इसके वह तो दोषी है ही किन्तु वे भी दोषी हैं जो वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय नहीं करते और परमात्मा प्रदत्त मनन शीलता का उपयोग रामचन्द्र जी की तरह नहीं करते। वे ही लोग पोपों के माया जाल में फंसते हैं। **महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में धर्म ज्ञान विहीन, स्वार्थी, झूठे, फरेबी, पाखण्डी लोगों को पोप नाम दिया है।** आइये यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के चौदहवाँ मंत्र और भावार्थ पर दृष्टिपात करें वह क्या कह रहा है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय ँ् सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। यजुर्वेद ४०/१४।।

इस संसार के उस पार जाने के लिए सृष्टि विद्या (अविद्या, भौतिक विज्ञान) का ज्ञान होना आवश्यक है। स्वास्थ्य तथा पदार्थ विज्ञान आदि का ज्ञान तथा समाज धर्म का निर्वाह करते हुए ही हम जीवन यात्रा पूरी कर सकते हैं। धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुषार्थों से संसार सागर से तैर कर मोक्ष पुरुषार्थ की प्राप्ति हेतु अध्यात्म विद्या की आवश्यकता है। विद्या

का अर्थ ज्ञान तो अविद्या का अर्थ कर्म से भी लिया जाता है। कर्म से संसार सागर केवल तैर सकते हैं किन्तु बिना ज्ञान के कर्म करेंगे तो संसार को पार करने की अपेक्षा डूब जाएंगे। ज्ञान और कर्म का समन्वय होगा तो संसार सागर को पार कर अमरत्व का फल चख सकेंगे। इस मंत्र से स्पष्ट हुआ कि संसार रुपी संसार को तरकर उसके दूसरे पार जाना है, डूबना नहीं है।

इस पर पुल बनाने का सुझाव दिया है रामचन्द्र जी ने, बहुत अच्छी बात है। आओ विचार करें क्या इस पर पुल बन सकता है? इस प्रश्न का उत्तर है- हाँ बन सकता है! पुन: प्रश्न उपस्थित हुआ कौन बनाएगा? कैसे बनाएगा? शास्त्रों में लिखी बातें गूढ़ रहस्य लिए होती है उन्हें बुद्धि पूर्वक समझना होता है और शास्त्रों की सभी बातें गलत भी नहीं है। कोई भी अपमिश्रित वस्तु पूरी तरह अनुपयुक्त नहीं होती उसमें कुछ तो अच्छाई भी होती है जैसे सौ प्रतिशत झूठ चल नहीं सकता, झूठ को चलाने के लिए भी सत्य का आश्रय लेना होता है।

शास्त्रों में गाय की पूंछ पकड़ कर वैतरणी को पार करना लिखा है। वैतरणी पर हमने विचार कर लिया कि जिसे निश्चित रुप से तरना है का नाम वैतरणी है। किसे तरना है वह भी विचार कर लिया कि संसार रुपी सागर को तरना है। आइये अब विचार करें **'गाय की पूंछ'** से कैसे तरें?

यह संसार और शरीर प्रकृति तत्व से परमपिता परमात्मा ने जीवात्माओं के कल्याण के लिए साधन रूप में बनाया है। इस शरीर में जो पाँच ज्ञानेन्द्रियां तथा पाँच कर्मेन्द्रियां हैं इनके सम्बन्ध मन से है, इनके बगैर मन निष्क्रिय है इन इन्द्रियों को शास्त्रों में **'गो'** कहा गया है पूंछ पकड़ने से अभिप्राय: इनको नियंत्रण में करना है, **जिसने इन्द्रियों रूपी गौओं की पूंछ पकड़ ली अर्थात् नियन्त्रण में कर लिया उसका मन स्वत: नियन्त्रण में हो जाएगा। लो हो गया पुल तैयार अब संसार सागर मैं डूबने का भय समाप्त हो अब निश्चिन्तता से पार हो जाओगे। यह पुल कोई और नहीं बना सकता स्वयं ही बनाना होगा।**

गाय की पूंछ पकड़ने का दूसरा अभिप्राय है - गाय नाम संज्ञक है धर्म का अर्थात् जिसने धर्म रूपी गाय की पूंछ पकड़ ली वह इस संसार सागर में डूबेगा नहीं, धर्म परिचायक है ज्ञान का, ज्ञान परिचायक है चेतनता, त्याग, तप, जीवंतता, परोपकार आदि-आदि धार्मिकता का। जहां धर्म नहीं वहां अधर्म होगा। अधर्म परिचायक है जड़ता, भोग, आलस्य प्रमाद, स्वार्थ आदि-आदि अधार्मिकता का। गाय का विपरीतार्थी शब्द है भैंस। गाय पानी में बैठती नहीं उसे पार कर जाती है, चंचल-स्फूर्त होती है जबकि भैंस पानी में रम जाती है, बैठ जाती है। मुहावरा भी है **'भैंस के आगे बीन बजाने से कोई लाभ नहीं'** इस प्राणी में जड़ता अधिक है आलस्य प्रमाद है, निष्क्रियता है, भोग है इसी कारण यह नहीं कहा कि भैंस की पूंछ पकड़ लो तर जाओगे। क्योंकि इसका विश्वास नहीं, कब पानी में बैठ जाए अधर्म संज्ञक है। वैसे देखा जाए तो गाय की अपेक्षा इसका मूल्य अधिक होता है किंतु इसकी पूजा कोई नहीं करता, जबकि गाय की पूजा होती है। पूजा का अर्थ सम्मान है। सम्मान उसी का किया जाता है जो गुणकारी हो, लाभकारी हो। छोटा बच्चा भी गाय को देख प्रसन्न हो जाता है और भैंस को देख डर जाता है, जबकि गाय के मारने का खतरा होता है और भैंस से यह भय नहीं होता। इतना सब कुछ होते हुऐ भी गाय की प्रशंसा सब करते हैं, भैंस की कभी प्रशंसा नहीं सुनी। भैंस के विषय में अनेक मुहावरे हैं जैसे **'अक्ल बड़ी या भैंस'** अब बताइए यहां अक्ल को बड़ा बताने के लिए भैंस का आश्रय लिया गया जबकि भैंस से भी बड़ा प्राणी हाथी है किन्तु उसका उपयोग नहीं किया गया। अत: गाय रूपी धर्म की पूंछ पकड़ लो हो गया संसार सागर को पार करने का प्रबन्ध। अब आपके संसार रूपी सागर में डूबने का भय समाप्त। बन गया ना पुल, कौन बनाएगा यह धर्म रूपी पुल? स्वयं को बनाना होगा। पण्डित जी को गाय, धन आदि दान देने से धर्म सिद्ध होगा, देना चाहिए किन्तु पण्डित जी को, पोप को नहीं। **महर्षि दयानन्द सरस्वती पण्डित की परिभाषा लिखते हैं जो वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता हो जितेन्द्रिय हो, धार्मिक, परोपकारी, निराभिमानी, निर्लेपी हो।**

- सुखदेव शर्मा, प्रकाशक- वैदिक संसार

स्वाभिमान कैसा हो?

स्वाभिमान का अर्थ है स्वयं का मान, प्रतिष्ठा, गौरव एवं प्रतिबद्धता और यह मानव को प्राप्त होता है स्वयं की ऐषणाओं को नियंत्रित रखते हुए, त्यागमय जीवन शैली से। स्वाभिमानी व्यक्ति का जीवन दूसरों के लिए प्रेरणीय होता है तथा उन्हें श्रेष्ठ कार्य के लिए प्रवृत्त करता है। महाराजा भृतहरि ने नीतिशतक में स्वाभिमान की भी तीन श्रेणियों का वर्णन किया गया है। मानव अपनी-अपनी प्रवृत्ति अनुसार स्वामिभक्त का आचरण करता है। श्लोक में बताया गया है-

तांगूल चालन मधश्चरणवपांत भूमौ निपत्य वदनोदर दर्शनं च।
इवा पिण्डदस्य कुरुते गज पुंगवस्तु धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुंक्ते।।

स्वाभिमान की तीन श्रेणियां हैं अधम, मध्यम और उत्तम।

अधम सबसे निम्न श्रेणी होती है। ऐसे व्यक्ति की प्रवृत्ति कुत्ते के समान होती जैसे कुत्ते को मारने और दुत्कारे जाने पर भी खिलाने वाले के आगे दुम हिलाता है। उसके पैरों को चाटता है और पृथ्वी पर लेटकर अपना पेट दिखाता है अर्थात् विभिन्न तरीके से चापलूसी करता है। दूसरी मध्यम श्रेणी का व्यक्ति मारने, दुत्कारने, फटकारने पर रुष्ट तथा नाराज होने का दिखावा करता है। कुछ नाराज भी दिखई देता है, परन्तु मनाने पर तुरन्त मान भी जाता है। तीसरी श्रेणी उत्तम व्यक्ति में स्वाभिमान हाथी के समान होता है। न वह दुम हिलाता है न वह मान मनुहार से मानता है। वह अपनी मर्जी का मालिक होता है। वह बार-बार आग्रह करने के बाद भी आसानी से भोजन को मुंह नहीं लगाता। वह बड़ी गम्भीरता से अपने स्वामी या भोजन देने वाले को देखता है, शान्त खड़ा रहता है, बहुत देर बाद भी मान गुहार के बाद ही भोजन ग्रहण करता है। संसार में तीसरी प्रकार के स्वाभिमानी व्यक्ति का जीवन ही श्रेष्ठ माना जाता है।

जांगिड गौरव - **देशराज आर्य** -
प्रधान - आर्य समाज रेवाड़ी हरि.
चलभाष - ९४१६३३७६०९

आरक्षण का भूत

- स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती -
बी/५४, तेजेन्द्र नगर-७, त्रागड़ रोड़
चाँद चोड़ा - अहमदाबाद
चलभाष : ८१५५०५५२६०

प्राचीन काल में मनु महाराज ने गुण, कर्म, स्वभाव और शिक्षा के आधार पर मनुष्यों का वर्गीकरण किया था। सब से प्राचीन सब से सुन्दर यदि कोई शासन व्यवस्था यानी संविधान है तो वह मनु महाराज की **'मनु स्मृति'** ही है। इससे उत्तम कोई सामाजिक एवं राष्ट्रीय व्यवस्था हो ही नहीं सकती। जिसमें से एक है - वर्ण व्यवस्था तथा दूसरी है- आश्रम व्यवस्था। यहां पर हम केवल वर्ण व्यवस्था पर विचार करेंगे।

वे चार वर्ण (वर्ग) निम्न है :

१. ब्राह्मण वर्ग अर्थात् शिक्षक समुदाय।
२. क्षत्रीय वर्ग अर्थात् रक्षक समुदाय।
३. वैश्य वर्ग अर्थात् कृषक एवं पशुपालन समुदाय।
४. शूद्र वर्ग अर्थात् अशिक्षित एवं अल्पशिक्षित समुदाय।

उपरोक्त मान्यता तत्कालीन समस्त विश्व में मान्य थी। उपरोक्त की विवेचना अर्थात् स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है।

अलग-अलग समुदाय की गुण, कर्म, स्वभाव एवं शिक्षा अनुसार व्याख्या

१. ब्राह्मण :- अर्थात् विद्वान वह होता है जो ज्ञानवान, अध्ययनशील और सभी को विद्या दान करने में हमेशा प्रयत्नशील और तत्पर रहें। अर्थात् अज्ञान के अन्धेरे को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश करें। वही व्यक्ति ब्राह्मण कहलाने का हक रखता है। ब्राह्मण एक पदवी होती न कि जाति। वर्तमान समय में जो व्यक्ति शिक्षा एवं साहित्त्य जगत् से जुड़े हुये हैं, अर्थात् जो ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं, वही ब्राह्मण कहलाने का हक रखते हैं, अन्य कोई नहीं। वर्तमान में वह व्यक्ति चाहे किसी भी जाति से सम्बन्ध रखता हो वह ब्राह्मण अर्थात् विद्वान ही कहा जाएगा।

वर्तमान में भी जो शिक्षा और साहित्य से जुड़े हुए व्यक्ति हैं, उन्हें ही ब्राह्मण कहलाने का हक है अन्य किसी को नहीं, चाहे वे वर्तमान की किसी भी जाति या सम्प्रदाय से क्यों ना जुड़े हो। अर्थात् शिक्षा लेना और देना एक कार्य हो गया। अर्थात् यह ब्राह्मण एक पदवी होती है न की जाति।

२. क्षत्रीय :- अर्थात् जो व्यक्ति शरीर से स्वस्थ और शक्तिशाली हो, तथा बुद्धि से प्रशासनिक क्षमता रखता हो, जो प्रजा की भलाई के लिये राजा अथवा देश की सीमाओं की रक्षा और आन्तरिक व्यवस्था बनाए रखने में सक्षम हो, उसे ही क्षत्रीय कहलाने का हक है अन्य किसी को नहीं। यह भी एक पदवी होती है। वर्तमान में भी जो व्यक्ति सीमाओं की रक्षा तथा आन्तरिक व्यवस्था बनाए रखने का कार्य कर रहे हैं तथा प्रशासनिक कार्यो में सहयोग कर रहे हैं वह सभी क्षत्रीय वर्ण में आते हैं। वर्तमान में वह चाहे किसी भी जाति तथा सम्प्रदाय से जुड़े हुए क्यों ना हों। यह दूसरा कार्य हो गया। अर्थात् यह क्षत्रीय भी एक पदवी होती है न कि जाति। गुजरात में इन दिनों नवोदित राजनैतिक नेता हार्दिक पटेल, अल्पेश ठाकुर, जिग्नेश मेवाणी आदि तीनों महानुभावों की वर्तमान जाति भले ही कुछ भी क्यों ना हो, मगर लेखक उन्हें क्षत्रीय वर्ण में मानता है। अब श्री जगजीवन राम जी को, श्रीमती मायावती को, श्री जिग्नेश मेवाणी आदि जो अपने आप को दलित नेता कहते हैं, लेखक उन्हें मनुस्मृति के आधार पर क्षत्रीय वर्ण में मानता है। ऐसी ही विभिन्न वर्तमान जातियों के नेतागण जो चाहे अवर्ण हो या सवर्ण हो वह सभी मनुस्मृति के अनुसार क्षत्रीय वर्ण में ही माने जायेंगे, क्योंकि आज वे राज कार्य के प्रशासनिक कार्यों में लगे हुये हैं। अब ये लोग केवल दलित नेता नहीं रह गये। क्योंकि दलित तो वह होता है, जो अभाव में अपना जीवन व्यतीत करता है, वह चाहे वर्तमान की किसी भी जाति से सम्बन्ध क्यों न रखना हो, लेकिन **आज यह अपने आप को तथाकथित दलित नेता कहलाने वाले लाखों में नहीं करोड़ों में खेल रहे हैं।** आज इनके पास में सभी साधन उपलब्ध हैं जो शायद किसी साधन सम्पन्न व्यक्ति के पास भी शायद ही होंगे।

३. वैश्य :- अर्थात् जिस व्यक्ति में ब्राह्मण के समान बुद्धि विशेष न हो, शरीर से भी शक्तिशाली न हो, तो ऐसा वर्ग परिवार, समाज तथा देश के भरण, पोषण का कार्य करने की जवाबदारी अपने सिर पर ले लेते हैं। अर्थात् अन्न, जल, दूध, दही आदि का उत्पादन का उत्तर दायित्व उनका ही होता है और इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिये पशुपालन तथा खेती-बाड़ी का कार्य करते हैं। वर्तमान में वे चाहे किसी भी जाति या सम्प्रदाय से सम्बन्ध क्यों नहीं रखते हो। ऐसे समुदाय को एक प्रकार से कृषक भी कहा जा सकता है। यह भी एक प्रकार की पदवी ही हो गई। यह तीसरा कार्य हो गया। अर्थात् यह वैश्य भी एक प्रकार की पदवी हो गई।

४. शूद्र :- वर्तमान में शूद्र शब्द का बड़ा ही विभत्स अर्थ कुछ स्वार्थी तत्वों ने तथा राजनेताओं ने अपने राजनैतिक स्वार्थों को सिद्ध करने के लिये ऐसा किया है कि समाज के इस अंग को अन्य वर्गों से पृथक कर दिया है या मान लिया है जो गलत है। यथार्थ में ऐसा नहीं है। शूद्र अर्थात् अशिक्षित या अल्पशिक्षित होता है, चाहे वह व्यक्ति किसी भी प्रकार से अशिक्षित क्यों ना रह गया हो। क्योंकि वे उपरोक्त तीनों कार्य करने में असमर्थ हैं, इसलिये उनको परिवार, समाज तथा देश के कार्यों में उपरोक्त कार्य वर्णों का सहयोग करने की स्वत: ही जवाबदारी आ जाती है। जो अल्पशिक्षित हैं यानी कुछ पढ़े-लिखे तो है मगर अधिक नहीं ऐसे व्यक्ति अकुशल श्रमिक का काम करते हैं, बाकी जो पूर्ण रुप से अशिक्षित हैं वह तो श्रमिक अर्थात् सहयोग का कार्य करते करेंगे ही अन्य कोई विकल्प उनके पास होता ही नहीं है। क्योंकि उनके पास अन्य कार्यों को करने के लिये, बुद्धि तथा शारीरिक क्षमता एवं शिक्षा होती ही नहीं है। ऐसे व्यक्ति कॉलेज में शिक्षा देने का कार्य तो कर नहीं सकते, न ही वे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर,

प्रशासनिक अधिकारी ही बन सकते हैं। जब तक कि उपरोक्त कार्यों की शिक्षा प्राप्त नहीं कर लेते। आज के तथाकथित दलित राजनेता किसी अशिक्षित व्यक्ति से कॉलेजों में प्रोफेसरी अर्थात् शिक्षा का कार्य करा के दिखादे तो यह लेखक मनुस्मृति को मानने से इन्कार कर देगा। वर्तमान में भी ऐसा ही हो रहा है। ऐसे व्यक्ति वर्तमान में भले ही किसी जाति या सम्प्रदाय से सम्बन्ध क्यों न रखते हो वे शूद्र वर्ण ही माने जाएंगे। क्योंकि वे कोई अन्य वर्णका कार्य कर ही नहीं सकते। उपरोक्त सेवा कार्य ऐसे व्यक्ति कल भी कर रहे थे, आज भी कर रहे हैं, आगे भी करते रहेंगे, यदि शिक्षित नहीं हुये तो। आज के तथाकथित नेता गण ऐसे समुदाय को जातियों के नाम पर भड़का कर, अपनी-अपनी राजनीतिक रोटियां पका रहे हैं। इन अग्रणियों को तो ऐसे अशिक्षित समुदाय को शिक्षित करने का कार्य करना चाहिये, ताकि ऐसा अशिक्षित समुदाय शिक्षित होकर अन्य उपयोगी कार्य करें। ऐसे अशिक्षित समुदाय को योग्यता ना होने पर भी उच्च कार्य करने के लिये आरक्षण की मांग करना एक प्रकार से अयोग्य के लिये दया की याचना करने के समान है। जैसे कि ऊँट के लिये हाथी के समान दातों की लगाने की इच्छा करना। ऐसे अनुचित प्रयास मनुष्य जाति के लिये तथा राष्ट्र के लिये भविष्य में घातक सिद्ध होंगे। यह एक प्रकार का चौथा कार्य हो गया। अर्थात् यह भी एक प्रकार की पदवी हो गई।

नोट :- प्राचीन काल में जैसे उपरोक्त वर्ण व्यवस्था होती थी उसी प्रकार देश को चलाने की समानान्तर व्यवस्था आज भी है। ऐसी सुन्दर व्यवस्था में परिवर्तन सम्भव नहीं है। उपरोक्त प्रकार से वर्णों का जो क्रम दिया है कि **ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र वैसे ही क्रम वर्तमान में भी हैं।**

१. ब्राह्मण अर्थात् प्रथम श्रेणी अधिकारी

२. क्षत्रीय अर्थात् द्वितीय श्रेणी अधिकारी

३. वैश्य अर्थात् तृतीय श्रेणी अधिकारी। पर्यवेक्षक, कारीगर एवं कृषक

४. शूद्र अर्थात् चतुर्थ श्रेणी वर्ग । जो उपरोक्त वर्गों की सहायता करता आया है, और सृष्टि पर्यन्त करता रहेगा।

वर्तमान में जो लोग इन पदों पर कार्य कर रहे हैं, वे चाहे वर्तमान में किसी भी जाति या सम्प्रदाय से सम्बन्ध क्यों ना रखते हो, मगर वे सभी उपरोक्त कार्यों को ही करते हैं। उन सभी विद्वानों से लेखक का विशेष अनुरोध है कि यदि वे कोई उपरोक्त के अतिरिक्त कोई भी पाँचवां कार्य ढूंढकर बता दे तो लेखक उन सज्जनों का आभारी होगा। अर्थात् पाँचवां कार्य कोई बचता ही नहीं है। उपरोक्त को लेखक एक उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न करता है।

उदाहरण :- एक पिता यानी (समाज) के चार पुत्र थे। उनमें से बड़ा पुत्र बुद्धि विशेष अर्थात् कुशाग्र बुद्धि था। उसमें ज्ञान प्राप्त करने की लगन थी, तथा उस ज्ञान को बांटने की उसमें चाह थी। उसने कहा कि पिताजी आप चिन्ता ना करें, मैं अपने परिवार, समाज तथा देश को शिक्षित करता रहूंगा, यह जवाबदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ। यहां यह पहला एक कार्य पूरा हो गया।

दूसरा पुत्र शरीर से थोड़ा स्वस्थ अर्थात् शक्तिशाली था। उसने कहा कि पिताजी आप चिन्ता ना करें, मैं अपने परिवार, समाज तथा देश की सीमाओं की बाहरी शक्तियों से रक्षा करता रहूंगा और परिवार, समाज तथा देश की आन्तरिक व्यवस्था यानी अनुशासन भी बनाए रखूंगा। हमारी उपरोक्त सीमाओं की तरफ कोई आँख उठाकर भी देखेगा तो मैं उसकी आँखें फोड़ दूंगा। यहाँ यह दूसरा कार्य हो गया।

तीसरे पुत्र ने कहा कि पिताजी मेरे पास बड़े भाई जैसी कुशाग्र बुद्धि नहीं है, जो ज्ञान प्राप्त कर सभी को ज्ञान बांट सकूं और मैं न ही मझले भाई के समान मेरे पास शारीरिक शक्ति ही है। तो उन जैसा कोई भी कार्य में नहीं कर सकता हूँ। लेकिन मैं अपने परिवार, समाज तथा देश के भरण-पोषण की जवाबदारी निभाने का भरपूर प्रयत्न करूंगा। यहां यह तीसरा कार्य पूरा हो गया।

चौथे पुत्र ने कहा कि पिताजी मेरे पास उपरोक्त प्रकार कुशाग्र बुद्धि, मझले भाई के समान शारीरिक शक्ति तथा खेती-बाड़ी करने पशु पालन एवं व्यवसाय करने की मेरी क्षमता नहीं है। मगर मैं उपरोक्त तीनों भाइयों के कार्यों में सहयोग अवश्य करता रहूंगा अर्थात् मजदूरी का जो भी कार्य होगा वह मैं बखूबी करता रहूंगा। यहां यह चौथा कार्य भी हो गया। अब कोई पांचवा कार्य बचा ही नहीं।

उपरोक्त प्रकार से चारों भाइयों ने अपने अपने कार्य सुगमता से बांट लिये। अब देखिये कि चारों भाई एक साथ रहते हैं, माँ सभी को एक समान भोजन देती है। माता-पिता सभी को एक समान लाड प्यार करते हैं। किसी में भी कोई भी किसी भी प्रकार का कोई भी भेदभाव, छुआछूत नहीं। देखो कैसे सुन्दर व्यवस्था मनु महाराज ने दी है। मगर उपरोक्त प्रकार की सुन्दर व्यवस्था महाभारत के युद्ध के पश्चात् चूर-चूर हो गई। चारों तरफ अन्धकार ने डेरा डाल दिया। जहां कि पूरा विश्व एक चक्रवर्ती राजा के अधीन था वहीं विश्व खण्ड-खण्ड होकर बिखर गया। अपना आर्यवर्त देश भी अलग-अलग रियासतों में विभक्त हो गया। आश्रम तथा वर्ण व्यवस्था समाप्त हो गई। जातियों और उप जातियों ने जड़े जमा ली। छुआछूत और भेद-भाव भी पनपने लगे। अर्थात् परिवार, समाज तथा देश में फूट पड़ना शुरू हो गई। यह फूट का लाभ विदेशी आक्रमणकारियों ने उठाया। देश पर आक्रमण होने लगे। अन्त में देश गुलामी की जन्जीरों में जकड़ गया।

वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण जब तक नहीं हो सकता था जब तक कि वह समुचित विद्या प्राप्त नहीं कर लेता और ब्राह्मण पिता के समान गुण, कर्म, स्वभाव को प्राप्त नहीं कर लेता। यही व्यवस्था अन्य वर्णों के साथ भी थी कि जो जिस काम को नहीं जानता तब तक उसे वह पदवी नहीं दी जाती थी। जन्म से ही कोई ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य तथा शूद्र नहीं होता था। सभी के ज्ञान, गुण, कर्म स्वभाव को देखकर ही उपरोक्त पदवियाँ दी जाती थी। वैसे आज भी वही व्यवस्था है, मगर समझने के लिये हम ज्ञान की आंखें ही खो बैठे हैं। क्या हम डॉक्टर के पुत्र को डाक्टर मान सकते हैं? जब तक कि वह डॉक्टर पुत्र अध्ययन करके डॉक्टर की डिग्री प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह डॉक्टर नहीं कहलाया जा सकता। इसी प्रकार इंजीनियर, वकील आदि के पुत्रों के साथ भी ऐसा ही होगा। इसी प्रकार से क्या मन्त्री का पुत्र मन्त्री कहला सकता है? इसी प्रकार शूद्र का पुत्र भी शूद्र नहीं कहा

जा सकता, यदि वह विद्वान है तो। आज किसी ब्राह्मण का पुत्र मजूरी या कृषक का कार्य करता है तो वह भी ब्राह्मण कहलाने का हक नहीं रखता। आज वर्तमान में वर्ण नहीं जन्म से जातीयाँ मान ली गई हैं, चाहे भले ही शूद्र का पुत्र ब्राह्मण का कार्य कर रहा हो उसे शूद्र ही कहा जाता है और भले ही ब्राह्मण का अशिक्षित गंवार पुत्र मजूरी, कारीगरी आदि सेवा का कार्य कर रहा हो तो भी वह ब्राह्मण ही कहलायेगा। यह प्रथा अनुचित है। उपरोक्त का ही प्रभाव है कि समाज, देश जातियों-उपजातियों में बंट कर खण्ड-खण्ड हो गया। यह सब महाभारत के युद्ध के पश्चात् अज्ञानता के कारण ही हुआ।

आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व आर्यों में आई अज्ञानता के कारण, मूर्तिपूजक जैन सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ, ठीक इसी प्रकार लगभग इसी काल में बौद्ध सम्प्रदाय का भी उदय हुआ। ये दोनों वेदों को नहीं मानते थे, इनको वेदों के मानने वालों ने नास्तिक की संज्ञा दी। आगे चलकर जैन सम्प्रदाय के दो भाग हो गये, एक हुआ श्वेताम्बर और दूसरा हुआ दिगम्बर। इसी प्रकार बौद्ध सम्प्रदाय में भी कई भाग हो गये।

आज से लगभग २००० वर्ष पूर्व ईसाई मत का जन्म हुआ, ये सम्प्रदाय भी दो भागों में बट कर रह गया, एक कैथोलिक और दूसरा प्रोटेस्ट। आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व अरब प्रदेश में इस्लाम सम्प्रदाय का उदय हुआ। इस सम्प्रदाय के पहले दो भाग हुये। एक सुन्नी और दूसरा शिया। इनमें भी पुन: चार भाग हो गये शेख, सैयद, मुगल और पठान।

इसी प्रकार कालान्तर में मुगल सम्राटों के अत्याचारों से परेशान होकर गुरूनानक देव ने एक सिख सम्प्रदाय को जन्म दिया। समयान्तर से यह मत भी दो भागों में बट गया। एक हुआ अकाली और दूसरा हुआ निरंकारी। अत: इस प्रकार समाज की टूटन चालू ही रही एक में से अनेक डालियां फूटती ही गई। अज्ञान और स्वार्थवश समाज टूट कर बिखर गया। इस टूटन का सबसे पहले लाभ मुसलमानों ने लिया। तत्पश्चात् अंग्रेजों ने लिया कि फूट डालो और राज करो, वैसे फूट तो पहले से ही पड़ी हुई थी। अपना आर्यावर्त्त देश लगभग १००० वर्ष तक गुलामी की जन्जीरों में जकड़ा रहा।

रही सही कसर भारत की स्वतन्त्रता पश्चात् इन धूर्त राजनेताओं ने पूरी कर दी। पहले भारत के तीन टुकड़े हुये, एक पश्चिमी पाकिस्तान, दूसरा पूर्वी पाकिस्तान, तीसरा भारत। चौथा टुकड़ा भी अलग हो जायगा यदि इसी प्रकार का राजनेताओं का यही हाल रहा तो।

समस्त विश्व में पहले ही एक धर्म था जिसे वैदिक धर्म कहते थे। जो वेदों पर आधारित था, जिसे आर्य लोग मानते थे। अज्ञानी इतिहासकारों ने या यों कहें कि मुगल शासक और अंग्रेज हुकूमत ने मिलकर हमारे इतिहास को बदल दिया। अर्थात् भारत में रहने वाले जनमानस को यह कह कर दो भागों में बांट दिया कि आर्य तो बाहर से आए थे, और यहां के मूल निवासी तो द्रविड़ हैं, अर्थात् भारत में रहने वाले आर्यजाति को दो भागों में बांट दिया, एक भाग तो आर्य कहलाया जो उत्तर भारत में रहता है तथा दूसरा भाग द्रविड़ कहलाने लगा जो दक्षिण भारत में बसता है। इसी प्रकार कालान्तर में आर्यों के भी दो भाग कर दिये गये। एक भाग कहलाया आर्य तथा दूसरा भाग कहलाया हिन्दू। यह हिन्दू शब्द कहां से आया इस बात को आर्य विचारधारा वाले सभी सज्जन व्यक्ति भली प्रकार जानते हैं।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के इन धूर्त नेताओं ने अंग्रेजों से फूट डालो और राज करो वाली नीति को अपना लिया। पुन: फिर भारतीय समाज के दो टुकड़े कर दिये। एक बहुसंख्यक और दूसरा अल्पसंख्यक। तत्पश्चात् जो बहुसंख्यक थे उनके पुन: दो टुकड़े कर दिये गये। एक भाग कहलाया सवर्ण, दूसरा कहलाया अवर्ण अर्थात् अगड़े और पिछड़े, फलित और दलित। आगे वनवासी और आदिवासी। दलितों के भी दो भाग कर दिए गए पिछड़े और दूसरे अति पिछड़े।

दलितों की भी अनेकानेक जाति, उपजातियां उभरकर सामने आ गई। जैसे सफाई कामदार, चर्मकार। इनमें भी अनेकानेक क्षेत्र, स्थान के नाम से अनेक टुकड़े देखने में आये। एक वर्ग ओबीसी के नाम से जाना जाने लगा।

क्षत्रियों तथा वैश्यों का भी यही हाल हो गया। इनमें भी गोत्रों के तथा स्थानों के नामों से टुकड़े पर टुकड़े होते चले गये। क्षत्रियों के राजपूत, जाट, गुर्जर, मीणा आदि अनेक टुकड़े हो गये। वैश्यों का भी हाल यही हो गया इनमें भी कम से कम तीन टुकड़े हुये। पहला अग्रवाल, दूसरा गुप्ता, तीसरा विश्नोई आदि अनेक भाग हो गये।

ब्राह्मण वर्ग भी क्यों इस बीमारी से अछूता रहने वाला था। इस वर्ण में भी या खुद पाण्डे में भी पाण्डे वाली कहावत चरितार्थ हो गई। वर्ण व्यवस्था जैसी सुन्दर व्यवस्था को इन दुष्ट राज नेताओं ने अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति तथा वोट बैंक की राजनीति और फूट डालो राज करो के सिद्धांत को ध्यान में रखकर देश, समाज तथा परिवारों को खण्ड-खण्ड कर दिया।

अब हम मूल विषय पर आते हैं कि उपरोक्त खण्ड-खण्ड समाजों का एक-एक अन्धों में काना राजा बन बैठा। जो अपनी प्रजा को सुख सुविधा दिलाने के लिये, तथा अन्य सामान दिलाने के लिये, सरकार से दो-दो हाथ करने लगा। जनबल, बाहुबल और हठबल से सरकारों को झुकाने के लिये मजबूर करने लगा और लाभ उठाने लगा और अन्य समाज पिछड़ता गया। फिर उस पिछड़े समाज का कोई फिर राजा बन बैठा और वही कार्य करने लगा जो पहले वाले करते चले गए थे और यही क्रम आज तक चालू है। जिन्हें हम पन्चायत सदस्य, सरपन्च, नगर पालिका सदस्य, नगर पालिका अध्यक्ष, आगे चलकर वह ही विधानसभा का एम.एल.ए., मन्त्री तथा मुख्य मन्त्री बन बैठा और अपने ढ़ंग से देश की सम्पत्ति की लूट-खसोट कर अपनी तिजोरियां भरने लगा। इस प्रक्रिया का यही अन्त नहीं हुआ, इनमें से ही आगे चलकर, एम.पी., मन्त्री, राज्यपाल, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति बनते चले गये। भारतीय संविधान में इसे लोकशाही का नाम दिया गया है, मगर लेखक इसे लूटशाही मानता है। पहले एक रियासत का एक ही राजा हुआ करता था और अब तो एक-एक विधानसभाओं में तथा लोकसभा में हजारों राजा बैठे हैं। इस प्रकार गरीब और गरीब होता चला गया और अमीर और अमीर होता चला गया, अर्थात् गरीबी अमीरी की

खाई दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली गई। इस खाई को विस्तार देने का अगर कोई जवाबदार है तो केवल और केवल दुष्ट राजनेता ही हैं। वैसे इन में भी अपवाद हो सकता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान में केवल दस वर्ष के लिये ही आरक्षण का प्रावधान किया गया था जिसे जगजीवन राम जैसे नेताओं ने इस आरक्षण को चॉकलेट बना दी। जो हनुमान जी की पूंछ की तरह बढ़ती ही चली जा रही है, जो कम होने का नाम ही नहीं लेती है। फिर मायावती जैसी अध कचरी नेता ने आरक्षण का झण्डा अपने हाथ में ले लिया। जिसने नारा दिया कि तिलक, तराजू और तलवार इनके मारो जूते चार और मनु महाराज को पानी पी-पी कर गालियाँ देने लगी। इस प्रकार का नारा देने वाले अपने स्वार्थवश यह भूल जाते हैं, कि जब देश, समाज में से ज्ञान, शक्ति, सीमाओं की रक्षा शक्ति, अन्य उत्पादन शक्ति ही समाप्त हो जाएगी तो ऐसे नेताओं की भी समाज को आवश्यकता ही क्या रह जायेगी। ऐसे ही एक तथाकथित नेता जिग्नेश मेवानी का जन्म गुजरात प्रान्त में कांग्रेस के एम.एल.ए. के रूप में हो गया है। जो मनु स्मृति और भारतीय संविधान को एक ही तराजू में तोलने का प्रयत्न कर रहा है और डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के नाम की दुहाई दे रहा है, क्यों कि सबसे पहले बाबा साहब ने ही मनुस्मृति का अपमान किया था। फिर मायावती ने किया कि मनुवादियों को जूते मारो चार। इसके बाद जे.एन.यू. के छात्रों ने भी अपमान किया, यदि इन सभी ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया होता और इस भाषा के माध्यम से मनुस्मृति का अध्ययन किया होता तो मनुस्मृति का अपमान नहीं किया होता क्यों कि मनुस्मृति में दलित (शूद्र) विरोधी कुछ भी नहीं है। मनुस्मृति जैसी उत्तम पुस्तक मानव समाज के लिये रचा गया संविधान रूपी ग्रन्थ है जिसकी ना समझी के कारण अपमान किया गया है, जो नहीं होना चाहिये था। बाबा साहब का सभी भारतीय सम्मान करते हैं, वे किसी एक जाति या समाज के नहीं हैं। जैसे भारतीय संविधान सभी का है, वैसे ही बाबा साहब भी सभी के हैं। बाबा साहब के ऊपर जब एक ही समुदाय अपना एकाधिकार मानने लगेगा तो वह दिन दूर नहीं, जब अन्य समुदाय उनसे दूर हटता चला जाएगा। इस पर भी दलित नेताओं को विचार करना आवश्यक है। लेखक बाबा साहब को भी मनुस्मृति के आधार पर क्षत्रीय वर्ण में स्वीकार करता है।

पूनः अवर्ण तथा सवर्ण के टुकड़े दर टुकड़े होते चले जा रहे हैं और प्रत्येक टुकड़ा अपने लिये आरक्षण की मांग कर रहा है। अब एक वर्ग और उदय हो गया है जिसे अपन्ग वर्ग कहते हैं। वह भी आरक्षण मांगता है, और मिल भी गया। परमात्मा ने उसे अपने कर्मों का फल भोगने के लिये दन्ड दिया और सरकार ने उन्हें दिव्यान्ग तथा सर्वान्ग बना दिया। अब परिवारों की एक इकाई के रूप में पति पत्नी के बीच में भी आरक्षण की खाई बनती जा रही है, कि महिलाओं को भी ३३ प्रतिशत का आरक्षण मिलना ही चाहिये। ये राज नेता यह क्यों भूल जाते हैं कि सरकार के पास इतनी नौकरियां है ही कहाँ जिन्हें आरक्षण के अनुसार वितरण किया जा सके। योग्यता के आधार पर ही नौकरियाँ मिलनी चाहिए तब ही देश, समाज तथा परिवार उन्नति कर पायेंगे न की आरक्षण के आधार पर। देश के संविधान के रक्षक सुप्रीम कोर्ट में खण्ड-खण्ड हुये समाज को ले भागू नेताओं द्वारा सरकारों पर दबाव देकर कानून बनावाये गए तो सुप्रीम कोर्ट ने *५० प्रतिशत तक का आरक्षण मान्य कर दिया।*

अब ऊँट भी कहने लगे हैं कि हमारे भी हाथी जैसे दांत होने चाहिये। अरे ऊँट भाइयों पहले यह तो सोचो कि तुम्हारे में और हाथी के शरीर में कितना बड़ा अन्तर है। वैसे यदि देखा जाय तो परमात्मा ने सब कुछ तुम्हारी आवश्यकता के अनुरूप सब कुछ दिया है, फिर क्यों हाथ पैर मारते हो। ये नेता लोग अपने जन बल के आधार पर लोक सभा तथा विधान सभाओं में पहुंचकर, केवल अपने समुदाय के हित की ही बात करते हैं। देशहित की कोई बात ही नहीं करता है। यदि कोई देश हित की बात करता है, तो उसे बहुमत के आधार पर गिरा दिया जाता है। यही हाल ईमानदार अधिकारियों का होता है।

इसी प्रकार भ्रष्टाचार का जन्म होता है। आज जिसको दलित वर्ग कहा जाता है, वह आज सवर्ण से भी ढाई हाथ आगे है। फिर भी उसे आरक्षण चाहिए? मायावती और उस जैसे अनेकों नेता तथा उनके परिवार आज करोड़ों में खेलते हैं। फिर भी ऐसे लोग अपने आप को दलित का बेटा, बेटी कहते हैं यह कैसी संविधान की व्यवस्थाये हैं। ऐसे लोग देश को अन्धा बना कर ब्लैक मेलिंग कर रहे हैं। वैसे लेखक सही में उन दलितों का विरोधी नहीं जिनके पास कुछ भी नहीं है। मगर इन जैसे सवर्ण भी बहुत हैं जिनके पास कुछ भी नहीं है।

अब तक तो सरकारी नौकरियों में आरक्षण की मांग थी, मगर अब तो प्राइवेट संस्थानों में भी आरक्षण की माँग उठने लगी है। बिहार के मुख्यमंत्री जी ने इस बात के पक्ष में अपना बयान भी जारी कर दिया, मायावती तो पहले से ही इसके पक्ष में है। सरकारी क्षेत्रों में आरक्षण पर आए कर्मचारी कुछ काम तो जानते ही नहीं, वे अपना काम सवर्ण जाने योग्य कामदारों से ही कराते हैं, यानी जो काम जानते हैं। क्योंकि सवर्ण ८० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर किसी पद पर आया है, जबकि आरक्षण प्राप्त उम्मीदवार केवल ३० प्रतिशत अंक प्राप्त करके ही उस पद पर सरलता से पहुंच गया है। विद्वता में तो अन्तर आना स्वाभाविक होगा ही। आने वाले समय में न तो योग्य डॉक्टर, न योग्य इंजीनियर, न योग्य वकील और न ही योग्य प्रशासक ही मिलेंगे। यहां ३० प्रतिशत अंक और कहां ८० प्रतिशत अंकों का एक बहुत बड़ा अन्तर होता है। तो आरक्षण पर आये डॉक्टर मरीजों को मारेंगे ही, इसी प्रकार से आए हुए इंजीनियर पूलों को और इमारतों को तोड़ेंगे। इसी प्रकार से आए प्रशासक अज्ञानता वश गलत फैसले ले कर विदेशियों को आमंत्रित कर के देश को मारेंगे अर्थात् देश पुनः गुलाम बनेगा। अर्थात् कुल मिलाकर देश तथा देशवासियों का सत्यानाश होगा। देश में भ्रष्टाचार की जननी आरक्षण ही है, गुजरात चुनावों में इस का नंगा नाच अभी देखने में आया था। और रही सही कसर अब तक भी जारी है। अर्थात् देश में से जब तक आरक्षण नाम का भूत समाप्त नहीं होगा, तब तक देश का सर्वांगीण विकास नहीं होगा।

दलित की शिकायत पर फौरन गिरफ्तारी

एससी-एसटी संशोधन बिल राज्यसभा में पास, सुप्रीम कोर्ट का फैसला पलटा

- अमर उजाला १०.०८.२०१८

प्रतिक्रिया

१) सर्वोच्च न्यायालय का महत्वपूर्ण निर्णय पलटना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण एवं निन्दनीय कार्य है।

२) इसकी जितनी आलोचना की जाए, उतनी कम है।

३) जब १९८५ में शाहबानो मुकदमें का निर्णय राजीव की कांग्रेस सरकार ने तुष्टिकरण के चलते पलटा था तो उसकी कटु निन्दा ३३ वर्षों से भाजपा लगातार करती रहती है।

४) यह शर्म का विषय है कि जो गलती कांग्रेस ने १९८५ में की थी ठीक वही गलती भाजपा ने २०१८ में तुष्टिकरण के चलते की है।

५) अब बुद्धिजीवियों - राष्ट्रवादियों और सावरकरवादियों - वकीलों - पूर्व न्यायाधीशों को भी भाजपा के इस गलत कार्य की निन्दा करते रहना चाहिए। सवर्णों के नेता मौन क्यों हैं?

६) भाजपा बार-बार कहती है कि रामजन्म भूमि पर सर्वोच्च न्यायालय जो भी निर्णय दे, उसे सभी पक्ष स्वीकार करें।

७) यदि निर्णय मुस्लिमों के विरुद्ध आया तो उनके नेता भाजपा से कहेंगे जिस प्रकार दलितों का निर्णय, भाजपा ने पलटा है उसी प्रकार मन्दिर का निर्णय भी, पलटो तब भाजपा किस मुंह से कहेगी कि सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अन्तिम होता है जिसे मानना चाहिए। उसे खुद ही कहने में शर्म आएगी।

क्या बांग्ला देशी घुसपैठियों (मुस्लिमों) की संख्या दो करोड़ तक है?

- पूर्वी बंगाल और असम का सिलहट जिला १९४७ में पूर्वी पाकिस्तान बना जिसमें मुस्लिम ७० प्रतिशत थे। १९७१ में यह बांग्लादेश बना क्योंकि मुस्लिमों ने उर्दू को अपनाने से इन्कार कर दिया था।
- मुस्लिम परिवारों में ६-६, ८-८ बच्चे होना आम बात है। ये गरीब बेशक होते हैं लेकिन बड़े परिवारों के अभी भी समर्थक हैं।
- वीर सावरकर ने पचास के दशक में चेतावनी दी थी कि मुस्लिम बंगाली, काम की तलाश में, असम में जाते हैं। मजदूरी कम लेने पर काम मिल जाता है और खाली जमीनों पर झुग्गी डालकर सपरिवार बस जाते हैं।
- असम की उदारवादी कांग्रेस सरकारों ने वीर सावरकर की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। घुसपैठिए पश्चिम बंगाल- बिहार में भी बसने लगे। अब तो दिल्ली-मुंबई तक ये बस चुके हैं।
- स्वार्थी नेताओं ने इनके राशन कार्ड-वोटर कार्ड और आधार कार्ड तक बनवा दिए।
- नब्बे के दशक में असमी युवाओं में जागृति आई किंतु केन्द्र की कांग्रेस सरकार ने आवश्यक सहयोग नहीं दिया।
- भाजपा घुसपैठियों की बढ़ती संख्या पर समय-समय पर चिन्ता प्रकट करती रही।
- कुछ वर्षों पूर्व सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर बनाने का निर्णय हुआ। सर्वप्रथम असम में रजिस्टर बन रहा है। मोटे अनुमान के अनुसार ३५-४० लाख बांग्लादेशी अवैध रुप से रह रहे हैं जिसमें मुस्लिम घुसपैठिए और हिन्दू शरणार्थी हैं।
- असम सरकार इन्हें अभारतीय घोषित करके इन्हें द्वितीय श्रेणी का नागरिक घोषित करने के पक्ष में है जिन्हें वोट के अधिकार तथा अन्य सुविधाओं से वंचित होना पड़ेगा।
- पश्चिम बंगाल की ममता सरकार इन्हें गोरखा पहाड़ी क्षेत्रों में बचाने के पक्ष में है और पश्चिम बंगाल में गणना करने के पक्ष में भी नहीं है ताकि उनका वोट बैंक कम ना हो जाए और वह सत्ता में बनी रहे।
- प्रधानमंत्री मोदी भी सख्त कार्रवाई के पक्ष में वक्तव्य नहीं दे रहे हैं।
- भाजपा अध्यक्ष बधाई के पात्र हैं जिन्होंने स्पष्ट कहा कि पूरे भारत से घुसपैठियों को निकाला जाएगा लेकिन हिंदू शरणार्थियों को सताया नहीं जाएगा बल्कि उन्हें यही रखा जाएगा।
- नेशनल कांफ्रेंस के पूर्व अध्यक्ष फारूक ने कहा है कि बंगाली मुस्लिमों को भी यहीं रहने दिया जाए क्योंकि हम उदार हैं और उसे रहने देते हैं जिससे कहीं जगह ना मिली हो।
- हमारी सोच है कि जब घुसपैटियों की जबरन वापसी हुई तो बांग्लादेश के उग्रवादी निर्दोष हिन्दुओं को भारत आने के लिए बाध्य कर देंगे जिसके लिए हम तैयार रहें।

- सतीश चन्द्र गोयल-
वित्त मन्त्री- सावरकरवाद प्रचार सभा
आदर्श नगर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

सुनील कुमार आर्य
महामन्त्री- सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्द शहर (उ.प्र.)
चलभाष - ८००६६८५९८०

इन्द्रदेव गुलाटी
सन्सथापक- सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्द शहर (उ.प्र.)
चलभाष -८९५८७७८४४३

गुरूकुल केहलारी में ब्रह्मचारियों के मध्य हमने मनाया श्रावणी उपाकर्म पर्व

हमने देखा दिवंगत आत्माओं के परिजनों के भावनात्मक सम्बन्धों का दोहन और अन्धविश्वास तथा अन्धश्रद्धा एवं आध्यात्मीक अज्ञानता का साम्राज्य

विगत अगस्त माह अंक के पृष्ठ ३४ पर प्रकाशित लगभग ६५०० किलोमीटर की यात्रा का परिभ्रमण २० अगस्त को सम्पन्न हुआ था। दिनांक २० से २४ अगस्त तक अगस्त माह की पत्रिका का कार्य सम्पादित किया। पूर्व योजनानुसार सपरिवार श्रावणी उपाकर्म पर्व वेदयोग महाविद्यालय (गुरूकुल) में सम्पन्न किया जाना था। गुरूकुल के संस्थापक संचालक आचार्य सर्वेश जी से स्वीकृति प्राप्त हो गई थी।

दिनांक २५ अगस्त को प्रात: १० बजे के लगभग मैं, मेरी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा, ज्येष्ठ सुपुत्र नीलेश शर्मा, पुत्रवधु रश्मि शर्मा, ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती जयश्री शर्मा, सुपुत्र प्रितेश शर्मा, नितिन शर्मा, पुत्रवधु श्रीमती प्रियंका शर्मा, कनिष्ठ सुपुत्र गजेश शास्त्री, कनिष्ठ सुपुत्री कु. भाग्यश्री शर्मा, सुपौत्री कु. स्वस्ति, कु. वैदिका, सुपौत्र चि. वैदिक तथा दोहित्र चि. आदित्य शर्मा के साथ हम सभी ने दो चार पहिया वाहनों से इन्दौर से लगभग १४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित गुरूकुल के लिए प्रस्थान किया।

खरगोन जिले के बड़वाह तहसील मुख्यालय के समीप पूर्व से पश्चिम दिशा को सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के मध्य कल-कल कर बहने वाली पावन सरिता नर्मदा के तट पर रूके। छोटे बच्चों ने डुबकियां लगाई और चल दिए इन्दिरा सागर की ओर। नर्मदा नगर के समीप नर्मदा नदी पर इन्दिरा सागर परियोजना मध्यप्रदेश शासन की विद्युत उत्पादन तथा वृहद सिंचाई परियोजना है। लगभग चार बजे पहुँचकर सबसे पहले हमने बांध के सामने बने सेतु से बांध का विहंगम दृश्य देखा। पश्चात् जलाशय में स्नान हेतु उपयुक्त स्थान पर जाकर सभी ने स्नान किया। बच्चों ने जलक्रिड़ा का भरपूर लाभ उठाया क्योंकि हमारे अतिरिक्त और कोई भी वहां उपस्थित नहीं था। यहां से निवृत हो जलाशय के तट पर बान्ध के समीप पर्यटकों के अवलोकनार्थ बने स्थानों पर घर से लाया हुआ भोजन किया। पश्चात् यहां से लगभग ३५ किलोमीटर दुरी पर स्थित गुरूकुल की ओर चल दिये। लगभग रात्रि आठ बजे गुरूकुल पहुंचकर संध्योपासना, भोजन, शयन किया। गुरूकुल पहुंचने पर आत्मीय अभिनन्दन आचार्य जी तथा ब्रह्मचारियों व उपाध्याय गणों द्वारा किया गया। दिनांक २६ अगस्त को प्रात: चार बजे गुरूकुल की जागरण के घण्टी अपने नियमानुसार बज उठी। शौचादि से निवृत्त हो भ्रमण, स्नानादि से निवृत हो संध्योपासना तथा व्यायाम आदि किया। प्रात: आठ बजे आचार्य सर्वेश जी की गरिमामयी उपस्थिति एवं ब्रह्मत्व में शास्त्रीद्वय गौरव जी, हरिओम जी, शेखर जी तथा सोहन जी आदि के द्वारा वृहद देवयज्ञ तथा श्रावणी उपाकर्म के मन्त्रों की विशेष आहुतियां प्रदान करते हुए श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न करवाया। आचार्य जी के प्रवचन तथा मेरा उद्‌बोधन हुआ। शेखर जी शास्त्री, हरिओम जी शास्त्री, श्रीमती जयश्री शर्मा, नितिन शर्मा ने भी अपने विचार रखे। ब्रह्मचारी आर्यसुमन ने **''जीवन है इक रेल, इसे खिलौना समझ मत खेल''** का बहुत ही प्रेरणादाई भजन सुनाया। ब्रह्मचारियों ने हमारे पहुंचने से हर्षोल्लास का वातावरण था। अधिकांश ब्रह्मचारी नूतन प्रवेश किए हुए थे गुरूकुल में उनका प्रथम रक्षाबंधन था। इस कारण हमारे पहूँचने से पूर्व वे कुछ-कुछ अनमने-उदास से थे किन्तु दूसरे दिवस समस्त परिजनों के साथ ऐसे घुल-मिल गये जैसे उनके परिजन ही आ गए हो। आज पर्व विशेष का भोजन खीर आदि बना था सभी ने प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण किया पश्चात् आचार्यजी की धर्मपत्नी श्रीमती गीता जी सुपुत्री श्रुति तथा मेरे परिवार के सभी महिलाओं ने परस्पर आचार्य जी, मुझे तथा शास्त्री बंधुओं व समस्त ब्रह्मचारियों को राखी बान्धी। इस तरह श्रावणी उपाकर्म के साथ प्रचलित रक्षाबन्धन का निर्वाह कर ब्रह्मचारियों के होठों पर प्रसन्नता बिखेरने का छोटा सा प्रयास कर हम गुरूकुल से भावभीनी विदाई ले कर चल दिये। मध्यप्रदेश शासन द्वारा इन्दिरा सागर जलाशय के छोर पर विकसित किये गये **'पर्यटन स्थल'** तथा **'जल महोत्सव'** के लिए सुविख्यात **'हनुमंत्या'** की ओर। हनुमंत्या में लगभग दो घण्टे परिवारजनों ने भरपूर आनन्द लिया और सायंकाल ६ बजे हमने इन्दौर की और प्रस्थान किया। घर पहुंचकर संध्या मन्त्र पाठ शयन किया। लगभग ३०० किलोमीटर की यात्रा का समापन हुआ।

दिनांक २७ अगस्त को मेरे साले जगदीश शर्मा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अंजू शर्मा तथा मेरी साली श्रीमती नर्मदा शर्मा के साथ पधार गये। दिनांक २८ अगस्त को आप लोगों के साथ मैं और मेरी धर्मपत्नी ने इन्दौर से जोधपुर के मध्य चलने वाली रेल से प्रात: ६ बजे मकराना, जिला-नागौर के लिए प्रस्थान किया। रात्रि ८ बजे मकराना रेल स्थानक पर उतरकर बेसरोली के लिये प्रस्थान किया जहां पर मेरे साढू सत्यप्रेमजी की माताजी का देहावसान के उपलक्ष्य में भजन संध्या तथा पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कार्यक्रम आयोजित था। साढू के घर पहुँचकर संध्योपासना पश्चात् भोजन किया। रात्रि को भजन संध्या में चार वेद, छ: शास्त्र का शब्द भी सुनाई दिया, आत्मा की नित्यता, मानव जीवन की नश्वरता कर्मफल, पुनर्जन्म और परमपिता की महत्ता के भी अच्छे सन्देश सुनाई दिये। आर्यावर्त जम्बू द्वीप, भरतखण्ड भी सुनाई दिया किन्तु अच्छी तरह यह अनुभूत किया कि सब मनोरंजन तक ही सीमित था न तो आयोजनकर्ताओं, न गाने वालों और न सुनने वालों के जीवन व्यवहार में उन बातों तथा भजनों का कोई स्थान था। सम्पूर्ण रात्रि जो परमात्मा ने विश्राम के लिये बनाई है को जागकर खूब बीड़ी-सिगरेट फूंकी गई तथा पेट भर चाय पी गई और तम्बाखू खाई गई और ध्वनि विस्तारक यन्त्र पर

ध्वनि प्रदूषण पैदा कर भरपेट स्वयं के स्वास्थ्य को तो हानि पहुंचाई गई और दूसरे सज्जन लोगों के भी स्वास्थ्य से खिलवाड़ किया गया। सुबह सब बराबर ऐसा प्रतीत हुआ कि वे बातें मात्र सुनने-सुनाने के लिए ही थी। दिवंगत आत्मा के नाम पर अन्धविश्वास- पाखण्ड का नंगा नाच। शास्त्रोक्त ज्ञान तो छोड़िए लेशमात्र भी परमपिता परमात्मा प्रदत्त बुद्धि का सदुपयोग नहीं। और तो और पढ़े-लिखे और अनपढ़ इस विषय में सब बराबर उपस्थिति भारी संख्या में जन समुदाय किन्तु अधर्म के विरूद्ध आवाज उठाने वाला कोई नहीं, ऐसा लगता था जैसे सभी ने अपनी बुद्धि को अन्ध आस्था की अन्धेरी कोठरी में बन्द कर ताला लगाकर चाबी कहीं फेंक दी हो। हमारी आत्मा ने हमें धीक्कारा-झंझोड़ा कि हम कुछ परमात्मा की वाणी वेद के ज्ञान को इनके सम्मुख परोसे किन्तु हमारी इच्छा पूर्ति नहीं हुई। थक हारकर उस धुम्रपान के विषैले वायुमण्डल से मुक्त हो रात्रि २ बजे छत पर जाकर शयन किया।

दिनांक २९ अगस्त को चार बजे निद्रा देवी को विदाकर नित्य कर्म से निवृत्त हो संध्योपासना-व्यायाम आदि किया। देवयज्ञ करने की भावना लेकर साढू से वार्ता की तो आपने असमर्थता जताई क्योंकि वे लोग तो पोपजी के शिकंजे में बुरी तरह जकड़े हुए थे। पोप जी की लीलाओं के पहले हम जैसे अज्ञानी लोग देवयज्ञ उस घर में कैसे कर सकते है? अत: हमारी व्यवस्था उनके परिचित श्री गिरधारीलाल जी के यहां पर करवाई। श्री गिरधारीलाल जी के निवास पर जाकर श्री गिरधारीलाल के मुख्य यजमान में तथा श्री रामकुमार जी जांगिड सूरत निवासी और हम सभी ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। परिवार की उपस्थित अन्य महिलाओं को देवयज्ञ की महत्ता तथा पंच महायज्ञ के विषय में विस्तार से बताया। श्री गिरधारीलाल जी को वैदिक धर्म सिद्धान्तों के जानने-समझने की प्रेरणा दी आपको वैदिक संसार का त्रैवार्षिक सदस्य बनाया।

श्री भंवरलाल जी जांगिड के निवास पर भेंट करने गये साथ में मेरे साढू के फूफाजी श्री मोहनलाल जी शर्मा बडू वाले तथा अन्य तीन-चार सदस्य और थे वहां पर विस्तार से वार्ता हुई आप सभी को वैदिक सिद्धान्तानुसार जन्म-मृत्यु, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि विषयक प्रेरणा दी। बिल्लू निवासी श्री ओमप्रकाशजी वैदिक संसार के पूर्व से आजीवन सदस्य से विस्तार से महासभा तथा अन्य विषयों पर वार्ता हुई। संकेत रूप में साढू के बड़े जीजाजी श्री धनराज जी तथा छोटे भाई श्री योगराज जी जो शिक्षक हैं को भी संदेश दिया। दु:खद विषय तो यह था कि हम आने वाली भावी पीढ़ी को अन्धविश्वास, पाखण्ड के गर्त में धकेल रहे हैं। एक तरफ तो हम उन्हें उच्च शिक्षा हेतु लाखों रूपए व्यय कर रहे हैं और दूसरी और बुद्धि-तर्क विहिन इन रूढ़ियों के जाल में उन्हें फंसा रहे हैं। भोजन आदि से निवृत हो बेसरोली से प्रस्थान कर चार पहिया वाहन से मेरी ससुराल प्रेमपुरा, तहसील-कुचामन हम सभी पहुँचे। वहां सभी का कुशल क्षेम जाना संध्योपासना पश्चात् भोजन-शयन किया।

दिनांक ३० अगस्त को ब्रह्ममुहूर्त में जागकर नित्यकर्म स्नानादि से निवृत हो संध्योपासना तथा सभी से मिलकर देवयज्ञ किया। प्रेमपुरा के श्रवण कुमार जी आमेरिया तथा आपकी माताजी ने यज्ञ के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया। देवयज्ञ पश्चात् विक्रम आमेरिया में हमें अपने चार पहिया वाहन से कुचामन सिटी रेल स्थानक पर छोड़ दिया। जहां से हमने बड़े सुपुत्र नीलेश शर्मा के यहां शामगढ़ के लिए प्रस्थान किया। सायंकाल ५ बजे शामगढ़ पहुँचने पर वर्षा ने हमारा अभिनन्दन किया। घर पहुंचकर संध्योपासना पश्चात् भोजन-शयन किया।

दिनांक ३१ अगस्त को ब्रह्ममुहूर्त में जागकर नित्यकर्म-स्नानादि से निवृत हो संध्योपासना उपरान्त इन्दौर के लिये दिल्ली-इंदौर लौहपथगामिनी से प्रस्थान किया। इंदौर पहुँचकर जगदीश शर्मा तथा आपकी धर्मपत्नी के मुख्य यजामनत्व में हम सभी ने वृहद देव यज्ञ किया और निर्विघ्न यात्रा के लिए परमपिता परमात्मा के प्रति श्रद्धावनत् हो कृतज्ञता प्रकट की। लगभग १६०० किलोमीटर की यात्रा का समापन हुआ।

दिनांक ३१ को बेसरोली से प्रेमपुरा, शामगढ़ होते हुऐ इन्दौर लौटे। दिनांक ३१ से १० तक घर पर ही रहने से विघ्नों से परे निर्बाध रूप से दोनों समय संध्योपासना, प्रात:काल देव यज्ञ तथा व्यायाम स्वाध्याय आदि किया। सुपुत्र नितिन शर्मा राऊ में निवास करने चला गया है। उसके निवास पर दिनांक ५ को यज्ञ किया तथा उसी दिन से सायंकाल का भोजन बन्द है। अगस्त माह की पत्रिका विलम्ब से प्रकाशित होने के कारण से प्रेषित नहीं हो पाई थी। डाक विभाग भी कुछ कारणों से विलम्ब से प्रेषित करने की अनुमति अनुरोध पत्र को खारिज कर चुका था। इन परिस्थितियों में घर लौटते ही प्रेस जाकर पत्रिकाएं लाया तथा सामान्य डाक शुल्क के डाक टिकट लगाना प्रारम्भ किए। दिनांक १ अगस्त माह की पत्रिका का प्रेषण किया।

दिनांक २ को बड़े सुपुत्र निलेश के ससुराल धार में कार्यक्रम होने से ब्यायजी श्री राजेन्द्र जी शर्मा के अनुरोध पर सपत्निक धार गये। आर्य समाज धार के अध्यक्ष लाखनसिंह जी आर्य तथा अन्य समाज बन्धुओं से भेंट कर सांयकाल इन्दौर लौट आये। दिनांक ३ से ५ तक पार्सल पैकेट रजिस्ट्री से भेजी जाने वाली प्रत्रिआओं का प्रेषण कार्य सम्पन्न किया।

दिनांक ५ से ७ तक सितंबर माह की पत्रिका के कार्यों को सम्पादित किया। दिनांक ७ से १० तक इन्दौर शहर की पत्रिकाएं डाक से प्रेषित नहीं की थी क्योंकि सम्बन्धित सदस्यों से भेंट किए भी बहुत समय हो गया था अत: पत्रिका प्राप्त हो रही या नहीं प्राप्त हो रही तो पढ़ रहे या नहीं आदि कारणों से स्वयं घर-घर जाकर पत्रिका दी। श्री सत्यनारायणजी शर्मा, वैभव नगर से आध्यात्मिक-सामाजिक वार्ता हुई। श्री राजाभाऊ गोधने विश्वकर्मा नगर पिछले कुछ समय से अस्वस्थ हैं आपका कुशल क्षेम जाना। श्री रामचन्द्र जी लाखा मालवीय नगर वालों के कारखाने नर्मदा बाँडी बिल्डर्स पर गया उनके पुत्र आशीष से भेंट हुई। बालक प्रखर बुद्धि का समझदार है उससे गहन आध्यात्मिक वार्ता हुई उसे स्वाध्याय की प्रेरणा

दी। धीरज नगर वाले महेश जी जांगिड के यहां पहुँचा आपके यहां चार युवा बेटियों तथा बालक अथर्व, आपकी धर्मपत्नी तथा आपसे गहन वार्ता हुई। आप लोगों को पत्रिका पढ़ने, आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाने तथा यज्ञ करना सीखने व करने की प्रेरणा दी। केदार जी बोदल्या के निवास पर गया आपके सुपुत्र विदित से भेंट हुई उससे पूछा पत्रिका पढ़ते हो, उसने उत्तर दिया पिताजी पढ़ते हैं। मैंने उसे समझाया इस पत्रिका में मनुष्य जीवन के निर्माण की सामग्री होती है आप भी पढ़ा करें। श्री कैलाशचन्द्र जी बड़वाल के निवास विश्वकर्मा नगर गया। आपकी सुपुत्री जो शिक्षिका है उनसे भेंट हुई। आपने बताया कि पत्रिका भी पढ़ती हूँ और थोड़ा बहुत सत्यार्थ प्रकाश भी पढ़ा है। आपको प्रेरणा दी कि सत्यार्थ प्रकाश एक नहीं अनेक बार पढ़ें किंतु गंभीरता पूर्वक। इसी प्रकार कैलाश जी शर्मा सुदामा नगर, रामचंद्र जी दुबे- सुखलिया, श्रीमती हेमलता लोनसरे-विजयनगर, पूरणमल जी शर्मा- मालवीय नगर, श्री कल्याणप्रशाद जी जांगिड- गंगा देवी नगर, श्रीमती चंद्रलेखा जी राठौड़ पूर्व प्रधानाचार्य आर्य समाज विजयनगर तथा अन्य अनेक सदस्यों से भेंट की सभी ने पत्रिका प्राप्त होने, पढ़ने तथा पत्रिका की सामग्री पर संतोष व्यक्त किया। श्री मोहनलालजी जांगिड, श्रद्धाश्री कॉलोनी से भी भेंट हुई आपकी पत्नी का देहान्त हो चुका है तथा कोई सन्तान भी नहीं है आयु भी वानप्रस्थ आश्रम की हो चुकी है आपको आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने, आर्य समाज के सत्संग जाने, क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में जाने की प्रेरणा दी।

दिनांक १० को सिटीजन ट्रेवल्स के शयनयान वाहन से रात्रि ९ बजे जालना (महा.) के लिए प्रस्थान किया। दिनांक ११ को वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी श्री गजानन्द जी जांगिड जालना के निवास पर पहुंचकर स्नानादि से निवृत हो संध्योपासना पश्चात् गजानन्दजी तथा आपकी धर्मपत्नी के मुख्य यजमानत्व में देवयज्ञ किया। भोजन से निवृत हो आपको संरक्षक सदस्य बनने का अनुरोध किया, आपने सहर्ष स्वीकार किया। गजानन्द जी औरंगाबाद जाने के लिये बस स्टेण्ड जाने वाले थे। आपके साथ बस स्टेण्ड आया। पूर्व वार्तानुसार आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता तथा जालना नगर में शिवसेना का बीजारोपण करने वाले बद्रीप्रसाद जी सोनी बस स्टैंड पर लेने आ गये। आपके निवास पर गये आपसे यह मेरी द्वितीय भेंट थी, प्रथम भेंट हैदराबाद में हुई थी आप वैदिक संसार के पाठक हैं। कुछ समय वार्ता उपरान्त गोरक्षण पांजरापोल (गौशाला) गये वहां ३५० गायें हैं। गोशाला के पश्चात् कालिका स्टील अलाइज प्रा. लि. पर गये। वहां कारखाने के स्वामी सेठ श्री घनश्याम चुन्नीलाल जी गोयल से भेंट की। आपने आजीवन सदस्यता राशि का सहयोग किया। सोनी जी के निवास पर वापसी आकर संध्योपासना तथा स्वाध्याय किया। दूध-फल ग्रहण कर शयन किया।

सोनी जी के निवास का एक भाग किराए पर दिया हुआ था जो वर्तमान में रिक्त था, उसमें शौचालय-स्नानागार की भी व्यवस्था थी। निर्विघ्नता से शान्तिप्रद वातावरण प्राप्त हुआ। वहीं पर सायंकाल संध्योपासना तथा शयन किया। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौचादि से निवृत्त हो भ्रमण किया। स्नानादि पश्चात् संध्योपासना-व्यायाम किया। प्रातः ८ बजे सोनी जी तथा आप की धर्मपत्नी श्रीमती जयश्री सोनी के मुख्य यजमानत्व में देवयज्ञ किया। सहयजमान के रूप में आपकी सासू मां श्रीमती पुष्पा बाई चाण्डक तथा पुत्रवधू श्रीमती मोहिनी सोनी, साले श्री पुरूषोत्तम जी चाण्डक ने आहूतियां प्रदान की। सुपौत्र रियांश का अपना कार्य देवयज्ञ के साथ-साथ चलता रहा। देवयज्ञ सम्पन्न कर श्री नरेन्द्र वलेचा के निवास पर गये। आपने आत्मीय अभिनन्दन किया। आपसे तथा आपके सुपुत्र तेजराज से गहन आध्यात्मिक वार्ता हुई जो कि कर सलाहकार का कार्य करता है, होनहार प्रखर बुद्धि का युवक है। आपके यहां से प्रस्थान कर आर्य समाज जालना गये प्रधान जी सन्तोष आर्य से भेंट हुई आप आग्रह पूर्वक अपने निवास पर ले गये। अपने पुत्रों तथा पुत्रवधू से मिलवाया आजीवन राशि का सहयोग किया। प्रधान जी के साथ केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री माननीय गिरीराज अहिरे जी के दिवंगत मामाजी श्री रूपा जी पहलवान के निवास पर गये। उनके गोभक्त सुपुत्र श्री सुनील जी से भेंट हुई। वहीं पर आर्य समाज के मन्त्री मनीषनन्द जी भी आ गये। आप सभी युवा हैं आप लोगों को जीवन में वैदिक सिद्धांतों को आत्मसात करने तथा क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में जाने की प्रेरणा दी, आप दोनों बंधुओं ने त्रैवार्षिक सहयोग किया। प्रधान जी तथा मन्त्री जी के अनुरोध पर **महर्षि दयानन्द व्यायामशाला** गये आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित विशाल व्यायामशाला के माध्यम से संचालक श्री मनीष नन्द यादव, श्री अमित आर्य, श्री सुनील जी अहिरे तथा युवा साथीगण शारीरिक उन्नति के विषय में अच्छा प्रयास कर रहे हैं। आपके यहां से लौटकर सोनी जी के यहां भोजन कर प्रस्थान की अनुमति मांगी, आपने दक्षिणा भेंट कर अतिथि यज्ञ पूर्ण किया तथा बस स्थानक पर ले जाकर औरंगाबाद जाने वाली बस में बैठा कर विदा किया। **सोनी जी आलस्य, प्रमाद से परे स्वाध्यायशील, सरल सहृदयी व्यक्ति हैं तथाकथित हिन्दू जाति के प्रति अपने अंतर्मन में अत्यंत पीड़ा-वेदना है। एक युवा की तरह स्फूर्त व्यक्ति हैं आपने लगभग सम्पूर्ण जालना नगर का भ्रमण करवा दिया तथा जालना नगर की समस्त पत्रिकाओं के प्रतिमाह वितरण का दायित्व भी सहर्ष स्वीकार किया, इन्हें कहते हैं आर्य।** जालना से प्रस्थान कर औरंगाबाद पहुंचा श्री रमेश चंद जी शर्मा वैदिक संसार के आधार स्तंभ सदस्य हैं आप देवलाई चौक पर लेने आ गये आपके साथ आपके कार्यस्थल पश्चात् आपके निवास पर गये। आपको विगत कई वर्षों से पत्रिका नहीं मिल पा रही थी, आपको भेजे गए रजिस्ट्री पार्सल भी वापस लौट आये थे। आपको पत्रिका की प्रतियां दी कुछ सामाजिक, आध्यात्मिक वार्ता हुई उसके पश्चात् आपने मुझे सिग्मा चिकित्सालय के समीप बस स्थानक पर छोड़ दिया। जहां से मैं इन्दौर की बस में बैठकर दिनांक १२ की प्रातः ६ बजे इंदौर आ गया। इस प्रकार लगभग १२०० किलोमीटर की यह दो दिवसीय यात्रा संपन्न हुई।

मदरसा बना - वैदिक गुरुकुल

सुखदेव शर्मा प्रकाशक वैदिक संसार

परमपिता परमात्मा की कृपा तथा ऋषि दयानन्द जी के कालजदी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की प्रेरणा से मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के उपरान्त भी आचार्य प्रणव जी मिश्रः (पूर्व नाम - मुख्तार अजीम) निवासी पुरागवां जनपद-बदायूं (उ.प्र.) प्रबन्धक वेद भारती संस्कार शाला (गुरूकुल) अपने पूर्व जीवन में एक मदरसा इस्लामिया लोसुल कादरिया का अपने ग्राम में संचालन करते थे। उपरोक्त मदरसे की स्थापना २७ अप्रैल १९९२ में आपने की थी। आपने स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की। आप विद्यालय की स्थापना के इच्छुक थे किन्तु कट्टरवादियों के बहकावे में आकर आपने मदरसा स्थापित कर दिया। आप अपने पड़ोस में रहने वाले ऋषि भक्त देवीराम आर्य के सम्पर्क में थे उनके मुंह से आपने सुना था **कुरान और पुराण एक ही गुरू के चेले हैं।** आपके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि देवीराम आर्य जी की बातों के सामने सभी लोग निरूत्तर हो जाते हैं तो वह कौन सी पुस्तक है जिसको पढ़कर देवीराम जी इतने ज्ञानी हैं क्यों ना हम उस पुस्तक को पढ़कर हम इनकी बातों का जवाब दे दें। एक दिन जब आर्य जी सो रहे थे उनके खटिया पर रखा सत्यार्थ प्रकाश हमने उठा लिया और उसे पढ़ा। बदायूँ की समस्त दुकानों पर तीन दिन तक सत्यार्थ प्रकाश खोजा, उसके पश्चात नन्थाराम बुकडिपों से प्राप्त हुई तब आपने उसके कवर पृष्ठ निकाल दिये। जिससे किसी को पता ना चले कि आप कौन सी पुस्तक पढ़ रहे हैं। आप सत्यार्थ प्रकाश रात्रि को दीपक के प्रकाश में पढ़ते थे।

सत्यार्थ प्रकाश से आपके अन्दर क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और आप २७ जून २००४ को गुरूकुल खेड़ा के आचार्य राजसिंह जी के पौरोहित्य में धर्मपत्नी तथा पाँच बच्चों सहित शुद्धि करवाकर वैदिक धर्मी बन गये। उसी समय आपने मदरसे का नाम बदलकर नेताजी सुभाष आदर्श विद्यालय रखा जिसका नाम संशोधित कर वर्ष २०१० में वेद भारती शिक्षा समिति पंजीकृत करवाकर वेद भारतीय संस्कार शाला गुरूकुल अपने स्वयं के खेत में स्थापित की तथा जमीन का नामांतरण भी समिति के नाम से करवा दिया। शुद्धि के पश्चात् आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचयित संस्कारों अनुकूल प्रकाश देव का जन्म दिया।

आपके तीनों सुपुत्रों ने गुरूकुलों में अध्ययन कर शास्त्री की उपाधि प्राप्त की सभी बच्चों की शिक्षा गुरूकुल में हुई। आप सात वर्षों से दैनिक अग्निहोत्री है। यज्ञ पश्चात् ही भोजन ग्रहण करते हैं। पिताजी शुरू में विरोधी रहे किन्तु बाद में स्वयं घोषणा कर लक्ष्मीनारायण बन गये। वानप्रस्थ लेकर अंतिम सांस तक वैदिक धर्मी रहे। आपसे अन्तरराष्ट्रीय गुरूकुल महासम्मेलन हरिद्वार पर प्रत्यक्ष भेंट होने पर वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा ने यह साक्षात्कार प्राप्त किया। आपका ग्राम मुस्लिम बहुल तथा अभावग्रस्त क्षेत्र है, आप अत्यन्त बुद्धिमत्ता तथा जीवटता की प्रतिमूर्ती है कि आपने जिस मत में जन्म लिया उसे त्यागा ही नहीं वरन् वैदिक धर्म को अंगीकार करने के पश्चात् अपने बच्चों को गुरुकुलिय शिक्षा प्रदान की तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में आप अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं आर्यजनों से अनुरोध है कि आचार्य जी द्वारा संचालित गुरुकुल में मुक्त हस्त से सहयोग प्रदान करें।

पता - **आचार्य प्रणव मिश्रः (वेदोपदेशक)**
ग्राम एवं पोस्ट - पुरागवां, जनपद - बदायूं (उ.प्र.)
चलभाष : ९७५९७५४७९८

देश को गुलाम बनाने का श्रेय गद्दारों को है

- नरसिंह सोनी आर्य -
डागा सेठिया गली, डागा पंचायत
भवन के पीछे, बीकानेर (राज.)
चलभाष - ७०१४८०८४९९

चक्रवर्ती सम्राटों का देश, सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश, जगत् गुरू कहलाने वाला देश भारत, गुलाम देश बन गया। जिसका मुख्य कारण रहा गद्दारी। अपनों को सहयोग न करके दूसरे विदेशी आक्रांताओं को सहयोग देकर के राष्ट्र को गुलाम बनाने में आत्म गौरव महसूस करना। अपनों को दुश्मन समझकर विदेशी आक्रांताओं को देश की सत्ता सौंपकर बहुत बड़ा अपराध किया। जिसके कारण देश करीब एक हजार साल तक गुलाम रहा। इस गुलामी के कारण लाखों-करोड़ों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। भयंकर यातनाएं सहन करनी पड़ी। देश का केवल धन-दौलत, सोना-चांदी, जवाहरात वे लूट के ही नहीं ले गये, हमारा। मान-सम्मान-स्वावलंबन भी जाता रहा। औरतों की अश्मिता लुटी गई। बलात्कार- हत्या-जघन्य अपराध सहना पड़े। इन देश के गद्दारों को जितना कोसा जाये कम है। इतनी चोट खाने के बाद भी देश में गद्दारों की कोई कमी नहीं है। अंग्रेजों की चाल और गद्दारों के कारण ही भारत के दो टुकड़े हुवे और कश्मीर समस्या बनी। जिसका दंश देश आज तक भुगत रहा है। देश पर अपनी कुर्बानी देने वाले शहीदों को आतंकवादी कहकर उनका सम्मान नहीं किया जा रहा है। स्कूलों-कालेजों में शहीदों की असली कहानियां न पढ़ाकर गलत करके पढ़ाई जा रही है। सत्तर साल देश आजाद हुवे हो गए हैं, अभी तक वहीं लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति चल रही है। लगता है बदलाव के लिए समय नहीं है। भौतिक उन्नति तो देश में बहुत हुई है, लेकिन चारित्रिक उन्नति रसातल में पहुंच गई है।

जिसके कारण देश में भ्रष्टाचार, बालात्कार, हत्याऐं आदि अपराध बढ़ रहे हैं। सदाचार की शिक्षा के लिए गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति ही श्रेष्ठ है। इसका ज्यादा प्रचार होना चाहिये। अगर अपराध बढ़ेंगे तो गद्दार भी बढ़ेंगे। जिससे देश को अपनों से व विदेशी ताकतों से खतरा बढ़ सकता है। देश में सद्विचार, सद्व्यवहार, सुराज्य, स्वाभिमान, कैसे बढ़े इस पर चिन्तन होना जरुरी है। देश हो, समाज हो, या घर, सबसे ज्यादा खतरा अपनों से ही होता है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रा गांधी को उन्हीं के अंग रक्षकों ने गोली मारी। देशभक्त क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद जिनके नाम से अंग्रेज सरकार कांपती थी। पं. जवाहरलाल नेहरू ने भेज दिया कि उनका शिकार तो अल्फ्रेड पार्क में (इलाहाबाद) इस समय है। जिससे पुलिस और गोरे अंग्रेज से घिर जाने पर दोनों ओर से गोलियां चली और अंत में आजाद शहीद हो गये। इस तरह अपनों से गद्दारी करने के किस्से इतिहास में भरे पड़े हैं। जिसके कारण देश को गुलामी के दंश से गुजरना पड़ा। महर्षि दयानंद सरस्वती को भी उन्हीं के रसोइये ने दूध में जहर मिलाकर (नन्ही जान के दबाव में आकर) पिलाने से प्राणों का अंत हुवा। इसमें ब्रिटिश सरकार का भी हाथ था। डॉ. लक्ष्मणदास के ईलाज में स्वामीजी को फायदा शुरू हुआ था। लेकिन बाद में डॉ. स्पेन्सर ने चिकित्सा अपने हाथ में ली। जिससे बिगाड़ा ही होता गया। क्यों स्वामीजी के अपनी देखरेख करने वालों ने सही ईलाज करने वालों को बदलकर सही ईलाज नही करने दिया? क्या मजबूरी थी। जागरूकता हर जगह जरूरी है, वरना गद्दार या दुश्मन किसी का भला नहीं होने देते। इसलिए ऐसे लोगों से हमेशा सावधान रहिये।

आर्य समाज नई सब्जी मण्डी रेवाड़ी के चुनाव सम्पन्न

पूर्व निर्धारित तिथि एवं कार्यक्रमानुसार दिनांक २२.०७.२०१८ रविवार को आर्य समाज मन्दिर में साप्ताहिक हवन-यज्ञ के बाद श्री कुलदीप राव की अध्यक्षता में प्रधान पद का चुनाव सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से श्री देशराज आर्य को प्रधान बनाया गया। सबकी सहमति से प्रधान देशराज आर्य ने अपनी कार्यकारिणी का निम्नानुसार गठन किया जिसमें **संरक्षक**-श्री सुखराम आर्य, श्री कुलदीप राव, **प्रधान**- श्री देशराज आर्य, **उपप्रधान**-श्रीअमर सिंह सैनी, **मन्त्री**- श्री अनिल सैनी, **उपमन्त्री**- श्रीलोकेश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री सुरजीत आर्य, आर्यवीर **दलप्रभारी**- श्रीगोविन्द शर्मा, **अंतरंग सदस्य**- श्री मूलचंद आर्य, श्री धर्मपाल सैनी, श्री आसाराम आर्य, श्री सुधीर आर्य, श्री वेदप्रकाश शर्मा (मीरपुर), श्रीमती कमला आर्य को मनोनित किया गया।

श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली, के निर्वाचन सम्पन्न

श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली, जिला- बैतूल (म. प्र.) के प्रतिवर्षानुसार वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी पर्व पर होने वाले निर्वाचन इस वर्ष भी श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन) के दिवस पर वार्षिक अधिवेशन में निर्वाचन सम्पन्न होकर सर्वसम्मति से **प्रधान**- संजू जायसवाल, **मन्त्री**- डॉ. धर्मेन्द्र पटेल, **कोषाध्यक्ष**- सुरेश कुमार मालवीय, **प्रचार मन्त्री**- लड्डू विजय आर्य का मनोनयन किया गया तथा नूतन कार्यकारिणी का गठन किया गया।

आर्य समाज खेड़ा अफगान में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) में दिनांक ०२.०९.२०१८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया गया। यजमान श्री निश कुमार थे। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के प्रधान आदित्य प्रकाश जी गुप्त ने कहा कि आज से लगभग पांच हजार दो सौ वर्ष पूर्व भाद्रपद अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में भारत के शूरसेन देश की राजधानी मथुरा में श्री कृष्ण का जन्म हुआ। बचपन से ही श्री कृष्ण के अनुपम बलवान होने के अनेक प्रमाण उनके द्वारा दुष्टों जैसे पूतना, यमुना नदी में भयंकर काला सर्प चागूर, मुष्टिक एवं दुराचारी कंस के विनाश के मिलते हैं। श्री कृष्ण जी वेद वेदांग के विद्वान तो थे ही। दान, दक्षता, शौर्य, विनमृता, कीर्ति, बुद्धि, विनय, घृति, तुष्टि और पुष्टि आदि सद् गुणों की खान थे। सन्दीपनी गुरुजी के आश्रम में गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त की। आश्रम में ही यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। अपने सारे जीवन में श्री कृष्ण जी ने कभी अधर्म को सहन नहीं किया। गुरुजी ने आश्रम में आजीवन ब्रह्मचारी रहने का संकल्प श्री कृष्ण जी को करा दिया था। गुरुजी से विवाह की चर्चा होने पर व्रत दोष भंग न हो इसका उपाय पूछा गुरुजी ने विवाह पश्चात् बारह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने का आदेश दिया। यह सर्व विदित है कि गुरुकुल के साथी सुदामा की मित्रता को उन्होंने किस भांति निभाया। महाभारत युद्ध रोकने के लिए उन्होंने अनेक उपाय सुझाये। दुर्योधन के किसी प्रकार न मानने पर अर्जुन को युद्ध के लिये तैयार किया। और अर्जुन को मोह होने पर गीता का ज्ञान देकर समझाया।

महर्षि दयानन्द महाराज ने श्री कृष्ण जी महाराज के विषय में ऐसा लिखा। शायद ही ऐसे शब्द किसी महापुरुष ने किसी के बारे में लिखे हों : देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्म है। उनका गुणकर्म-स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों से सदृश हैं श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा कहीं नहीं लिखा। श्रीकृष्ण जी आप्त पुरुष थे। प्रकाश चन्द जी ने श्रीकृष्ण जी की महीमा के भजन सुनाये। श्री राजेश कुमार मन्त्री जी ने श्री कृष्ण जी की महीमा का बखान किया।

राजकुमार, श्यामलाल, वीरेन्द्र कुमार, हरीराम, चरनसिंह, देशराज, ब्रह्मसिंह, वेदमुनीजी, राजेश कुमार, कुंवरपाल सिंह आर्य, अमित कुमार आर्य, सुरेन्द्र कुमार, शशिकान्त आर्य, ओम पाल आदि बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

वैदिक संसार को आप महानुभावों काआर्थिक सहयोग (दान)

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि
डॉ. अशोक कुमार आर्य योग प्रशिक्षक

सुपुत्र लाला जगदीश प्रसाद जी का जन्म सहारनपुर जनपद के पहाड़पुर ग्राम में दिनांक २७.१२.१९५४ को हुआ। आप आठ भाई-बहन है। आपका विवाह ४ जुलाई १९५९ को स्नातिका **श्रीमती यशवन्ती गर्ग**, सुपुत्री रामेश्वर दास मिल्कीराम एण्ड सन्स मसूरी के साथ हुआ। आपके दो सुपुत्र तथा एक सुपुत्री है।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा से आप वैदिक विचार-धारा से योगी यशवन्त जी, प. ओमप्रकाश जी, स्व. राजेन्द्र प्रसाद जी वेदपथी, डॉ. कर्णवीर जी, मुनि मोल्हड़सिंह जी रामपुर की प्रेरणा एवं प्रयासों से जुड़े। वर्तमान में आप दोनों समय देव यज्ञ-ईश्वर चिन्तन कर चित्त वृत्तियों पर नियन्त्रण का प्रयास करते हुए वेद मन्दिर सहारनपुर के दैनिक सत्संग में योग कक्षा की सेवा दे रहे हैं। आर्य समाज जनक नगर के भी सेवा कार्य कर रहे हैं। आर्यवन रोजड़ (गुजरात), परोकारिणी सभा, गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद, मानव कल्याण केन्द्र देहरादून, गौशाला रणदेवा आदि के विशेष सहयोगी सदस्य है।

स्मृति शेष डॉ. धर्मवीर जी अजमेर ने आपको परोपकारिणी पत्रिका की निःशुल्क आजीवन सदस्यता प्रदान की थी। वहां से आपने वैदिक ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण परीक्षा २ दिसम्बर २०१३ को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तपोवन आश्रम देहरादून में आचार्य आशीष जी के सानिध्य में प्रथम व द्वितीय श्रेणी के शिविरों में भाग लेने के साथ दिव्य जीवन निर्माण शिविर के लिए युवक-युवतियों को सम्मिलित होने के लिए प्रेरणा देकर भेजते रहते हैं। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से दिनांक २९.६.२००६ को योग व प्राणायाम का प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त कर नियमित रुप से सेवा दे रहे हैं। **श्री आदित्य प्रकाश जी गुप्त, प्रधान-आर्य समाज खेड़ा अफगान की प्रेरणा से वैदिक संसार के सम्पर्क में आये तथा सक्रिय रुप से सहारनपुर और समीपस्थ क्षेत्रों में वैदिक संसार से जुड़ने की प्रेरणा दे रहे हैं। मन नहीं टिकता क्या करें, स्वर्ग धाम, सुख का आधार** पुस्तकों को संकलित कर प्रकाशित करवाया। लौकेषणा, पुत्रैपणा तथा वितैषणा से विरक्त होकर परम आनन्द की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। आपका सम्पर्क नं. ९६२७४२२३५४ है।

सहयोगी प्रतिनिधि : श्री वीरेन्द्र जी काम्बोज पुत्र महाशय सत्यपाल जी कम्बोज माता स्व. सत्यवती तथा धर्मपत्नि श्रीमती मीना काम्बोज (दाम्पत्य जीवन २०.०६.१९९२) शिक्षा - स्नातक, ग्रा. हरिपुर (सुधॉसु जी महाराज वाला)सहारनपुर जनपद, सदस्य - वेद मन्दिर तथा सहायक प्रतिनिधि वैदिक संसार। आप दोनो महानुभावों के स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना वैदिक संसार परिवार करता है। **आप दोनों महानुभावों की प्रेरणा से वैदिक संसार के बने वार्षिक सदस्य निम्नानुसार है -**

उत्तर प्रदेश, जनपद - सहारनपुर : श्री संजीव जी गुप्ता- शिवम पेंट्स एंड हार्डवेयर सहारनपुर, आचार्य श्रुति भास्कर जी संगीतायन- सहारनपुर, सुश्री मंजु गोपाल जी आर्य- सहारनपुर, श्री रोहित यशवीर जी चौधरी- झबीरन, श्री महावीर जी आर्य- सहारनपुर, श्री सुबोध जी आर्य होजरी वाले- सहारनपुर, श्री आजादपाल जी आर्य- सहारनपुर, श्री नरेंद्र देव ब्रहमपाल जी आर्य- सहारनपुर, श्री वीरेन्द्र जी 'होजरी वाले'- सहारनपुर, डॉ. भूपजी आर्य- सहारनपुर, श्री महाशय सत्यपाल जी आर्य- सहारनपुर, श्री राजेन्द्र जी राणा- सहारनपुर, श्री काशीराम जी 'चक्की वाले'- सहारनपुर, श्री विशाल जी काम्बोज- सहारनपुर, श्री अभिनव जगदीश जी सैनी- सहारनपुर, श्री भोपाल सिंह जी- सहारनपुर, श्री आर्यवीर जी- सहारनपुर, श्री सोमप्रकाश बुद्धपाल जी गुप्ता- सहारनपुर, श्री नसीब सिंह हरिराम जी वर्मा 'किसान प्रिंटिंग प्रेस'- सहारनपुर, श्री वरूण पवन जी सैनी- सहारनपुर, श्री रमेश चन्द जी 'मास्टर जी'- सहारनपुर, श्री जोगेन्द्र जी 'बुरे वाले'- सहारनपुर, श्री हिमांशु कर्ण सिंह जी सैनी (त्रैवार्षिक) - सहारनपुर, श्रीमती स्नेह रामप्रकाश जी मित्तल- सहारनपुर, श्री रामरतन चन्द्रभान जी आर्य- सहारनपुर, श्री भुल्लनसिंह जी (प्रधान) - सहारनपुर, से सत्येन्द्र राजदेव जी दुबे- सहारनपुर, श्री समरसिंह निलारामजी- सहारनपुर, श्री विनोद कुमार सुखबीर जी आर्य- सहारनपुर, श्री ऋत्विक व अवनिश जी आर्य- सहारनपुर, श्री सुभाष जी मेहता- सहारनपुर, श्री आनन्द मुनि जी- झबीरन, श्री सतीश कुमार गीताराम

गुरू पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

गतवर्षो की भांति इस वर्ष भी वेदप्रचार मण्डल आर्यवर्त्त व आर्य समाज कमालगंज के तत्वावधान में भव्य गुरुपुर्णिमा महोत्सव का आयोजन दिनांक २७ जुलाई २०१८ को आर्य समाज कमालगंज में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री ने अपने वेदोपदेश द्वारा जनमानस को सच्चे सद्गुरु का महत्व समझाया, तथा ऋषि दयानन्द के मानव जाति पर किये उपकारों को बताया। बरेली से पधारे आर्य भजनोपदेशक पं. यशदेव हितैषि ने भजनों के माध्यम से गुरुमहिमा का गुणगान किया। यज्ञ के ब्रह्मा समाज के पुरोहित आचार्य संदीप आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। पश्चात् ऋषिलंगर का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान प्रदीप आर्य, मन्त्री विनोद आर्य तथा कोषाध्यक्ष भगवानदास आर्य ने आए हुए अतिथियों को वैदिक साहित्य भेंटकर उनका सत्कार किया। कार्यक्रम में जनपद के सभी समाजों व जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

जी- सहारनपुर, श्री इन्द्रकुमार जी डंग 'मानसी साड़ी'- सहारनपुर, श्री सुधीर कुमार नाथीरामजी वर्मा- सहारनपुर, श्री अनिलकुमार जी गुप्ता- सहारनपुर, श्री तिलकचन्द सुन्दरलाल जी आर्य- दाबकी, श्री अशोक महेन्द्र पाल जी जाजवा- जाजवा, श्री धर्मपाल रामदयाल जी अनेजा- सहारनपुर, श्री श्यामलाल जी सैनी- जाजवा, श्री संजीव सेवाराम जी आर्य- सहारनपुर, डॉ. हरिसिंह जी 'पोस्ट मास्टर'- हरपाल, श्री रवि बाबूलाल जी वर्मा- सहारनपुर, श्री अनिल जयप्रकाश जी धीमान- सहारनपुर, आचार्य रामवीर मुलायम सिंह जी- फन्दपुरी।

श्रावणी पर्व मनाया गया

आर्य समाज खेड़ा अफगान में बड़े उत्साह के साथ श्रावणी (रक्षा बंधन) पर्व मनाया गया। आज के यज्ञमान श्री चरणसिंह थे। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। यज्ञ के उपरान्त आदित्य प्रकाश जी अध्यक्ष वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास ने कहा कि श्रावणी पर्व वैसे तो आदिकाल से मनाया जाता है पर्व शब्द का अर्थ है पवित्र करना आज के दिन पुराने यज्ञोपवीत (जनेउ) को उतार कर नवीन यज्ञोपवीत धारण की प्रथा प्राचीन काल से है अत: सभी ने अपने पुराने यज्ञोपवीत को उतार कर नवीन यज्ञोपवीत धारण किया। प्राचीन काल से गुरुकुलों में विद्या अध्ययन करने के उपरांत जो संकल्प जैसा लेता था उसे वही वर्ण निश्चय किया जाता था जो बालक समाज से अविद्या को मिटाने का संकल्प लेता था उसे ब्राह्मण, जो समाज से अन्याय दूर करने का संकल्प लेता था उसे क्षत्रिय, जो समाज में धन की कमी को पुरा करने का संकल्प लेता था उसे वैश्य, शेष लोग समाज की सेवा करने का संकल्प लेते थे। यह आचार्य जी की और से देने का विधान प्राचीन काल से है। यज्ञोपवीत हमारे कर्तव्य का बोधक है इसमें तीन धागे पितृ ऋण, देव ऋण एवं ऋषि ऋण उतारने का द्योतक है।

इस दिन पुराने जमाने से ही ऋषि, वानप्रस्थि लोग अधिक वर्षा किया करते थे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने भी कहा है आज के दिन से सभी आर्य लोग वेद के स्वाध्याय को अवश्य आरम्भ करें ताकि धर्म का ज्ञान और सुख की प्राप्ति हो सके। प्राचीन काल से ही राजा तथा ब्राह्मण लोग राष्ट्र की रक्षा के लिए सैनिकों, क्षत्रियों आदि को रक्षा सूत्र बांध कर व्रत दिलाया करते थे। अब इस पर्व का रुप बदलकर भाई बहनों की कलाई पर राखी (रक्षा सूत्र) बांधने की प्रथा का आरम्भ हो गया है। आज से सभी आर्य वेद के स्वाध्याय का व्रत अवश्य लेना।

प्रकाश चन्द जी न प्रेरणा दायक भजन सुनाकर सभी का मन मोह लिया इस कार्यक्रम का संचालन अमित आर्य ने किया।

इस अवसर पर कुंवर पालसिंह आर्य, सुरेन्द्र कुमार, वेदमुनिजी, निश कुमार, शशिकान्त आर्य, वीरेन्द्र कुमार, ओमपाल, ब्रह्मासिह, कुलदीप, सन्दीप कुमार, वेदान्त कुमार, विशाल,श्याम लाल आदि बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

समाजसेवी पं. तुलसीराम आर्य दिवंगत

आर्य जगत् के महान समाजसेवी एवं वेद प्रचार मण्डल मोलड़बंद बदरपुर दिल्ली के संस्थापक **वैदिक विद्वान पं. तुलसीराम आर्य** ग्राम बहीन जनपद पलवल (हरियाणा) का दिनांक १९.०४.२०१८ रविवार को ८४ वर्ष की आयु में एशियन अस्पताल सेक्टर-२१ फरीदाबाद (हरियाणा) में निधन हो गया जिनका शान्ति यज्ञ श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री फरीदाबाद ने दिनांक २४.०८.२०१८ शुक्रवार को संपन्न कराया। ज्ञात रहे कि पं. तुलसीराम आर्य, आर्य जगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान सिद्धहस्त लेखक, ओजस्वी कवि व प्रभावशाली वक्ता पं. नन्दलाल सिद्धान्ताचार्य बहीन (पलवल) के बड़े भाई थे। आर्यजन दोनों भाइयों को देखकर राम-लक्ष्मण कहकर सम्बोधित करते थे। पं. तुलसीराम आर्य पिछले साठ वर्ष से वेद प्रचार कर रहे थे। वे सच्चे सिद्धान्तवादी थे।

पं. तुलसीराम जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीरवती आर्या मधुर स्वभाव की लक्ष्मी स्वरूपा नारी हैं जो अतिथि सत्कार में विशेष रूचि रखती हैं। उनके चारों पुत्र श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री सत्य प्रकाश आर्य, श्री देवप्रकाश आर्य, श्री धर्मदेव आर्य तथा उनकी सुपुत्री सुमित्रा देवी आर्य वैदिक धर्म एवं महर्षि दयानन्द के दीवाने हैं। कवि सारस्वत मोहन मनीषी गुरूग्राम (हरियाणा), श्री अमन कुमार शास्त्री कन्या गुरूकुल हसनपुर (पलवल), श्री अनिल आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद दिल्ली, श्री केशवदेव भारद्वाज एडवोकेट पलवल (हरियाणा), श्री नारायणदत्त विधायक बदरपुर दिल्ली, श्री नेत्रपाल शास्त्री जैतपुर दिल्ली, श्री रामप्रसाद रावत सरपंच ग्राम बहीन पलवल, श्री सोहनलाल रावत संरक्षक धर्म शहीद कान्हा गउशाला बहीन (पलवल) ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए पं. तुलसीराम आर्य को सच्चा मानव व कर्मयोगी बताते हुए सभा में उपस्थित आर्य जनों से उनके पद चिन्हों पर चलने की अपील की। अन्त में पं. नन्दलाल निर्भय ने पं. तुलसीराम के परिजनों द्वारा कन्या गुरूकुल हसनपुर हरियाणा को ५१०००/- रूपए का दान देने की घोषणा की जिसे सुनकर उपस्थित जनता में भारी हर्ष प्रदर्शित किया। शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

श्रीमती नाथी देवी जांगिड का निधन

श्रीमती नाथी देवी जांगिड, धर्मपत्नी स्व. श्री भँवरलाल जी जांगिड (धामू) निवासी- बेसरोली, जिला-नागौर (राज.) का निधन दिनांक १८.०८.२०१८ को ८२ वर्ष की आयु में हो गया। आप आध्यात्मिक प्रवृत्ति की सादगीपूर्ण स्पष्टवादी महिला थी। आप अपने पीछे चार सुपुत्र श्री नेमीचन्द जी, श्री सत्यनारायण जी, श्री गोविन्द जी, श्री योगराज जी तथा दो सुपुत्री श्रीमती गीता देवी धनराज जी जांगिड़ (हर्षवाल) रीढ़ जिला- नागौर, श्रीमती शान्ति देवी का भरा पूरा परिवार छोड़ गई है।

वैदिक संसार परिवार समस्त ज्ञात-अज्ञात दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

वैदिक संसार के प्रकाशक परिवार ने मनाया गुरुकुल केहलारी में श्रावणी उपाकर्म

वैदिक संसार प्रकाशक परिवार एवं गुरुकुल परिवार के सदस्यों का सामूहिक चित्र

श्रावणी उपाकर्म पर्व पर सम्पन्न बृहद् देवयज्ञ पश्चात् आचार्य सर्वेश जी तथा वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का उद्बोधन तथा श्रवण करते ब्रह्मचारीगण एवं उपस्थितजन

गुरु पूर्णिमा पर्व पर नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार पश्चात् आचार्य जी, अध्यापकों एवं ब्रह्मचारियों का सामुहिक चित्र

सुखदेव शर्मा की ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती जयश्री शर्मा, पुत्रवधु श्रीमती प्रियंका शर्मा तथा सुपौत्री स्वस्ति शर्मा गुरुकुल के अध्यापक शेखर जी शास्त्री एवं ब्रह्मचारियों को रक्षासूत्र बांधते हुए।

सुखदेव शर्मा के सुपुत्र निलेश शर्मा, प्रितेश शर्मा, नितिन शर्मा तथा गजेश शास्त्री गुरुकुल के अध्यापकगण शेखर जी शास्त्री, हरिओम जी शास्त्री तथा अन्य विद्वानों के साथ। द्वितिय चित्र में प्रकाशक महोदय ब्रह्मचारियों को भोजन करवाते हुए।

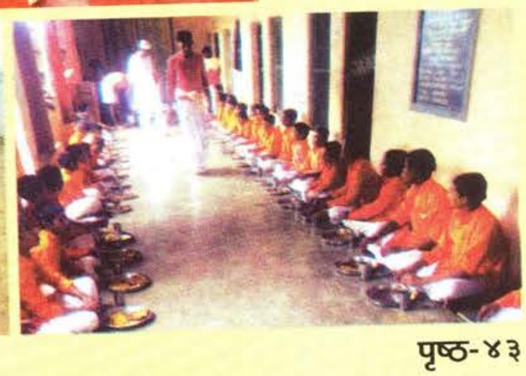

एम.पी.एच.आई.एन.– २०१२/४५०६९ • सम्पादक – गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन– एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१८–२०

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

वानप्रस्थ साधक आश्रम में पूज्य स्वामी सत्यपति जी, आचार्य सत्यजीत् जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य नवानन्द जी तथा अन्य अध्यापकों के साथ आश्रम में साधना एवं अध्ययनरत् आश्रम वासियों का सामूहिक चित्र

वानप्रस्थ साधक आश्रम में संस्कृत, व्याकरण, उपनिष्द् एवं दर्शन शास्त्रों के अध्यापन केन्द्र गुरुकुल में पूज्य स्वामी सत्यपति जी, आचार्य सत्यजीत् जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य नवानन्द जी तथा अन्य अध्यापकों के साथ आश्रम में अध्ययनरत् ब्रम्हचारियों का सामूहिक चित्र

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्रफिक्स २४, कुंवर मण्डली, से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर - १८ से प्रकाशित

एम.पी.एच.आई.एन.– २०१२/४५०६९ • सम्पादक – गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन– एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१८–२०

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

वानप्रस्थ साधक आश्रम में पूज्य स्वामी सत्यपति जी, आचार्य सत्यजीत् जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य नवानन्द जी तथा अन्य अध्यापकों के साथ आश्रम में साधना एवं अध्ययनरत् आश्रम वासियों का सामूहिक चित्र

वानप्रस्थ साधक आश्रम में संस्कृत, व्याकरण, उपनिष्द् एवं दर्शन शास्त्रों के अध्यापन केन्द्र गुरुकुल में पूज्य स्वामी सत्यपति जी, आचार्य सत्यजीत् जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य नवानन्द जी तथा अन्य अध्यापकों के साथ आश्रम में अध्ययनरत् ब्रम्हचारियों का सामूहिक चित्र

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्रफिक्स २४, कुंवर मण्डली, से मुदित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर - १८ से प्रकाशित